स्वस्तिश्री कर्मयोगी
पीठाधीश

रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

'गौरविका'

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं.000
ISBN 978-93-80353-0000

बीसवीं सदी में प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में हुईं
सर्वप्राचीन दीक्षित एवं परम विदुषी आर्षमार्गी दिगम्बर जैन साध्वी
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के शिष्य

जम्बूद्वीप धर्मपीठ के वर्तमान पीठाधीश

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश

रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

मंगल आशीर्वाद –

सर्वोच्च जैन साध्वी एवं बीसवीं सदी की सर्वप्राचीन दीक्षित
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

मार्गदर्शन –

पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

प्रस्तुति –

जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

ग्रंथमाला –

वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला

ग्रंथमाला पुष्प क्रमांक –

0000

संस्करण –

प्रथम संस्करण

प्रतियाँ –

2200 प्रतियाँ

प्रकाशन तिथि –

वीर नि. सं. 2538, नूतन वर्षाभिनन्दन, जनवरी 2012

मूल्य –

100/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

समाज के लिए विशेष आदर्श हैं
पूज्य माताजी, जम्बूद्वीप संस्थान एवं स्वस्तिश्री

प्रबंध सम्पादकीय...

–जीवन प्रकाश जैन

स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी एक ऐसे महामना व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के माध्यम से अपने 'कर्मयोग' को समाज के समक्ष प्रस्तुत करके स्वयं 'कर्मयोगी' की उपाधि प्राप्त की है। वे व्यक्तित्व हैं स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी।

इस 'स्वामी' शब्द का 'स्वामी' होना अत्यन्त विरले एवं किसी महान व्यक्तित्व का ही कार्य हो सकता है। बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी में महान जैनाचार्यों व साधु-साध्वियों पर दृष्टिपात करने पर हमें प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज का नाम सदी के सबसे महान जैनाचार्य के रूप में प्राप्त होता है और यदि आर्यिका माताओं की शृँखला पर ध्यान केन्द्रित करें, तो बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी वर्तमान में जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी के रूप में जग विख्यात हैं, जिनकी दीक्षा का काल भी वर्तमान में उपस्थित समस्त दिगम्बर जैन पिच्छीधारी साधु-साध्वियों में सबसे प्राचीन है।

ऐसी इन दो महान आत्माओं की परम्परा में ही समाज को स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी के रूप में एक ऐसा बहुमूल्य रत्न भी प्राप्त हुआ है, जिसकी कार्यकुशलता, श्रेष्ठ नीति, समन्वयन शक्ति, साहस, उच्च आत्ममनोबल तथा कर्मठता का गुण समाज के लिए स्वर्णिम उपहार सिद्ध हुआ है। पूर्व में कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन के रूप में पूज्य माताजी के शिष्यत्व में समाज एवं धर्म की सेवा कर रहे रवीन्द्र कुमार जी को दिनाँक 20 नवम्बर 2011, भगवान महावीर दीक्षाकल्याणक तिथि के अवसर पर पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा दशवीं प्रतिमा के विधिवत् आगम संस्कारों के साथ जम्बूद्वीप धर्मपीठ के पीठाधीश पद पर आसीन करते हुए उन्हें ''स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी'' के नाम से अलंकृत किया गया। अतः 20 नवम्बर की यह तिथि स्वयं रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के लिए तथा समाज के लिए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हो गई।

संस्थान, समाज एवं धर्म की ध्वजा जब ऐसे निःस्वार्थ सेवी एवं समर्पित व्यक्तित्व के हाथों में होती है, तो निश्चित ही चहुँ दिशाओं में धर्म की उन्नति होती है और अनेक प्रकार से नये-नये आयामों में नई-नई उपलब्धियों का आगमन भी समाज के बीच होता रहता है। किसी भी कार्य के लिए पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद पाकर स्वामी जी ने जिस योजनाशक्ति के साथ अपने लक्ष्य को अंजाम दिया, वह उनको नजदीक से देखने वाले श्रावक जन ठीक से जान सकते हैं लेकिन समाज के इस महान रत्न से जन-जन को परिचित होने का अवसर प्राप्त हो सके तथा स्वामी जी के अनुभवों, उनके निर्देशों एवं आशीर्वाद से आप भी अपने किसी कार्य हेतु लाभान्वित हो सकें, इस उद्देश्य को लेकर स्वस्तिश्री स्वामी जी के पीठाधीश पद पर आसीन होने के उपलक्ष्य में यह पुस्तक प्रकाशित की गई है।

इस पुस्तक में स्वस्तिश्री स्वामी जी का अंतरंग एवं बहिरंग परिचय, समाज के नाम उनके संदेश बिन्दु तथा स्वामी जी के निर्देशन में एक आदर्श संस्था के रूप में समाज में विशेष स्थान को प्राप्त दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप के कतिपय आदर्श बिन्दुओं को प्रस्तुत किया गया है। आशा है इन बिन्दुओं से समाज में अन्य तीर्थों, संस्थाओं एवं धर्म मार्ग पर अग्रसर होती युवा पीढ़ी को नई प्रेरणाएं एवं

विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हो सकेगा। विशेषरूप से स्वस्तिश्री स्वामी जी ने स्वयं जिन महान गुरु से सभी संस्कारों को प्राप्त किया है, ऐसी पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के कतिपय आदर्श बिन्दु तथा उनकी कतिपय शिक्षाएँ भी महत्वपूर्ण पठनीय सामग्री के रूप में इस पुस्तक में प्रस्तुत की गई हैं, जिनसे समाज के प्रत्येक वर्ग को विभिन्न दिशाओं में अपने जीवन में विभिन्न आदर्श स्थापित करने की प्रेरणा प्राप्त होगी।

इस पुस्तक में स्वस्तिश्री स्वामी जी की कतिपय विशेष स्मृतियों को सुरक्षित रखने हेतु उनके पीठाधीश पदारोहण की चित्रमयी झलकियाँ, अतिथियों का आगमन आदि भी रंगीन पृष्ठों के माध्यम से प्रस्तुत किये गये हैं।

इस पुस्तक में स्वस्तिश्री स्वामी जी के प्रति कतिपय साधु-साध्वियों के मंगल आशीर्वाद तथा समाज के गणमान्य महानुभावों/विद्वानों के महत्वपूर्ण उद्‌गार है, शुभकामना संदेश एवं विनायंजलियों को भी समाहित करके स्वामी जी के प्रति भक्तों के अंतरंग मनोभावों को प्रस्तुत करने का सत्प्रयास किया गया है। इनको पढ़कर निश्चित ही आपके मन में स्वामी जी के प्राति समाज का स्नेह, वात्सल्य और उनके लिए समाज में व्याप्त सम्मान की भावनाओं से विशेष परिचय प्राप्त होगा।

स्वस्तिश्री स्वामी जी के पीठाधीश पदारोहण के उपरांत ही विभिन्न स्थानों पर समाज में उनके सम्मान का क्रम विशेष उत्साहपूर्वक प्रारंभ हो गया और दिगम्बर जैन समाज गोरखपुर, भगवान पुष्पदंतनाथ जन्मभूमि काकंदी दिगम्बर जैन समिति, दिगम्बर जैन समाज प्रीतविहार-दिल्ली, मांगीतुंगी ट्रस्ट कमेटी, मांगीतुंगी मूर्ति निर्माण कमेटी, गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल महाराष्ट्र, दिगम्बर जैन समाज औरंगाबाद, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेर समिति, अतिशय क्षेत्र पैठण समिति, श्री ज्ञान तीर्थ दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र समिति शिर्डी, ऋषभदेव जन सेवा संस्थान माधोराजपुरा आदि संस्थाओं द्वारा विभिन्न स्थानों पर स्वामी जी का भावभीना स्वागत किया गया। यह सब स्वामी जी के वात्सल्यपूर्ण एवं मिलनसार व्यक्तित्व का ही प्रभाव था। अतः इस पुस्तक में विभिन्न स्थानों पर हुए स्वामी जी के सम्मान की चित्रमयी झलकियाँ तथा समाचार आदि भी दृष्टव्य हैं।

यद्यपि पूज्य स्वामी जी के सामुद्रिक व्यक्तित्व को मुझ जैसे अबोध बालक द्वारा थोड़े से अक्षरों में प्रस्तुत करने का यह प्रयास किसी नन्हें बालक द्वारा हाथ फैलाकर आकाश के विस्तार को बताने के समान ही प्रतीत होता है फिर भी आशा है स्वामी जी के प्रति श्रद्धा एवं आत्मीयता से सहित विनयावनत् होते प्रकाशित इस पुस्तक के माध्यम से आपके जीवन में नई प्रेरणाएँ, ऊर्जा का संचार, समाज सेवा के प्रति समर्पण तथा सर्वोचित अंदाज में तीर्थों के विकास व प्रबंधन की भावनाएँ जागृत होंगी।

स्वामी जी के इस हिमालयीन व्यक्तित्व से प्रेरणा पाकर आने वाले समय में आप ही के मध्य से नव पीढ़ी में ऐसे अनेकानेक स्वामी महात्माओं का जन्म जैन संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और विकास के लिए होता रहे, इन्हीं मंगल भावनाओं के साथ मैं अपने आराध्य मार्गदर्शक स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के चरणों में शत-शत नमन करते हुए उनके दीर्घ, स्वस्थ एवं यशस्वी जीवन की मंगल कामनाएँ करता हूँ। आपका वरदहस्त हम पर, नव युवा पीढ़ी पर, समाज पर एवं तीर्थों के संरक्षण हेतु सदा प्राप्त होता रहे, यही शुभेच्छा है।

अंत में एक ऐसी विदुषी एवं ''प्रज्ञाश्रमणी'' मातृशक्ति के चरणों में भी मेरा कोटिशः प्रणाम है, जिनके चरणों में विगत 8 वर्षों से रहते हुए हमने गुरु, धर्म एवं समाज के अर्थ को जानने का प्रयास किया और अपने जीवन को गुरु की सेवा धर्म की सेवा और समाज की सेवा हेतु समर्पित करने की जागृति पाई है।

आशीर्वाद से मेरी कलम से निकले इन हृदय के विचारों को पुस्तकाकार स्वरूप प्राप्त हुआ है। ऐसी परमपूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के हृदय से सदा प्रवाहित होती वात्सल्यमयी गंगा की धारा से मेरी आत्मा सदा पवित्रता को प्राप्त करती रहे और धर्ममार्ग पर हम सदा उन्नति को प्राप्त करें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का परिचय

जिस हस्तिनापुर में इस संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कलाप चल रहे हैं, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की पारणा, कौरव-पाण्डव की राजधानी, दर्शन प्रतिज्ञा में प्रसिद्ध मनोवती का इतिहास आदि पौराणिक कथानकों से जुड़ी वह हस्तिनापुर नगरी एक ऐतिहासिक एवं पौराणिक नगरी है। **सन् 1972** में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के नाम से दिल्ली में इस संस्था का जन्म हुआ।

सन् 1974 से हस्तिनापुर में निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया और अब तक वहाँ अनेक भव्य रचनाएं, मंदिर, कमरे, फ्लैट, कोठियां, भोजनालय, टंकी आदि बन चुके हैं। निर्माण के अतिरिक्त संस्थान के द्वारा शिक्षा एवं धर्म प्रचार-प्रसार हेतु शिक्षण शिविर, सेमिनार, अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन आदि के आयोजन भी होते रहते हैं। पूज्य माताजी एवं आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित चारों अनुयोगों एवं धर्मप्रभावना के समाचारों से सहित सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन **सन् 1974** से बराबर निर्बाध गति से चल रहा है। संस्थान के अंतर्गत ही **सन् 1972** में स्थापित वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से **300** से भी अधिक ग्रंथ लाखों की संख्या में प्रकाशित हो चुके हैं। यहां जम्बूद्वीप पुस्तकालय, णमोकार महामंत्र बैंक, गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ आदि के द्वारा धार्मिक शैक्षणिक एवं पारमार्थिक कार्यक्रम चलते रहते हैं। सन् 1975 से प्रारंभ पंचकल्याणकों में अब तक अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं प्रति 5 वर्षों में होने वाले जम्बूद्वीप महामहोत्सव में से 4 महोत्सव हो चुके हैं। इस संस्थान द्वारा जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1982 में दिल्ली से स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा उद्घाटित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का 1045 दिनों तक सम्पूर्ण भारत में भ्रमण एवं हस्तिनापुर में उसकी अखण्ड स्थापना हुई, सन् 1998 में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार द्वारा अहिंसामयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार हुआ। वहीं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) से महामहिम राज्यपाल बिहार प्रान्त द्वारा प्रवर्तित **''भगवान महावीर ज्योति''** रथ के भारत भ्रमण से जनमानस भगवान महावीर के विषय में आगमसम्मत ज्ञान से परिचित हुआ है। जम्बूद्वीप स्थल पर समय-समय पर भव्य दीक्षाएं भी सम्पन्न हुई हैं। इसी संस्थान द्वारा दिल्ली के लालकिला मैदान में 4 फरवरी सन् 2000 को

प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी द्वारा उद्घाटित ''भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव'' सम्पूर्ण देश एवं विदेशों में मनाया गया। जिसके अंतर्गत अनेक संगोष्ठियाँ, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ निर्माण आदि कार्यक्रम हुए। सन् 2000-2001 में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान भूमि प्रयाग-इलाहाबाद में बनारस हाइवे पर **''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षातीर्थ''** का नवनिर्माण हुआ है तथा 6 अप्रैल सन् 2001 को ही प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित राष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाए जाने वाले भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष में पूज्य माताजी द्वारा रचित ''विश्वशांति महावीर विधान'' का विराट आयोजन प्रथम राष्ट्रीय आयोजन के रूप में राजधानी दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में अक्टूबर 2001 में सम्पन्न हुआ। उसी जन्मकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत सन् 2003-2004 में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास कार्य द्रुतगति से हुआ है। ''नंद्यावर्त महल'' नामक तीर्थ परिसर वहाँ का विशेष दर्शनीय स्थल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

कुण्डलपुर विकास संपन्न होने के पहले ही पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने आगामी वर्ष 2005 को ''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष'' के रूप में मनाने का सारे देश को आह्वान किया और प्रेरणा दी। तदुपरांत पूज्य माताजी ससंघ ने कुण्डलपुर से 14 नवम्बर 2004 को भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि बनारस के लिए विहार किया और पूज्य माताजी के सानिध्य में बनारस में भगवान पार्श्वनाथ की जन्मजयंती 6 जनवरी 2005 को इस पार्श्वनाथ महोत्सव वर्ष का जोर-शोर के साथ सारे देश की जनता के बीच उत्तरप्रदेश के लोक निर्माण मंत्री-श्री शिवपाल सिंह यादव एवं अन्य अतिथियों द्वारा उद्घाटन किया गया। इस महोत्सव वर्ष के अंतर्गत सर्वप्रथम लम्बे समय से प्रतीक्षित भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी-सारनाथ में उनकी विशाल प्रतिमा का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। तदुपरांत टिकैतनगर में भगवान महावीर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारे उत्तरप्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री माननीय श्री मुलायम सिंह यादव ने भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर 'पार्श्वनाथ वर्ष' का शुभारंभ किया और भगवान पार्श्वनाथ की वह प्रतिमा ''पार्श्वनाथ दि. जैन इण्टर कालेज'' के परिसर में स्थापित की गई है। इसी शृंखला में सारे देश में 3 वर्ष तक भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव विविध आयोजनों के साथ मनाया गया, जिसका समापन भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान भूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तिखाल वाले बाबा के महामस्तकाभिषेकपूर्वक 4 जनवरी 2008 को हुआ।

21 दिसम्बर 2008 का दिवस संस्थान के लिए विशेष गौरवपूर्ण एवं ऐतिहासिक रहा, जब गणतंत्र भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का शुभाशीर्वाद लेने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पधारीं और विश्वशाति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन किया।

इस प्रकार आप सबके सहयोग से संचालित हो रहा दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान अपनी चतुर्मुखी योजनाओं से समाज को सदैव लाभान्वित करता रहे यही मंगल कामना है।

बीसवीं शताब्दी के प्रथम आचार्य चारित्र चक्रवर्ती १०८ श्री शांतिसागर जी महाराज

संक्षिप्त परिचय

स्वस्ति श्री मूलसंघ में कुंदकुंदाम्नाय, सरस्वती गच्छ, बलात्कार गण में बीसवीं शताब्दी में प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य-चारित्र चक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज हुए हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है –

जन्म	–	आषाढ़ बदी 6, सन् 1872
निवास स्थान	–	भोजग्राम (जिला-बेलगाँव) कर्नाटक
नाम	–	सातगौंडा पाटिल
माता-पिता	–	माता-सत्यवती, पिता-भीमगौंडा पाटिल
क्षुल्लक दीक्षा	–	ज्येष्ठ शु. 13, सन् 1914 ग्राम-उत्तूर (जि. कोल्हापुर) महाराष्ट्र
दीक्षा गुरु	–	मुनि 108 श्री देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज
ऐलक दीक्षा	–	सन् 1917 गिरनार क्षेत्र, स्वयं भगवान के चरण सानिध्य में
मुनि दीक्षा	–	फाल्गुन शु. 14, सन् 1920 ग्राम-येरनाल (जिला-बेलगांव) कर्नाटक
दीक्षा गुरु	–	मुनि श्री 108 देवेन्द्रकीर्ति जी महाराज
आचार्य पद	–	आश्विन शु. 11, सन् 1924 ग्राम-समडोली (जिला-सांगली-महाराष्ट्र) द्वारा-चतुर्विध संघ
चारित्र चक्रवर्ती पद	–	सन् 1937 गजपंथा सिद्धक्षेत्र (महा.)
समाधिमरण	–	द्वि. भाद्रपद शु. 2, सन् 1955, कुंथलगिरि (सिद्धक्षेत्र)

आचार्य देव ने अनेक दीक्षाएँ देकर चतुर्विध संघ सहित दक्षिण से उत्तर और पूर्व से पश्चिम तक सारे भारत में मंगल विहार करके दिगम्बर जैन मुनि परंपरा को पुनरुज्जीवित किया। अनेक तीर्थों पर जिनप्रतिमाएँ स्थापित करायीं, षट्खण्डागम ग्रंथ को ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण कराकर तथा विद्वानों से उनका हिन्दी अनुवाद करवाकर पुस्तकों के रूप में भी प्रकाशित करवाकर जिनवाणी को स्थायित्व प्रदान किया। ऐसे बहुत से जिनधर्म प्रभावना के कार्यों से इस भूतल पर अपने यश को चिरस्थायी कर दिया।

आपने अंत में कुंथलगिरि क्षेत्र पर सल्लेखना लेकर अपने जीवनकाल में अपना आचार्यपद अपने प्रथम शिष्य मुनि श्री वीरसागर को प्रदान किया था। पुनः उनकी परम्परा में द्वितीय पट्टाचार्य श्री शिवसागर मुनिराज हुए, तृतीय पट्टाचार्य श्री धर्मसागर महाराज, चतुर्थ पट्टाचार्य श्री अजितसागर महाराज, पंचम पट्टाचार्य श्री श्रेयांससागर महाराज हुए हैं पुनः आचार्य श्री श्रेयांससागर जी महाराज की सन् 1992 में समाधि होने के पश्चात् उनके पट्ट पर आचार्यश्री अभिनंदनसागर महाराज हुए हैं, जो वर्तमान पट्टाचार्य (छठे पट्टाचार्य) के रूप में चतुर्विध संघ का संचालन करते हुए जिनधर्म की प्रभावना कर रहे हैं।

चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागराचार्य के प्रथम पट्टशिष्य चारित्रशिरोमणि पूज्य आचार्यरत्न श्री वीरसागर महाराज का परिचय-एक दृष्टि में

(पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आर्यिका दीक्षागुरु)

स्वस्ति श्री मूलसंघ में कुन्दकुन्दाम्नाय, सरस्वती गच्छ, बलात्कारगण में बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्यश्री वीरसागर महाराज हुए हैं। उनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार है–

जन्म –आषाढ़ शु. 15, सन् 1876, वि.सं. 1933

ग्राम –वीर गाँव (जि.-औरंगाबाद, महाराष्ट्र)

नाम –हीरालाल

जाति एवं गोत्र –खण्डेलवाल जाति एवं गंगवाल गोत्र

पिता –श्री रामसुख जैन

माता –श्रीमती भाग्यवती जैन (भागू बाई)

क्षुल्लक दीक्षा –फाल्गुन शु. 7, सन् 1923 (वि.सं. 1980)

नाम –श्री वीरसागर महाराज

मुनिदीक्षा –आश्विन शु. 11, सन् 1924 (वि.सं. 1981)

ग्राम –समडोली-महाराष्ट्र

दीक्षागुरु –चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज

आचार्य पद घोषणा –कुंथलगिरि में आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज द्वारा प्रथम भाद्रपद शु. 7, सन् 1955 (वि.सं. 2012)

आचार्यपदारोहण –द्वि. भाद्रपद कृ. 7, सन् 1955 (वि.सं. 2012)

स्थान –खानिया-जयपुर (राज.)

समाधिमरण –आश्विन कृ. अमावस्या, सन् 1957 (वि.सं. 2014)

स्थान –खानिया-जयपुर (राज.)

राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

भारत की वसुन्धरा सदैव से तपस्या, त्याग एवं संयम की भूमि रही है। भगवान ऋषभदेव, राम, महावीर की यह भूमि आज भी ऐसे महान व्यक्तित्वों से सुशोभित है कि जो अपने जीवन में ही ऐतिहासिक बन जाते हैं।

ऐसा ही एक महान व्यक्तित्व है–वर्तमान दिगम्बर जैन समाज की सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी-पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी। सन् 1934 में शरदपूर्णिमा के दिन जिला बाराबंकी (उ.प्र.) के टिकैतनगर ग्राम में माता मोहिनी एवं पिता श्री छोटेलाल जैन के दाम्पत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में कन्यारत्न 'मैना' का जन्म हुआ। छोटी-सी आयु से ही अपनी माँ की प्रेरणावश जैन ग्रंथों के स्वाध्याय द्वारा इस बालिका ने अपने वैराग्य को भलीभाँति दृढ़ कर लिया और 18 वर्ष की अल्प आयु में शरदपूर्णिमा के दिन ही परिवार के प्रबल विरोध के बावजूद भी आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत एवं गृहत्याग के कठिन नियम धारण कर लिये। सन् 1953 में श्री महावीर जी (राज.) अतिशय क्षेत्र पर आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से आपने क्षुल्लिका दीक्षा लेकर 'वीरमती' नाम प्राप्त किया। पुनः 1956 में बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज की आज्ञानुसार उनके प्रथम पट्टाधीश शिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा (राज.) में आपने आर्यिका दीक्षा लेकर 'ज्ञानमती' नाम प्राप्त किया। ज्ञान प्राप्ति हेतु अध्ययन-अध्यापन एवं स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष अभिरुचि देखकर ही गुरुवर ने आपको यह नाम प्रदान किया था। दीक्षा के प्रारंभिक वर्षों में आपने सर्वप्रथम संस्कृत व्याकरण एवं जैन आगम का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया तथा साथ ही सहस्रनाम मंत्रों की रचनापूर्वक अपनी लेखनी का शुभारंभ भी कर दिया।

57 वर्षों से साधनारत इन महान साध्वी ने अब तक 250 से भी अधिक ग्रंथों का सृजन किया है। संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत, कन्नड़ इत्यादि भाषाओं की प्रकाण्ड विदुषी पूज्य माताजी की काव्य प्रतिभा भी अद्वितीय है। जिनेन्द्र भक्ति के रस से भरे हुए न जाने कितने ही पूजन-विधानों की रचना पूज्य माताजी ने अपनी लेखनी द्वारा की है। सन् 1995 में डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय (फैजाबाद) ने पूज्य माताजी की विराट ज्ञान साधना को देखकर जैन इतिहास में प्रथम बार किसी साध्वी को 'डी.लिट्.' की मानद उपाधि प्रदान की।

कर्मठता, दृढ़संकल्प, अनुशासन के साथ-साथ वात्सल्य की प्रतिबिम्ब पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौरवों-पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.) में जैन भूगोल की अद्वितीय रचना-'जम्बूद्वीप' का निर्माण हुआ है।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में

'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का भव्य निर्माण भी पूज्य माताजी की सृजनशक्ति का ही सुन्दर प्रतिफल है। इसी प्रकार भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में नंद्यावर्त महल तीर्थ का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में मात्र 22 माह के अल्प अन्तराल में हुआ है।

2600 वर्ष पूर्व कुण्डलपुर (नालंदा) की जो धरती अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के जन्मकल्याणक से महान उत्साह एवं हर्ष को प्राप्त हुई थी वह काल के थपेड़ों से भले ही विस्मृत जैसी हो गयी हो, परन्तु जैन समाज के श्रद्धालुओं का वहाँ जाना हमेशा से जारी रहा और अब पूज्य ज्ञानमती माताजी के महान उपकार स्वरूप यह जन्मभूमि पुनः इस प्रकार जगमगा उठी है कि आने वाला भविष्य सदैव इसकी चमक से प्रभावित रहेगा।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982) एवं भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ (1998) का देशव्यापी प्रवर्तन सम्पन्न हुआ एवं कुण्डलपुर से प्रवर्तित भगवान महावीर ज्योति रथ (2003) का प्रवर्तन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। इन रथों के द्वारा सम्पूर्ण भारत में अहिंसामयी सिद्धान्तों की व्यापक प्रभावना हुई।

शैक्षणिक क्षेत्र में अनेकानेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ-सेमिनार इत्यादि पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं। पूज्य माताजी के विराट व्यक्तित्व का अभिनंदन करने के लिए समाज ने उन्हें समय-समय पर युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, गणिनीप्रमुख, युगनायिका, राष्ट्रगौरव, विश्वविभूति, वाग्देवी, भारतभूषण जैसी उपाधियों से सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया है। वर्तमान में महाराष्ट्र प्रान्त के मांगीतुंगी पर्वत पर विश्व की सबसे ऊँची 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से हो रहा है।

24 घंटे में एक बार आहार लेकर, केशलोंच एवं पदविहार जैसी कठिन साधना करते हुए ब्रह्मचर्य एवं चारित्र के तेज को सर्वत्र बिखेरने वाली पूज्य ज्ञानमती माताजी भारतीय संस्कृति की महान धरोहर हैं, जिन्होंने 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों को पूर्ण किया है। 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आयोजित विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों से हुआ और सन् 2009 ''शांतिवर्ष'' के रूप में घोषित हुआ। राष्ट्रपति जी ने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

दीर्घकालीन तपस्विनी ऐसी पूज्यनीया माताजी ने सन् 2009 में अपने जीवन के 75 वर्ष पूर्ण किए जिसे सन् 2008 से 2009 तक राष्ट्रीय स्तर पर ''हीरक जयंती महोत्सव वर्ष'' के रूप में मनाया गया।

वास्तव में आज के कलिकाल में भी आध्यात्मिक ज्ञान, चारित्र, साधना एवं मोक्षपथ को साकार करने वाले गुरुओं का जितना अभिनंदन किया जाये, उतना कम है। जो बिना कुछ कहे अपनी मुद्रा द्वारा ही शांति, संयम, सदाचार का उपदेश देते हैं ऐसे साधु इस भारत वसुन्धरा की शान हैं और हम जैसे जो भी प्राणीगण परमसौभाग्य से उनके चरणों में आश्रय प्राप्त कर लेते हैं, वे भी अपने जीवन को सही अर्थों में सार्थक कर लेते हैं।

ऐसे चतुर्मुखी प्रतिभा की धनी पूज्य माताजी के श्रीचरणों में भावभीना कोटिशः नमन है।

संस्थान की मार्गदर्शिका
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका
श्री चंदनामती माताजी का परिचय

प्रस्तुति-ब्र. कु. बीना जैन
(संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

नाम– प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

दीक्षा पूर्व नाम– ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

जन्मतिथि– 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

जन्मस्थान– टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

माता-पिता– श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

भाई– चार (कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन)

बहन– आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

लौकिक शिक्षा– हाईस्कूल

ब्रह्मचर्यव्रत– 25 अक्टूबर 1969 को जयपुर में 2 वर्ष का ब्रह्मचर्यव्रत एवं सन् 1971, अजमेर में आजन्म ब्रह्मचर्य सुगंध दशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

धार्मिक अध्ययन– 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की उपाधि

द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत– सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

आर्यिका दीक्षा– हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से

प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि– 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

साहित्यिक योगदान– चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान, समयसार विधान आदि शताधिक पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) की संस्कृत टीका एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीका का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' इत्यादि ग्रंथों का पद्यानुवाद। भजन (300 से अधिक), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली
19. श्री प्रद्युम्न कुमार जैन छोटी सा., श्री अमरचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
	प्रस्ताविकी 1-स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	**1**
1.	आइए जानते हैं स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का अंतरंग एवं बहिरंग परिचय	2
2.	समाज के नाम स्वस्तिश्री स्वामी जी के कतिपय संदेश बिन्दु	7
3.	स्वस्तिश्री स्वामी जी के निर्देशन में संचालित हो रहे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जम्बूद्वीप तीर्थ के कतिपय आदर्श	8
4.	प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर परम्परा के प्रति स्वस्तिश्री स्वामी जी के उद्गार	10
5.	स्वस्तिश्री कर्मयोगी स्वामी जी के विशेष निर्देशन में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर का तीन दशकीय राष्ट्रीय से अंतर्राष्ट्रीय स्वर्णिम कृतित्व	11
	प्रस्ताविकी 2-पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का व्यक्तित्व	**13**
6.	आदर्श क्यों है ? पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का व्यक्तित्व	14
7.	परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के प्रत्यक्ष जीवन दर्शन से संकलित कतिपय लोक व्यवहारी, आवश्यक एवं महत्वपूर्ण शिक्षाएँ-प्रेरणाएँ	18
8.	पीठाधीश पदारोहण के संदर्भ में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा हस्तलिखित घोषणा पत्र	24
	प्रस्ताविकी 3-पीठाधीश पदारोहण की चित्रमयी झलकियाँ	**25**
9.	पीठाधीश पदारोहण समारोह एवं अनेक स्थानों पर आयोजित किये गये स्वामी जी के अभिनंदन समारोह तथा स्वामी जी के सान्निध्य में सम्पन्न विभिन्न महोत्सवों की रंगीन चित्रमयी झलकियाँ	26
	प्रस्ताविकी 4-स्वामी जी के जनक-जननी का परिचय	**69**
10.	स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के जनक लाला श्री छोटेलाल जी का परिचय	70
11.	स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी की जननी पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी	74
12.	जम्बूद्वीप संस्थान के निर्देशन में पारस चैनल पर विभिन्न आयोजनों के सीधे प्रसारण की श्रृँखला सम्पन्न	78
	प्रस्ताविकी 5-स्वामी जी के तीन महत्वपूर्ण वक्तव्य	**79**
13.	ज्ञानज्योति रथ प्रवर्तन के समय इम्फाल (आसाम) में मुख्यमंत्री जी को अंग्रेजी भाषा में ब्र. रवीन्द्र कुमार जी द्वारा बताये गये ज्ञानज्योति के उद्देश्य-26 अक्टूबर 1984	80
14.	विश्वशांति शिखर सम्मेलन (न्यूयार्क) में कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन द्वारा भ.ऋषभदेव का उद्घोष	81
15.	भगवान पार्श्वनाथ कमल मंदिर, शिर्डी (महा.)के शिलान्यास अवसर पर 4 दिसम्बर 2011 को शिर्डी में स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी द्वारा प्रस्तुत अत्यन्त मार्मिक एवं प्रभावी वक्तव्य	82
	प्रस्ताविकी 6-स्वामी जी के प्रति मंगल आशीर्वाद एवं विनयांजलियाँ	**89**
16.	**संतों के आशीर्वाद एवं विशिष्ट महानुभावों के शुभकामना संदेश**	
	(01) मंगल आशीर्वाद -गुजरात संतकेसरी आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज	90
	(02) मंगल आशीर्वाद -एलाचार्य मुनि श्री वसुनंदि जी महाराज	90
	(03) मंगल आशीर्वाद -एलाचार्य मुनि श्री निःशंकभूषण जी महाराज	90
	(04) मंगल आशीर्वाद -उपाध्याय श्री गुप्तिसागर जी महाराज	91

क्र.	विषय		पृष्ठ संख्या
(05)	मंगल आशीर्वाद	-चारित्रश्रमणी आर्यिका श्री अभयमती माताजी	92
(06)	मातृभक्ति एवं गुरुभक्ति के पर्यायवाची-स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी	-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी	92
(07)	शुभकामना संदेश	-स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी, श्रवणबेलगोला	93
(08)	शुभकामना संदेश	-प्रदीप जैन 'आदित्य', नई दिल्ली (केन्द्रीय मंत्री)	93
(09)	शुभकामना संदेश	-अशोक सिंघल, दिल्ली (संरक्षक-विश्व हिन्दू परिषद)	94
(10)	मंगल कामना संदेश एवं अभिवंदना	-जे.के. जैन, पूर्व सांसद, दिल्ली	94
(11)	शुभकामना संदेश	-वी. धनंजय कुमार जैन, बैंगलोर (पूर्व वित्तराज्य मंत्री)	95
(12)	शुभकामना वक्तव्य	-कपूरचंद जैन-घुवारा	95
(13)	हृदय के भाव	-सुरेशचंद जैन, मुरादाबाद (कुलाधिपति-टी.एम.यू.)	96
(14)	विनयांजलि एवं शुभकामनाएँ	-जे.सी. जैन, हरिद्वार (चेयरमैन-रुड़की इंजी. कालेज)	96
(15)	स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति पीठाधीश स्वामी जी जयवंत हों	-निर्मल कुमार सेठी, दिल्ली (राष्ट्रीय अध्यक्ष-महासभा)	97
(16)	अभिवंदना	-आर.के. जैन, मुम्बई (राष्ट्रीय अध्यक्ष-तीर्थक्षेत्र कमेटी)	98
(17)	वंदना एवं बधाई	-विजय जैन, अहमदाबाद (राष्ट्रीय अध्यक्ष-महासमिति)	98
(18)	शुभकामना संदेश	-जवाहर लाल जैन, सिकन्द्राबाद (संगठन मंत्री-महासमिति)	99
(19)	स्वामी जी के प्रति अंतर्मन के उद्गार	-श्रीमती सरिता जैन, चेन्नई (अध्यक्ष-महिला महासभा)	99
(20)	बाल ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमार 'भाई जी' से बने रवीन्द्रकीर्ति 'स्वामी जी'	-प्रो. डी. ए. पाटिल, जयसिंहपुर (चेयरमैन-दक्षिण भारत जैन सभा)	100
(21)	शुभकामना संदेश	-अजय जैन, पटना (बिहार) (मानदमंत्री-बिहार प्रांतीय तीर्थक्षेत्र कमेटी)	100
(22)	सादर अभिवंदन	-श्रीमती सुमन जैन, उषा पाटनी, रेखा पतंग्या-इंदौर	101
(23)	शुभकामना संदेश	-श्रीमती मनोरमा जैन, दिल्ली (राष्ट्रीय महामंत्री-महिला संगठन)	102
(24)	विनयांजलि	-श्रीमती आशा जैन, दिल्ली (पूर्व अध्यक्ष-महिला संगठन)	102
(25)	स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी महान बन गये	-श्रीमती मालती जैन, बसंत कुंज, दिल्ली	103
(26)	कर्मठ व्यक्तित्व के धनी भाई 'रवीन्द्र'	-कैलाशचंद जैन सर्राफ, लखनऊ	104
(27)	शुभकामना संदेश	-रमेशचन्द्र जैन मनयां, भोपाल	104
(28)	पूज्य पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति जी से ही हो सकेगी धर्म एवं संस्कृति की रक्षा	-बिजेन्द्र कुमार जैन, दिल्ली (राष्ट्रीय महामंत्री-युवा परिषद)	105
(29)	ब्रह्मचारी से स्वामी जी तक की प्रेरणादायक यात्रा	-सुरेश जैन रितुराज, मेरठ (राष्ट्रीय अध्यक्ष-भारतीय जैन मिलन)	105
(30)	पूज्य स्वामी जी का जीवन सराहनीय प्रशंसनीय एवं अभिनंदनीय है	-डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल, पैठण (महामंत्री-मांगीतुंगी मूर्ति निर्माण कमेटी)	106
(31)	शुभकामना संदेश	-दिनेश कुमार जैन, हस्तिनापुर (मंत्री-हस्तिनापुर प्राचीन मंदिर)	107
(32)	शुभकामना संदेश	-सुरेखा रायनाडे, भोज	108
सम्माननीय विद्वत्जनों द्वारा प्रेषित विनयांजलियाँ			
(33)	एक अनन्य सेवाव्रती	-प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद	108
(34)	'जम्बूद्वीप ज्ञानपीठ' पर ब्र. भाई जी का आरोहण	-पं. शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी	109

क्र.	विषय		पृष्ठ संख्या
	(35) आदर्श व्यक्तित्व	-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत	110
	(36) शुभकामना संदेश	-डॉ. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद	110
	(37) शुभकामना संदेश	-डॉ. अनुपम जैन, इंदौर	111
	(38) शुभकामना संदेश	-डॉ. सुशील जैन, मैनपुरी	111
	(39) पीठाधीश पद के गौरव-अलंकार हैं- स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी	-प्रो. डॉ. भागचंद जैन 'भागेन्दु', दमोह	112
	(40) शुभकामना संदेश	-प्रो. टीकमचंद जैन, दिल्ली	113
	(41) पुरुषार्थ का पदाभिषेक	-डॉ. नीलम जैन, गुड़गाँवा	113
	(42) हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ	-डॉ. प्रेमसुमन जैन, उदयपुर	114
	(43) बहुमुखी प्रतिभा के धनी स्वामी जी	-डॉ. राजकुमार-समीक्षा नांदगांवकर, नागपुर	114
	(44) बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री रवीन्द्रकीर्ति जी स्वामी	-प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश कुमार जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर	115
	(45) कर्मठता से बनें कर्मयोगी	-प्रतिष्ठाचार्य पं. विजय कुमार जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर	115
	(46) बधाई एवं शुभ मंगल कामनाएँ	-पं. बाबूलाल जैन फणीश, पावागिरी ऊन	116
	(47) सादर वंदन	-विजय जैन, पारस प्रिन्टर्स, दरियागंज, दिल्ली	116
	(48) विनयांजलि	-पं. प्रवीणचंद जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर	117
	(49) अमर तुम्हारी कीर्ति पताका	-पं. वीरेन्द्र कुमार जैन, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर	118
	(50) कर्म कौशल का प्रमाण हैं स्वामी जी	-संजीव प्रचंडिया, अलीगढ़	118
	(51) शुभकामना संदेश	-विनोद कुमार बड़जात्या, सूरत	119
	(52) धर्मात्मा पुरुष रवीन्द्रकीर्ति जी	-दयाचंद जैन, जागरोन (पंजाब)	119
	(53) शुभकामना संदेश	-महेन्द्र कुमार जैन पाटनी, जयपुर	119
	(54) अभिनंदन गीत	-ब्र.कु. बीना जैन (संघस्थ-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)	120
	प्रस्ताविकी 7-पीठाधीश पदारोहण एवं अभिनंदन समारोह के सार समाचार		**121**
17.	जम्बूद्वीप में सानंद सम्पन्न हुआ पीठाधीश पदारोहण समारोह		122
18.	बधाई, शुभकामना एवं वंदनापूर्वक भारी जोर-शोर के साथ अनेक स्थानों पर हुआ स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का अभिनंदन		124
19.	**स्वामी जी को प्रदत्त प्रशस्तियाँ**		
	(1) सकल दि. जैन समाज गोरखपुर एवं भगवान पुष्पदंतनाथ जन्मभूमि काकंदी दि. जैन समिति		126
	(2) दिगम्बर जैन समाज प्रीतविहार, दिल्ली		127
	(3) दिगम्बर जैन समाज औरंगाबाद एवं गणिनी ज्ञानमती भक्तमंडल महाराष्ट्र		128
	(4) श्री ज्ञानतीर्थ दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, शिर्डी (महा.)		129
	(5) राजाभाऊ पाटनी परिवार, गजपंथा (नासिक) महा.		130
	(6) दि. जैन समाज माधोराजपुरा, श्री ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ समिति माधोराजपुरा एवं ऋषभदेव जनसेवा संस्थान		131
20	मंगलाचार गीत	-श्रीमती त्रिशला जैन, नाका हिण्डोला-लखनऊ	132
21	जम्बूद्वीप के प्रथम पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज का संक्षिप्त परिचय		133
22	प्रथम पीठाधीश पदारोहण पर प्रशस्ति भेंट चित्र		134

अभिनंदन गीत

-ब्र. बीना जैन (संघस्थ)

तर्ज–कभी राम बनके.....

सम्मान कर लो, गुणगान कर लो,
नये स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी का।।टेक.।।

नये स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी का।
पीठाधीश्वर रवीन्द्रकीर्ति जी का।।
सन्मान कर लो, गुणगान कर लो,
नये स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी का।।1।।

गणिनी ज्ञानमती माताजी के शिष्य ये।
मोतीसागर जी के बाद ये द्वितीय हैं।।
सन्मान कर लो, गुणगान कर लो,
नये स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी का।।2।।

ये हैं सूर्य के समान तेजस्वी।
ये हैं पुत्र अवध प्रान्त के ओजस्वी।।
सन्मान कर लो, गुणगान कर लो,
नये स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी का।।3।।

पीठाधीश पदारोहण समारोह-20-11-2011
के शुभ अवसर पर विशेष प्रस्तुत

मंगलाचार

तर्ज–देख तेरे संसार की.....

पीठाधीश पदारोहण का समारोह है आज,
कर लो सब मिल मंगलाचार।।टेक.।।

जम्बूद्वीप का नाम है जग में।
सुंदर तीर्थ का धाम है सच में।।
गणिनीप्रमुख ज्ञानमती जी का ज्ञान हुआ साकार,
कर लो सब मिल मंगलाचार।।1।।

तीर्थंकरत्रय की धरती पर।
हस्तिनापुर की धर्मपीठ पर।।
पीठाधीश्वर करते हैं सर्वदा धर्म का प्रचार,
कर लो सब मिल मंगलाचार।।2।।

धर्मपीठ जयशील सदा हो।
पीठाधीश चिरंजीवी हो।।
फैले कीर्ति रवीन्द्र कर्मयोगी की हो जयकार,
कर लो सब मिल मंगलाचार।।3।।

प्रस्ताविकी-1

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का विस्तृत परिचय, समाज के नाम उनका संदेश एवं स्वामी जी के निर्देशन में विकसित जम्बूद्वीप संस्थान के आदर्श व तीन दशकों का स्वर्णिम कृतित्व

आइए जानते हैं
स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का
अंतरंग एवं बहिरंग परिचय

समाज में सामान्य श्रावकों की संख्या एवं भूमिका अवश्य ही समाज के विकास के लिए लाभदायक सिद्ध होती है। लेकिन कुछ अद्‌भुत प्रतिभासम्पन्न विरले महामनाओं की खोज की जावे, तो समाज में ऐसे पुरुष जिन्हें महापुरुष की संज्ञा दी जा सकती है, वे बहुत कम संख्या में ही मिलते हैं। यह बात भी निश्चित है कि हर काल एवं समय में समाज, धर्म एवं संस्कृति के उत्थान हेतु ऐसे महानुभावों का अस्तित्व अवश्य ही देखने को मिलता है। इसी श्रृँखला में इस वर्तमानकालीन युग को भी अनेक विभूतियाँ प्राप्त हुईं और इस बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी में भी अनेक निष्काम सेवा के धनी महानुभावों ने समाज की सेवा करके इसका विकास किया।

इस श्रृँखला में बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज का महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व इस समाज द्वारा कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता है क्योंकि उन्होंने जैन संस्कृति के संरक्षण में जो अवदान दिये हैं, वे सदा अतुल्य ही रहेंगे। आगे इसी परम्परा के चमकते सितारे के रूप में हमें पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का वरदहस्त प्राप्त हुआ और उनके द्वारा वर्तमान में की गई धर्मप्रभावना एवं संस्कृति संरक्षण के कार्य समाज के समक्ष उपस्थित हैं। ऐसी पूज्य माताजी के उपकारों से भी यह समाज कभी उऋण नहीं हो सकता। और भी धर्म के प्रति विभिन्न समर्पित व्यक्तित्वों ने अपना समाज विकास हेतु योगदान दिया, उनमें एक हैं स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी। आइए हम जानते हैं अनेक गुणों से शोभायमान होने वाले उन स्वस्तिश्री जी का अंतरंग एवं बहिरंग परिचय –

अंतरंग परिचय

(1) कुशाग्र बुद्धि –

लखनऊ विश्वविद्यालय से बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त करने वाले रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी की कुशाग्रता प्रारंभ से ही अति विशेष रही और उन्होंने चंद दिनों के लिए ही गृह व्यवसाय को भी बहुत कुशलता के साथ संभाला। पुनः वैराग्य भाव धारणकर गृहबंधन को छोड़कर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी को अपना गुरु बनाया। वैराग्य पथ पर भी आपकी कुशाग्र बुद्धि ने प्रत्येक कार्य को उचित समय में उचित निर्णय प्रदान करके प्रगति की दिशा दिखलाई और आपने अपने प्रत्येक लक्ष्य में सफलता प्राप्त की। आपका चिंतन अत्यधिक सूक्ष्मता के साथ किसी भी विषय की गहराई को त्वरित छू लेता है और उसके परिणाम को जानते हुए आप अपने निर्णय को सही दिशा में ले जाकर स्वयं सफल होते हैं और अन्यों के लिए भी मार्गदर्शक बन जाते हैं। कार्यक्षेत्र के अलावा जैनधर्म का विशेष ज्ञान, हिन्दी-संस्कृत व अंग्रेजी भाषा पर अधिकार तथा विभिन्न सामाजिक-राजनैतिक आदि विषयों की गहन जानकारी भी आपकी कुशाग्र बुद्धि के ही परिणाम हैं।

(2) सौम्य प्रकृति –

प्रत्येक परिस्थिति को मुस्कराते हुए संभालना या सहन करना आपके व्यक्तित्व का विशेष गुण है। संस्थान के संचालन में कर्मचारी संबंधी कोई समस्या हो, किसी कार्यक्रम को करते वक्त एकाएक आने वाली कोई समस्या हो या अन्य कोई भी विचार-विमर्श आदि में मतभिन्नता होवे, किसी भी परिस्थिति का समाधान आप हंसते-मुस्कराते हुए धैर्यतापूर्वक करते हैं।

(3) दूरदृष्टि –

किसी भी लक्ष्य की सिद्धी के लिए कितने परिश्रम की आवश्यकता है एवं उसकी सफलता में किन योजनाओं को बनाये जाने पर सफलता प्राप्त हो सकती है, इस बात का दूरगामी दृष्टिकोण आपके मस्तिष्क की अनुपम शक्ति को प्रदर्शित करता है। तीर्थ विकास हेतु चाहे मंदिर निर्माण का कार्य हो, धर्मशाला आदि का निर्माण हो या अन्य कोई विशेष रचना को निर्मित करना हो, किसी भी कार्य में आपका दूरदृष्टि से युक्त चिंतन सुव्यवस्थित, सुनियोजित, आकर्षक एवं अनूठे अंदाज का होता है। इसी प्रकार किसी भी राष्ट्रीय अथवा

अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों को अल्प समय के अंतराल में भी आयोजित करने हेतु आपका सुदृढ़ दृष्टिकोण एवं आत्मविश्वास कभी डगमगाता नहीं है। समस्त मूलभूत आवश्यकताओं पर आपकी दृष्टि अत्यन्त पैनी रहती है और कोई भी विषय ऐसा नहीं बचता, जिसके कारण उस कार्यक्रम की सफलता में कोई संदेह हो सके।

(4) वास्तु, शिल्प, इंजीनियरिंग, आर्कीटेक्चर एवं मूर्तिकला आदि निर्माण योजनाओं के वृहद् अनुभवी–

कहा जाता है कि किसी अन्य व्यक्ति से कार्य लेने हेतु उस कार्य के संदर्भ में स्वयं भी ज्ञान व जानकारी होना परम आवश्यक होता है। स्वामी जी का व्यक्तित्व ऐसा ही है, उन्होंने लौकिक अध्ययन के उपरांत अपने समक्ष आये किसी भी विषय को इतना समर्पण भाव के साथ जानने, समझने व करने का प्रयास किया कि वर्तमान में आपका व्यक्तित्व आद्योपांत विभिन्न विद्याओं से सुसज्जित हो चुका है। आप निर्माण के क्षेत्र में वास्तु विद्या, शिल्पकला, इंजीनियरिंग, आर्कीटेक्चर, मूर्तिकला आदि विषयों के इतने पारखी हो चुके हैं कि विशेषज्ञों के साथ आपका परामर्श सटीक बैठता है।

(5) धन का समुचित सदुपयोग–

किसी भी योजना हेतु श्रद्धालु भक्तों के दिये गये दान का सदुपयोग स्वामी जी द्वारा इतनी किफायत के साथ किया जाता है कि दान देने वाले प्रत्येक महानुभाव का एक रुपया कार्य की सिद्धी पर सवा रुपये के रूप में प्रतिफलित होता है। स्वामी जी का यह गुण श्रावक समाज को अत्यन्त लुभाता है, जिसके कारण उनके द्वारा किसी भी योजना हेतु की गई दान की अपील को समाज सरमाथे रखकर उसकी सफलता हेतु पूर्ण आत्म विश्वास के साथ अपना सहयोग प्रदान करती है। विशेषता यह है कि जिस योजना अथवा संस्था के लिए भक्तजन दान देते हैं, उनके दिये दान का उपयोग उसी योजना एवं उसी संस्था के लिए स्वामी जी द्वारा किया जाता है। स्वामी जी द्वारा व्यवस्थित कराये गये समस्त संस्थाओं के खातों की व्यवस्था स्पष्ट नीति के साथ सदैव पृथक्-पृथक् दर्पणवत् देखी जा सकती है।

(6) सुनियोजित अर्थ व्यवस्था के विशेष अनुभवी–

किसी भी कार्य को सफल करने हेतु उचित प्रबंधन के साथ-साथ उचित अर्थ व्यवस्था की प्रभावी नीति बनाना यह भी आपके व्यक्तित्व का अत्यन्त विशेष गुण है। इसका एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उदाहरण भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर में देखने को मिला। जब बिहार सरकार के मुख्यमंत्री माननीय श्री नितीश कुमार जी का आगमन साक्षात् तीर्थभूमि पर हुआ और उन्होंने स्वामी जी से सहज ही यह प्रश्न किया कि आपकी कितनी धनराशि एवं कितना समय इस तीर्थ निर्माण हेतु लगा है, तब स्वामी जी द्वारा तीर्थ निर्माण की कुल लगी धनराशि दो से ढ़ाई करोड़ तथा समय जमीन खरीदने से लेकर तीर्थ का सम्पूर्ण निर्माण करने तक 22 माह बताते ही मुख्यमंत्री महोदय के मुख से यह शब्द निकले कि यदि यह कार्य सरकार द्वारा किया जाता, तो इसमें काफी राशि खर्च होती और समय भी अधिक ही लगता। माननीय मुख्यमंत्री जी के मुख से यह बात निकलना निश्चित ही स्वामी जी की सुनियोजित एवं प्रभावी अर्थ नीति के गुण को प्रकट करता है। इस प्रकार स्वामी जी द्वारा मंदिर निर्माण, मूर्ति निर्माण, धर्मशाला निर्माण, साहित्य प्रकाशन या छोटे-बड़े समारोह-महोत्सव आदि किसी के लिए भी बनाये गये बजट को देखकर अनेक अनुभवी लोग आश्चर्यचकित हो जाते हैं। लेकिन प्रत्येक कार्य स्वामी जी द्वारा बनाये गये बजट में पूर्ण शालीनता, ठाठबाट एवं गरिमा के साथ सम्पन्न होते हैं।

(7) सफल योजना शिल्पी–

स्वामी जी के निर्देशन में आज भारतवर्ष में अनेक संस्थाओं का संचालन हो रहा है और सभी संस्थाएँ कुशलतापूर्वक समाज के सहयोग से संचालित हो रही हैं। किस तीर्थ पर किस योजना के अनुरूप विभिन्न गतिविधियों को संचालित करना यह स्वामी जी के विशेष रुचि का विषय रहता है। अत्यन्त विश्वासपूर्वक आपके मन में सोची-समझी बातें और विशेषकर दान योजनाओं की राशि का आंकड़ा भगवान के आशीर्वाद से विशेष सफलता को प्राप्त करता है। अपने इस योजना शिल्प की महत्वपूर्ण गुणवत्ता के कारण आपके प्रमुख नेतृत्व में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर, प्रयाग-इलाहाबाद, कुण्डलपुर (नालंदा), अयोध्या (फैजाबाद), काकंदी (देवरिया) उ.प्र., मांगीतुंगी में निर्माणाधीन भगवान ऋषभदेव 108 फुट उत्तुंग मूर्ति निर्माण कार्य, गणिनी ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ माधोराजपुरा, निर्माणाधीन ज्ञानतीर्थ-शिर्डी (महा.) आदि तीर्थ सफलतापूर्वक विकास के शिखर को छू रहे हैं एवं प्रत्येक तीर्थ पर दर्शनार्थियों को देश की अनूठी रचनाओं के दर्शन होते हैं।

(8) संगठन समायोजन की अद्भुत कला–

प्रत्येक व्यक्ति की विचारधाराएं अलग-अलग होती हैं, यह बात हम सभी जानते हैं। लेकिन कोई भी संगठन ऐसे अनेक व्यक्तियों से मिलकर ही बनता है। अतः किसी भी संगठन को सुचारू संचालित करने हेतु एक ऐसे योग्य

समाज-नेता की आवश्यकता होती है, जिसके अंदर समस्त अलग-अलग विचारधाराओं के लोगों को समायोजित करने की अद्भुत कला विद्यमान है। और यह गुण हमें पूर्ण परिपक्वता के साथ स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी में देखने को मिलता है। अनेक संस्थाओं को संचालित करने में विभिन्न विचार धाराओं वाले भक्तों को, सामाजिक कार्यकर्ताओं को तथा संस्था के कर्मचारियों को किस प्रकार एक संगठन में बांधकर रखना, इस बात की युक्ति स्वामी जी के मन-मस्तिष्क का सबसे बड़ा गुण कहा जा सकता है। उनके द्वारा संगठन में बंधे होने से प्रत्येक व्यक्ति का लक्ष्य स्वामी जी का लक्ष्य होता है और स्वामी जी की कार्यक्षमता कई गुना बढ़कर कार्य को सफलता प्रदान कराती है।

(9) निःस्वार्थ एवं निष्काम सेवा के धनी–

रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन निःसंदेह ही देव-शास्त्र एवं गुरु की सेवा में पूर्णरूपेण समर्पित किया है। युवावस्था में ही वे गृहविरत हो गये और उन्होंने अपनी गुरु गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का सान्निध्य पाकर अपने जीवन को धर्म के लिए समर्पित कर देने का निर्णय लिया। पुनः क्रम-क्रम से उन्होंने अपने गुरु आदेश का पालन करते हुए अपनी समस्त चर्याओं में निपुण रहकर सदा ही धर्म एवं समाज की निःस्वार्थ एवं निष्काम सेवा की है। वर्तमान में जितनी भी संस्थाएँ आपके अनुशासन में संचालित हो रही हैं, हर संस्था का बैंक एकाउण्ट उन-उन संस्थाओं के नाम से है और सभी का लेखा-जोखा स्पष्टता के साथ सुचारू किया जाता है। स्वामी जी सदैव संस्था संचालन के प्रत्येक कार्य अपनी कमेटी के समस्त पदाधिकारियों की जानकारी में करते हैं तथा बैंक खातों के संचालन भी नियमानुसार किन्हीं तीन नियुक्त पदाधिकारियों में से दो के हस्ताक्षर से ही होते हैं। समय-समय पर सभी संस्थाओं की बैठकें आयोजित करना और कार्य प्रगति अथवा अवरोध की हर जानकारी पूरी कमेटी को प्रदान करना, उनके सुझावों को लेना एवं आगे की योजनाओं को बताकर सभी से सहयोग की अपेक्षा करना यह आपके सौहार्द एवं उचित नियम पालन का महत्वपूर्ण सूचक है, जो सभी के लिए प्रेरणास्पद बनता है। व्यक्तिगत लाभ, प्रतिष्ठा अथवा कीर्ति के लिए कभी स्वामी जी के मन को तनिक विचार भी छू न सका और सदैव उन्होंने संस्था की, समाज की एवं गुरु संघ की सेवा का लक्ष्य बनाकर समाज के बीच आदर्श प्रस्तुत किया है।

(10) त्वरित गणितीय आकलन में दक्षता–

स्वामी जी की बुद्धि अत्यन्त तीव्र है, इस बात को उनके द्वारा बातों-बातों में किये जाने वाले त्वरित गणितीय आकलन को देखकर महसूस किया जा सकता है। जमीन का माप हो, पाण्डाल या हॉल की बैठक क्षमता हो, बिल्डिंग मटेरियल का आकलन हो, वर्ग हो, घन हो, व्यास हो, परिधि हो, किसी ठोस पदार्थ का वजन हो, गोले का क्षेत्रफल हो, त्रिज्या हो अथवा किन्हीं भी राशियों का गुणनफल, भागफल या जोड़-घटाव हो, किसी भी प्रकार के गणितीय आकलन में आपकी कुशाग्र एवं त्वरित बुद्धि आपके अनूठे व्यक्तित्व को प्रदर्शित करती है।

(11) साहसिक व्यक्तित्व–

स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी का व्यक्तित्व धार्मिक एवं सेवाभावी होने के साथ ही अत्यन्त साहसिक भी है। किसी भी कार्य में किसी भी प्रकार का अवरोध चाहे शासन से, प्रशासन से, समाज से अथवा परम्परा भेद से प्राप्त होने पर वे सदा सत्य और अपनी आगम मान्यता व परम्परा के लिए अडिग रहते हैं। कभी भी समाज, धर्म आदि की विभिन्न गतिविधियों में किसी विरोध का सामना करने में उनका साहस डगमगाया नहीं और उन्होंने सदा प्रतिकूल परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाकर सफलता प्राप्त की। इसके साथ ही किसी भी अनुकूल परिस्थितिपूर्वक किसी भी भारी भरकम कार्य का बोझ भी वे इतनी सहजता के साथ उठा लेते हैं, जिसके वजन का अंदाज भी साथ चलने वालों को नहीं होता है। इसका सहज उदाहरण हो सकता है-स्वामी जी के कंधों पर मौजूद मांगीतुंगी में बन रही विश्व की सबसे ऊँची 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव प्रतिमा निर्माण का बीड़ा। साथ ही हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर उकेरी जाकर प्रतिष्ठित हो चुकी 31-31 फुट उत्तुंग भगवान शांति-कुंथु-अरहनाथ की तीन-तीन विशाल प्रतिमाएँ भी इसी साहसिक व्यक्तित्व की एक झलक है।

(12) त्वरित निर्णय की क्षमता–

किसी भी आपातकालीन स्थिति से शीघ्र उभरने के लिए शासक-प्रशासक या किसी क्षेत्र के नेतृत्व में त्वरित निर्णय की उच्च क्षमता होना अत्यन्त आवश्यक होती है। यह गुण स्वामी जी के व्यक्तित्व में भी परिपुष्टता के साथ देखने को मिलता है। किसी भी अव्यवस्था अथवा अचानक बनती प्रतिकूल परिस्थिति को स्वामी जी जिस प्रकार शांत एवं संतुलित हृदयगति के साथ समाधान की दिशा में लाते हैं, वह गुण किसी भी ऊँची सीढ़ी चढ़ने वाले व्यक्ति के लिए प्रेरणास्पद बन जाता है। प्रतिकूल ही नहीं अपितु किसी भी अनुकूल परिस्थितियों में भी आपके त्वरित निर्णय सोने का हार बनकर किसी भी कार्य को सफलता के सोपान चढ़ा देते हैं।

(13) प्रबंधन कला की अद्भुत प्रतिभा–

सामान्य रूप से किसी कार्य का बीड़ा उठाना और उसको सुनियोजित ढंग से सुचारू कर देना, यह तो कोई भी व्यक्ति विशेष कर सकता है लेकिन एक समय में अनेक कार्य का सूत्रपात करना और प्रत्येक कार्य की कार्ययोजना को सही समय पर सही गति प्राप्त होती रहना, प्रबंधन की यह कला स्वामी जी के व्यक्तित्व में सदा व्याप्त रहती है। यही कारण है कि वे हस्तिनापुर, कुण्डलपुर, प्रयाग, मांगीतुंगी, काकंदी, अयोध्या, माधोराजपुरा आदि तीर्थ-संस्थाओं की विभिन्न योजनाओं को एक ही समय में, एक ही स्थान पर बैठे-बैठे सरलता के साथ संचालित करते रहते हैं। आपके निर्देशन में इन सभी तीर्थों की प्रसिद्धि, आकर्षण, सौंदर्य एवं व्यवस्थाएँ देश के श्रद्धालु भक्तों द्वारा सदा ही प्रशंसा की पात्र रही हैं।

(14) स्फूर्तिले कदम–

किसी भी कार्य को करने हेतु जिस प्रकार स्वामी जी का चुस्त दिमाग सदा कार्य करता है, ठीक उसी प्रकार वे अपने सन्तुलित शारीरिक डील-डौल के साथ सदा स्फुरायमान नजर आते हैं। उनके द्वारा अपने शरीर को खींचकर तेज कदम से चलना किसी विशेष व्यक्तित्व की परछाईं प्रदर्शित करता है। दाएं-बाएं करते उनके कदमों से कदम मिलाकर चलना नवजवानों के लिए भी टेड़ी खीर के समान नजर आता है। योगासन, व्यायाम तथा संतुलित आहार के साथ अपने दिल-दिमाग व शरीर को चुस्त-दुरुस्त रखने वाले स्वामी जी का यह शारीरिक अभ्यास भी उनके व्यक्तित्व की अभिवृद्धि एवं विशेषता में चार-चांद लगा देता है।

(15) समय के प्रति ईमानदारी और बेमानी का गुण–

स्वामी जी ने सदैव समय को बेशकीमती मानकर उसकी अत्यधिक कीमत की है। वे सदैव घड़ी के कांटे से अपनी दिनचर्या प्रारंभ करते हैं लेकिन कार्य करते वक्त वे कभी घड़ी देखते भी नहीं हैं। ठीक समय पर कार्य का शुभारंभ करने हेतु घड़ी का कांटा देखना और फिर जब तक सोचा गया कार्य पूर्ण न हो जावे, तब तक पुनः घड़ी को देखना भी नहीं, समय के प्रति आपकी यह ईमानदारी और बेमानी का गुण औरों के लिए विशेष प्रेरणादायी बन जाता है।

(16) मिलनसारिता एवं वात्सल्य–

आने वाले प्रत्येक परिचित-अपरिचित तथा विशेष व सामान्य श्रद्धालु भक्तों के प्रति सदा पुलकितमना रहने वाले स्वामी जी का हृदय सदा वात्सल्य गुण से ओतप्रोत रहता है। आपके समीप आकर मिलने वाला प्रत्येक व्यक्ति श्रेष्ठी हो या सेवक हो, सन्तुष्ट होकर ही वापस लौटता है। आपके अंतर्मन में आने वाले व्यक्ति के मनोभावों को पढ़ने की अद्भुत कला है और आप उसी के अनुरूप प्रत्येक व्यक्ति को अपने समीप बैठाकर उसकी आवश्यकता व समस्या का समाधान तुरंत कर देते हैं। आपके इस विशाल हृदय में समाज के हर वर्ग, परम्परा व मान्यता वाले लोगों के प्रति भी मिलनसारिता का गुण सदैव प्रवाहित होता रहता है और आप सभी को अपने गले लगाकर समकक्ष स्थान देने में तत्पर रहते हैं।

(17) निरभिमानता–

स्वामी जी का व्यक्तित्व अथवा उनकी गरिमा कितनी भी ऊँचाइयों को स्पर्शित करती हो, लेकिन उनके मन में सदैव निश्छल, निःस्वार्थ एवं जमीन को छूती भावनाएँ व्याप्त रहती हैं। इतने व्यापक सामाजिक हिस्से पर आपका अधिकार होते हुए भी आपके मन में कभी अभिमान की परछाई तक देखने को नहीं मिलती है। आपके जीवन की हर चर्या जमीन से जुड़कर चलती है लेकिन आपका व्यक्तित्व एवं चिंतन सदा आकाश की ऊँचाईयों से महिमामंडित होता है।

बहिरंग परिचय

(1) जन्म–आपका जन्म ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी (श्रुतपंचमी) को सन् 1950 में हुआ।

(2) जन्म स्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

(3) माता-पिता–माता मोहिनी देवी (आर्यिका श्री रत्नमती माताजी हुईं) एवं पिता श्री छोटेलाल जैन

(4) जन्म नाम–रवीन्द्र कुमार जैन

(5) शिक्षा–लखनऊ युनिवर्सिटी से बी.ए. तक अध्ययन

(6) भाई बहन–

बहनें–

– कु. मैना जैन (वर्तमान-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी)

– कु. मनोवती जैन (वर्तमान-आर्यिका श्री अभयमती माताजी)

– कु. माधुरी जैन (वर्तमान-आर्यिका श्री चंदनामती माताजी)

– श्रीमती शांति देवी जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, डालीगंज, लखनऊ (उ.प्र.)

– सौ. श्रीमती जैन ध.प. श्री प्रेमचंद जैन, बहराइच (उ.प्र.)

– श्रीमती कुमुदिनी जैन ध.प. स्व. श्री प्रकाशचंद जैन, कानपुर (उ.प्र.)

– श्रीमती मालती जैन ध.प. श्री यशवीर जैन, मोरीगेट-दिल्ली

– श्रीमती कामिनी जैन ध.प श्री जयप्रकाश जैन, दरियाबाद (उ.प्र.)

– श्रीमती त्रिशला जैन ध.प. श्री चन्द्रप्रकाश जैन, नाका हिण्डोला, लखनऊ (उ.प्र.)

भाई –

– श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ, लखनऊ (उ.प्र.)

– स्व. श्री प्रकाशचंद जैन, टिकैतनगर (उ.प्र.)

– श्री सुभाषचंद जैन सर्राफ, लखनऊ-टिकैतनगर (उ.प्र.)

(7) त्याग की प्रेरणा – सन् 1968 में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा 2 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत

(8) आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत – सन् 1972 में आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज द्वारा, नागौर (राज.) में

(9) सप्तम प्रतिमा के व्रत एवं गृह त्याग – सन् 1987 में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा

(10) दशम प्रतिमा एवं पीठाधीश पदारोहण के संस्कार – मगसिर कृष्णा दशमी, 20 नवम्बर 2011, पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा

(11) उपाधि अलंकरण –

- **'कर्मयोगी'** (सन् 1992 में अ.भा. दि. जैन शास्त्री परिषद द्वारा)
- **'धर्मसंरक्षणाचार्य'** (सन् 1996 में मांगीतुंगी-महा. में पंचकल्याणक के अवसर पर वीर सेवा दल द्वारा)
- **'संस्कृति संरक्षक'** (सन् 2006 में भट्टारकवृंद द्वारा)
- **'धर्मालंकार'** (सन् 1996, मांगीतुंगी में)
- **'संस्कृति सार्थवाह'** (12 जून 2010, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में आयोजित ज्ञान ज्योति विद्वत् प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर समस्त विद्वत्जनों द्वारा)
- **'तीर्थोद्धारक'** (30 नवम्बर 2011, औरंगाबाद-महा. में समस्त दिगम्बर जैन समाज औरंगाबाद एवं गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल महाराष्ट्र द्वारा पीठाधीश पदारोहण के उपरांत आयोजित स्वामी जी के सम्मान समारोह में प्रदत्त)

(12) विदेश यात्रा – भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष के अन्तर्गत सन् 2000 में न्यूयार्क-अमेरिका में आयोजित 'विश्वशांति शिखर सम्मेलन' में जैन धर्माचार्य के रूप में विशेष सहभागिता

(13) साहित्यिक अवदान – विगत 38 वर्षों से संस्थान द्वारा प्रकाशित की जाने वाली सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का सम्पादन।

– वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला द्वारा प्रकाशित होने वाले पूज्य माताजी द्वारा लिखित ग्रंथों का सम्पादन कर प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में छपवाकर विशेष धर्मप्रचार में महत्वपूर्ण सहयोग।

(14) विशेष सौभाग्य – आपको पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी जैसी जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी के लघु भ्राता होने का सौभाग्य प्राप्त है। साथ ही आपकी अन्य दो बहनें भी उपरोक्तानुसार आर्यिका व्रतों का अनुपालन करते हुए आत्मकल्याण एवं धर्मप्रभावना के कार्य कर रही हैं। इसके साथ ही सबसे महान सौभाग्य यह है कि आपकी जन्म प्रदात्री माँ ने भी तेरह संतानों का लालन-पालन करने के उपरांत स्वयं आर्यिका दीक्षा धारण की और अपने मानव जीवन को सफल किया, ऐसी पूज्य महान आत्माओं के साथ आपका गृहस्थ संबंध होना अत्यन्त विशेष सौभाग्य एवं पुण्य का विषय है।

(15) विभिन्न नेतृत्व –

अध्यक्ष – दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

अध्यक्ष – भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दि. जैन समिति, कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार

अध्यक्ष – तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ प्रयाग प्रबंध समिति, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.)

अध्यक्ष – दिगम्बर जैन अयोध्या तीर्थक्षेत्र कमेटी, अयोध्या (फैजाबाद) उ.प्र.

अध्यक्ष – भगवान पुष्पदंतनाथ जन्मभूमि काकंदी दि. जैन समिति, काकंदी (देवरिया-गोरखपुर) उ.प्र.

अध्यक्ष – भगवान ऋषभदेव 108 फुट उत्तुंग मूर्ति निर्माण कमेटी, मांगीतुंगी (सटाणा) महा.

चेयरमैन – गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी दीक्षा तीर्थ, माधोराजपुरा (जयपुर) राज.

अध्यक्ष – तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ

अध्यक्ष – अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद

अध्यक्ष – भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी

कार्याध्यक्ष – बिहार प्रान्तीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, कार्यालय-आरा (बिहार)

उपाध्यक्ष – भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा, दिल्ली

परामर्शदाता – भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

प्रेरणास्रोत – श्रुत सेवा निधि न्यास, फिरोजाबाद (उ.प्र.)

चेयरमैन – अग्रवाल दिगम्बर जैन महासभा

समाज के नाम स्वस्तिश्री स्वामी जी के कतिपय संदेश बिन्दु

स्वस्तिश्री स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी ने अपने सामाजिक जीवन के अनेक उतार-चढ़ाव एवं अनुभवों के आधार पर जो निष्कर्ष पाया, उस संदर्भ में भारत वर्ष की समस्त जैन समाज एवं राष्ट्रीय/क्षेत्रीय संस्थाओं से धर्मसंरक्षण एवं धर्मप्रभावना हेतु कतिपय संदेश बिन्दु प्राप्त करके हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, जो निम्नानुसार हैं –

(1) तीर्थों के उचित विकास, रख-रखाव एवं प्रबंधन के लिए उस तीर्थ से संबंधित समस्त पदाधिकारीगण अपने समर्पित भावों के साथ निष्ठापूर्वक कर्तव्यों का पालन करें। अथवा किसी भी तीर्थ के संचालन हेतु ऐसे ही पदाधिकारियों का चयन किया जाये, जो अपने गृहकार्य के समतुल्य ही तीर्थ संचालन की जिम्मेदारियों का भी पूर्ण निर्वहन करें और वहाँ की प्रत्येक समस्याओं का प्रत्यक्ष समाधान करने का प्रयास करें।

(2) तीर्थों पर यात्रियों के आवागमन की संख्या अधिक बढ़ाने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करके समय-समय पर समाज को तीर्थ पर आने का निमित्त प्रदान करते रहें, जिससे तीर्थ का रख-रखाव (संरक्षण-संवर्धन) दान आदि के माध्यम से बना रहे और विकास की शृँखला चलती रहे।

(3) पंथवाद को नगण्यता की विचार कोटि में रखकर सदैव पंथवाद के विवाद से दूर रहने का प्रयास करें। साथ ही जिस तीर्थ पर जिस मान्यता/परम्परा से जो प्राचीनकालीन व्यवस्था चल रही है, उसमें कभी कोई फेरबदल करने का प्रयास न स्वयं करें और न अन्य को ही करने देवें। बल्कि उन प्रत्येक मंदिरों में चल रही परम्परा का एक शिलालेख अवश्य दीवार में लगावें।

(4) किसी भी तीर्थक्षेत्र के सफल संचालन हेतु उस तीर्थ की स्थानीय कमेटी में संगठन एवं सामंजस्य की स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण होती है। अतः आपसी प्रेम और सौहार्द को बनाये रखने का प्रथम प्रयास करना चाहिए तथा समाज के किसी एक निःस्वार्थ, निष्पक्ष तथा वरिष्ठ, प्रतिष्ठित व कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तित्व के निर्देशों पर चलकर सबको संगठित रहने का प्रयास करना चाहिए। पद की गरिमा हेतु प्रत्येक पदाधिकारी को उसके स्वतंत्र अधिकार देकर उसका विशेष महत्व कायम रखने का प्रयास करना चाहिए। लेकिन समय-समय पर सामूहिक बैठकों के माध्यम से सभी के कार्यों की समीक्षा अवश्य किसी प्रमुख व्यक्तित्व के निर्देशन में होना चाहिए।

(5) विभिन्न तीर्थक्षेत्रों पर चल रहे किन्हीं भी विवादों के कोर्ट केस में यदि कहीं किसी प्रकार के समझौते की स्थिति बनती है, तो अवश्य ही परिस्थिति के अनुसार निर्णय लेने का प्रयास करना चाहिए।

(6) वर्तमान में जैन समाज का बाहुल्य अत्यन्त अल्प स्थिति में आ चुका है अतः इस समय हमारी जनसंख्या चिंता का विषय है। ऐसी स्थिति में समाज के प्रबुद्धजनों को समाज में जनसंख्या बढ़ोत्तरी का आह्वान खुलकर करना चाहिए। एक परिवार में अधिक बच्चे होने पर ही कोई धर्म की राह पर, कोई उच्च शिक्षा की राह पर, कोई समाज सेवा की राह पर, तो कोई राजनीति की राह पर चलने में समर्थ हो सकेगा और लम्बे समय के उपरांत जैन समाज का प्रभाव हर क्षेत्र में दिखाई देगा।

(7) विद्वानों को साहित्य लेखन की दिशा में आगम परख ज्ञान प्राप्त करके ही अपनी कलम विश्वास के साथ चलाने का प्रयास करना चाहिए। अन्यथा शोधात्मक अध्ययन के आधार पर लिखे गये धार्मिक आलेखों में कभी-कभी जानकारी के अभाव अथवा अज्ञानता के कारण बड़ी गलतियाँ होने का खतरा रहता है। ये गलतियाँ हमारी संस्कृति, इतिहास और भविष्य के लिए हानिकारक बन सकती हैं।

स्वस्तिश्री स्वामी जी के निर्देशन में संचालित हो रहे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त
जम्बूद्वीप तीर्थ के कतिपय आदर्श

प्रारंभ से ही दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर ने अपनी राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों के माध्यम से भारत वर्ष की विशिष्ट संस्थाओं में एक विशेष स्थान पाया है। इस संस्थान द्वारा निर्मित किया गया जम्बूद्वीप तीर्थ समाज द्वारा सदैव ''धरती पर स्वर्ग'' की उपमा से अलंकृत होता है। ऐसी संस्था, जिसके आदर्श अन्य तीर्थ एवं संस्थाओं के लिए वर्तमान समय में प्रासंगिक प्रतीत होते हैं। अतः जिनधर्म की प्रभावना, जिनसंस्कृति का संरक्षण और तीर्थों की रमणीयता को विशेष प्रकाशमान करने हेतु इस अंक के माध्यम से स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के अनथक प्रयास से कुशलतापूर्वक संचालित हो रहे जम्बूद्वीप संस्थान/तीर्थ के कतिपय आदर्श गुण यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं –

(1) अध्यात्म और पर्यटन का अद्भुत संगम : जम्बूद्वीप तीर्थ –

टेम्पल टूरिज्म का अद्भुत उदाहरण बनने वाले जम्बूद्वीप तीर्थ का सौंदर्य आने वाले प्रत्येक जैन-जैनेतर श्रद्धालुभक्त अथवा पर्यटकों को अपनी ओर विशेष आकर्षित करता है। मंदिरों को हरे-भरे लॉन, बगीचे, आध्यात्मिक मनोरंजनों यथा नौका विहार, ऐरावत हाथी की सवारी, धार्मिक थिएटर, प्रदर्शनी, झाँकी, झूले आदि के माध्यम से कुछ इस तरह विकसित किया गया है, जिसके कारण वर्तमान की युवा पीढ़ी अध्यात्म की ओर विशेष आकर्षित होती है। साथ ही बच्चों को भी मनोरंजन के साधनों के साथ तीर्थभूमि की यात्रा एवं भगवन्तों के दर्शन के संस्कार अनायास ही प्राप्त होते हैं। विगत 37 वर्षों से इस तीर्थभूमि की वंदना हेतु भक्तजन सदा आते रहते हैं और सदा ही उनको जम्बूद्वीप तीर्थ का समागम मानसिक, शारीरिक एवं आध्यात्मिक शांति प्रदान करता है।

(2) कलाकृति एवं ज्ञानार्जन का विशेष स्थल –

इस तीर्थ पर सामान्य मंदिरों के साथ ही विशेष कलाकृतियों से समन्वित विभिन्न जिनमंदिरों का निर्माण भी किया गया है, जिनको देखते ही भक्तों एवं पर्यटकों का मन प्रफुल्लित हो उठता है। विशेषरूप से जम्बूद्वीप रचना, कमल मंदिर, ध्यान मंदिर, तेरहद्वीप मंदिर, ॐ मंदिर, हीरक जयंती एक्सप्रेस आदि ऐसी अनूठी कृतियाँ निर्मित हैं, जिनकी कलाकृति देखकर भक्त मंत्रमुग्ध होते हैं और इसके साथ ही सभी को इन कृतियों से जैनधर्म का अनूठा ज्ञानार्जन भी होता है।

(3) जैन भूगोल विज्ञान का एकमात्र केन्द्र –

जम्बूद्वीप तीर्थ पर केवल भगवान के दर्शन ही नहीं प्राप्त होते अपितु यहाँ जैनधर्म में निहित विज्ञान भी साक्षात् प्रगट होता है। जैनधर्म के अनुसार सृष्टि की भौगोलिक संरचना को जानने व समझने के लिए यह एक अद्भुत केन्द्र है। यहाँ 'जम्बूद्वीप रचना' में मध्यलोक का प्रथम द्वीप जम्बूद्वीप, पुनः 'तेरहद्वीप रचना' में अकृत्रिम जिनालयों से समन्वित मध्यलोक के समस्त तेरहद्वीप तथा 'तीनलोक रचना' में मध्यलोक के साथ ही ऊर्ध्वलोक में स्वर्गों की व्यवस्था तथा अधोलोक में नरक की व्यवस्था साक्षात् समझी जा सकती है।

(4) जम्बूद्वीप तीर्थ पर देश की महामहिम राष्ट्रपति जी का पदार्पण –

भारतवर्ष के तीर्थों में जम्बूद्वीप तीर्थ की महिमा सदैव भक्तों द्वारा विशेषरूप से गाई गयी और पूज्य माताजी के आशीर्वाद से यहाँ बनी अनूठी कृतियों के अलावा यहाँ का आध्यात्मिक सौंदर्य ने देश और विदेश के सभी भक्तों व पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित किया। इसी के साथ इस तीर्थ भूमि के महान प्रताप से यहाँ अनेकानेक अनूठे ऐतिहासिक आयोजन भी सम्पन्न हुए, जिनके कारण हस्तिनापुर की प्रसिद्धि में और भी चार-चाँद लगे। इसी श्रृँखला में वर्ष 2008 का दिसम्बर माह जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के लिए 'गौरव दिवस' के रूप में सिद्ध हो गया, जब पूज्य माताजी की प्रेरणा, आशीर्वाद व सान्निध्य में देश की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने 21 दिसम्बर 2008 को विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन करके देश और विश्व के समक्ष अहिंसा का उद्घोष किया। साथ ही महामहिम जी ने इस अवसर पर भगवान पार्श्वनाथ एवं चन्द्रप्रभु का जन्मकल्याणक मनाते हुए पालना झुलाना व भगवान के सम्मुख रत्नवृष्टि करने का महान सौभाग्य भी प्राप्त किया। यह सम्पूर्ण जैन समाज के लिए विशेष गौरवपूर्ण उपलब्धि रही।

(5) श्रेष्ठ तीर्थ प्रबंधन –

जम्बूद्वीप तीर्थ का एक मुख्य आदर्श है 'सर्वोत्तम तीर्थ प्रबंधन'। इस तीर्थ पर आकर भक्तों को एवं समाज के अन्य

कार्यकर्ताओं को इस बात की प्रेरणा प्राप्त होती है कि तीर्थ को किस प्रकार उचित प्रबंधन की दिशा प्रदान की जा सकती है। यहाँ आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को तीर्थ की चहुँ दिशाओं में साफ-सफाई, व्यवस्थित बागवानी, मंदिरों की उचित देख-रेख, तीर्थ के प्रत्येक दर्शनीय स्थल पर पर्याप्त स्टाफ की व्यवस्था, यात्रियों की सुविधा हेतु विशेष आवासीय व्यवस्था, जिसमें सामान्य कमरे से लेकर ए.सी. डीलक्स फ्लैट, कोठी, बंगले व हॉल की उपलब्धता सभी यात्रियों को विशेष आरामयुक्त प्रवास प्रदान करती है। तीर्थ पर विशाल भोजनशाला भी निर्मित है, जिसमें सभी यात्रियों को सात्विक एवं स्वादिष्ट भोजन प्राप्त होता है। यात्रियों की उचित व्यवस्था हेतु तीर्थ पर दिन व रात्रि दोनों समय में अलग-अलग स्टाफ की व्यवस्था रहती है। आवश्यकतानुसार तीर्थ पर सतत विद्युत प्रदाय की व्यवस्था विशेष जनरेटर के माध्यम से उपलब्ध रहती है।

(6) तीर्थ पर प्रथम बार हैलीपैड और धार्मिक थिऐटर जैसा निर्माण–

जम्बूद्वीप तीर्थ की अनूठी संरचना में यहाँ सर्वसुविधाओं के साथ विशेषरूप से हैलीपैड भी निर्मित किया गया है। आने वाले विशेष अतिथियों, राजनेताओं का आगमन हैलीकाप्टर द्वारा जम्बूद्वीप स्थल पर सीधे तीर्थ परिसर में किया जा सकता है। इस हेतु यहाँ हैलीपैड का निर्माण किया गया है, जिसका उपयोग आये दिनों मुख्य अतिथियों के आगमन हेतु होता है तथा शासन-प्रशासन भी जम्बूद्वीप हैलीपैड के उपयोग से सदैव सुविधापूर्वक लाभान्वित होता है।

इस तीर्थ पर प्रथम बार धार्मिक थिऐटर का निर्माण भी किया गया है। पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के 75वें जन्मोत्सव के अवसर पर निर्मित की गई हीरक जयंती एक्सप्रेस रेल की एक बोगी में सुन्दर थिएटर बनाया गया है, जिसमें यात्रियों को विभिन्न धार्मिक ज्ञान प्राप्ति हेतु फिल्म चलाई जाती है। इस थिएटर को देखकर भक्तजन विशेष आनंदित होते हैं और अनूठी कृति की प्रशंसा करते हैं।

(7) नित्य नूतन कृतियों का निर्माण–

जम्बूद्वीप तीर्थ का इतिहास सदैव विकासशील रहा है। यहाँ जब भी यात्रियों का आगमन साल-डेढ़ साल में होता है, तब सदैव वे कोई न कोई नूतन कृति का दर्शन करके अपनी यात्रा को पुनः-पुनः सफल करते हैं। सन् 1974 से प्रारंभ हुए इस तीर्थ के विकास के बाद लगातार वर्तमान तक यहाँ मजदूरों एवं कारीगरों का विशेष जत्था नूतन कृतियों के निर्माण हेतु कार्यरत रहता है। यही कारण है कि मात्र दो एकड़ की भूमि पर इस तीर्थ योजना को प्रारंभ करने के उपरांत आज लगभग 40 एकड़ की भूमि में इस तीर्थ का विकास हो चुका है और नित्य ही नूतन कृतियाँ निर्मित करके समाज के श्रावकों, दर्शनार्थियों एवं पर्यटकों को संस्थान द्वारा विशेष ज्ञान लाभ का अवसर प्रदान किया जाता रहता है।

(8) हस्तिनापुर के इतिहास को प्रस्तुत करने के प्रयास–

इस तीर्थ पर हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास को विभिन्न जिनमंदिरों के माध्यम से प्रदर्शित करने का प्रयास किया जा रहा है। हस्तिनापुर के इतिहास में विष्णु कुमार महामुनि द्वारा अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों की रक्षा करने का इतिहास इस तीर्थ पर नूतन जिनमंदिर के निर्माण स्वरूप में किया जा रहा है। इसके अलावा हस्तिनापुर तीर्थभूमि पर युग की आदि में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव को महाराजा श्रेयांस द्वारा आहारदान दिया गया था अतः इस स्मृति में यहाँ पर भगवान ऋषभदेव का आहार भवन विशेषरूप से निर्मित किया गया है। चूँकि यह तीर्थ भूमि भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ जैसे तीर्थंकर, चक्रवर्ती एवं कामदेव पद के धारी महामना भगवन्तों की जन्मभूमि रही है अतः यहाँ ग्रेनाइट पाषाण की अखण्ड शिला में 31-31 फुट उत्तुंग भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की विशाल खण्ड्गासन प्रतिमाएँ प्रतिष्ठापित की गई हैं और वर्तमान में इन प्रतिमाओं से समन्वित अत्यन्त आकर्षक विशाल जिनमंदिर भी निर्मित किया जा रहा है। तीर्थंकर जन्मभूमियों के इतिहास में किसी भी जन्मभूमि पर वहाँ जन्मे भगवान की इतनी विशाल तीन-तीन प्रतिमाएं दर्शन हेतु नहीं प्राप्त होती हैं अतः यह जम्बूद्वीप तीर्थ के लिए विशेष गौरव का विषय है।

(9) त्यागीव्रती 'पीठाधीश' के हाथ में संस्थान की कमान–

आमतौर पर किसी भी धार्मिक संस्था को श्रावकों द्वारा संभालने की परम्परा देखने में आती है लेकिन जम्बूद्वीप तीर्थ एवं दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का संचालन संस्थान के संवैधानिक नियमानुसार इस जम्बूद्वीप धर्मपीठ पर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा 'पीठाधीश' पद की स्थापना सन् 1987 में की गई, जिसके अनुसार सदैव इस संस्थान का संचालन किसी भी दसवीं या ग्यारहवीं प्रतिमा धारी आदि के द्वारा पीठाधीश पद के निर्वहन के साथ किया जायेगा। इस पीठाधीश पद पर सर्वप्रथम पूज्य क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज को प्रतिष्ठापित किया गया, जिन्होंने

अत्यन्त कुशलतापूर्वक संस्थान का सदैव कुशल संचालन करके कभी कोई विवाद की स्थिति नहीं आने दी, अपितु विकास ही विकास का चरम लक्ष्य रहा। पुनः वर्तमान में इस पीठाधीश पद पर दशमी प्रतिमाधारी स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का मनोनयन किया गया, जो धर्म, समाज, तीर्थ एवं गुरु के प्रति सदैव समर्पित एवं निःस्वार्थ सेवी व्यक्तित्व हैं। अतः इस जम्बूद्वीप संस्थान का यह आदर्श पुनः सभी के लिए अनुकरणीय है।

(10) संस्थान के पदाधिकारियों का मर्यादित जीवन–

जम्बूद्वीप तीर्थ एवं संस्थान का यह विशेष सौभाग्य रहा कि पूज्य माताजी की शरण में आने वाले इस संस्थान के प्रति समर्पित पदाधिकारी व सदस्यगणों का जीवन सदैव विशेष मर्यादित रहा। सभी भक्तों की आस्था प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में रही और पूज्य माताजी की प्रेरणाओं को सभी ने सदा आदेश मानकर सहर्ष स्वीकार किया। यह भी संस्थान की सफलता का एक राज कहा जा सकता है कि पूज्य माताजी से प्राप्त संस्कारों के कारण कमेटी के समस्त पदाधिकारी व सदस्यगणों ने एक माला में पिरोये गये मोतियों के समान एक जुट रहकर सदा संस्थान का हित सोचा और सभी का तन-मन-धन से दिया गया श्रम व सहयोग संस्थान के स्वर्णिम भविष्य व इतिहास के लिए अमृत सिद्ध हुआ।

(11) परम्परा भेद से परे परम्परा–

जम्बूद्वीप तीर्थ की नीति सदैव सामंजस्य के पक्ष में रही है। इस तीर्थ पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1975 में पारित प्रस्ताव के अनुसार विशेष शिलापट्ट लगाया गया है, जिसमें वर्तमान में चल रहे बीसपंथ और तेरहपंथ पर निर्विवाद रूप से दोनों दिगम्बर जैन मान्यताओं को बराबर सम्मान दिया गया है तथा दोनों ही परम्पराओं के मानने वाले श्रद्धालु भक्तों को अपनी-अपनी मान्यतानुरूप पूजा-पाठ-अभिषेक आदि करने का विशेष विधान प्रस्तुत किया गया है। यह जम्बूद्वीप तीर्थ एवं संस्थान की स्पष्ट नीति का द्योतक है, जिसके माध्यम से कभी किसी श्रद्धालु भक्त के मन में मान्यता विशेष को लेकर कोई भेदभाव की स्थिति नहीं रहती है। अतः परम्परा भेद से परे परम्परा का यह आदर्श प्रत्येक तीर्थ के लिए उपयोगी है।

प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर परम्परा के प्रति स्वस्तिश्री स्वामी जी के उद्गार

सच्चे गुरु को तलाशना, परखना और फिर आँख मूंदकर उनकी हर बात को अपने जीवन में उतारना, यह एक शिष्य का परम कर्तव्य होता है। हमने प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज को देखा नहीं, न उनके वचनों को साक्षात् सुना। लेकिन हमने अपनी गुरु पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी को तलाशा, परखा और उसके बाद सदा के लिए आँखें मूंदकर उनके मुख से निकली हर बात का अक्षरशः पालन किया, इसी का परिणाम है कि आज हमारी आत्मा को सच्चा मार्ग मिला, समाज में उचित स्थान प्राप्त हुआ और धर्म व समाज की विशेष सेवा का अवसर प्राप्त हो सका। पुनः जब हम पूज्य माताजी के हृदय में व्याप्त प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज एवं उनकी परम्परा के संस्कारों की ओर दृष्टिपात करते हैं, तो स्वतः ही उन महामना गुरुवर्य श्री शांतिसागर जी महाराज की छवि हमारे मन को भी आल्हादित करने लगती है। इसी प्रकार हमारे भी प्रत्येक मनन-चिंतन एवं रग-रग में बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज का स्वरूप, उनकी चर्या, उनकी शिक्षाएँ और उनका आगम तलस्पर्शी ज्ञान वैभव हमें भी छूने लगता है। इसीलिए हम प्रारंभ से ही प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर परम्परा के संरक्षण, संवर्धन और विकास हेतु सदा कटिबद्ध रहे हैं और आगे भी रहेंगे। आचार्य महाराज ने अपने जीवनकाल में जो कुछ भी किया, बताया अथवा जाना, वह सब कुछ जैनधर्म के मूल आगम ग्रंथों के आधार पर ही प्रस्फुटित हुआ। आचार्य महाराज द्वारा दिया गया सज्जातित्व का संदेश, भगवन्तों के पंचामृताभिषेक का संदेश, मुनियों को श्रावकों द्वारा आहारदान देने हेतु विशुद्ध वस्त्रशुद्धि एवं भोजन शुद्धि की परम्परा, पूजा-अभिषेक-अनुष्ठान आदि में श्रावकों को जनेऊ धारण करने का श्रावकाचार, खानदान शुद्धि तथा खानपान शुद्धि का पालन, विजातीय शादी-विवाहों के संबंधों का पूर्णतः खण्डन आदि ऐसी अनेक शिक्षाएँ प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के जीवन से हमने पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त की है। हम सदैव आचार्य महाराज के प्रति नतमस्तक रहते हुए कभी उनके उपकारों को भूल नहीं पायेंगे।

स्वस्तिश्री कर्मयोगी स्वामी जी के विशेष निर्देशन में
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर का

तीन दशकीय राष्ट्रीय से अंतर्राष्ट्रीय स्वर्णिम कृतित्व

(सन् 1979 से 2011)

हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना निर्माण के साथ तीर्थ परिसर में अनेक अद्भुत जिनमंदिरों के निर्माण कार्य, क्षेत्र प्रबंधन आदि विशेषताओं से प्रसिद्ध दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान ने जम्बूद्वीप रचना के तीस वर्षीय काल में सन् 1981 से 2011 तक अनेक ऐसे कार्यकलाप सम्पन्न किए, जिनके माध्यम से हस्तिनापुर का गौरव विश्वविख्यात हुआ और देश व विदेश के उच्च शिक्षा जगत, समाज सेवा एवं राजनैतिक क्षेत्र से जुड़े हुए अति विशिष्ट महानुभावों को भी हस्तिनापुर के जैन इतिहास से परिचित कराकर जैनधर्म की महती प्रभावना की है। अतः प्रस्तुत है सन् 1979 से 2011 तक दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा सम्पादित कतिपय मुख्य कार्यकलापों का संक्षिप्त परिचय –

(1) अप्रैल 1979 में जम्बूद्वीप तीर्थ पर 101 फुट ऊँचे सुमेरु पर्वत के भगवन्तों का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव।

(2) अक्टूबर 1981 में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर स्थल पर 'जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति सेमिनार' का आयोजन।

(3) सन् 1982 से 1985 तक तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा उद्घाटित 'जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति रथ' का भारत भ्रमण।

(4) अप्रैल-मई 1985 में जम्बूद्वीप जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठापना महोत्सव।

(5) अप्रैल सन् 1985 में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर स्थल पर 'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन।

(6) सन् 1987 में जम्बूद्वीप के पीठाधीश एवं गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के प्रमुख शिष्यों में एक क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज की जम्बूद्वीप स्थल पर क्षुल्लक दीक्षा।

(7) सन् 1989 में जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की पथ-अनुगामिनी एवं आज्ञाकारिणी शिष्या बाल ब्र. माधुरी जैन की आर्यिका दीक्षा, जिनका नाम आर्यिका श्री चंदनामती माताजी है।

(8) सन् 1992 में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में 'अंतर्राज्यीय चरित्र निर्माण संगोष्ठी' का आयोजन।

(9) सन् 1993 में संस्थान द्वारा अयोध्या में 'भारतीय संस्कृति के आद्यप्रणेता भगवान ऋषभदेव' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।

(10) सन् 1994 में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या में बड़ी मूर्ति स्थल पर विराजमान 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा का महाकुंभ मस्तकाभिषेक महोत्सव। प्रति 10 वर्षानुसार यहाँ सन् 2005 में भी महाकुंभ मस्तकाभिषेक सम्पन्न किया गया।

(11) अक्टूबर 1995 में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में 'गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती साहित्य संगोष्ठी' का आयोजन।

(12) अक्टूबर 1997 में 4 से 13 अक्टूबर तक राजधानी दिल्ली में राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा उद्घाटित 'चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान' का ऐतिहासिक आयोजन।

(13) अप्रैल 1998 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा तालकटोरा स्टेडियम-दिल्ली से 'भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ' का भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तन।

(14) अक्टूबर 1998 में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में 'राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन' का आयोजन।

(15) फरवरी 2000 में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा लालकिला मैदान-दिल्ली में 'भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष' का उद्घाटन।

(16) जून 2000 में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में 'जैनधर्म की प्राचीनता' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन।

(17) अगस्त 2000 में यू.एन.ओ.-न्यूयार्क (यू.एस.ए.) में आयोजित 'विश्वशांति शिखर सम्मेलन' में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर की ओर से संस्थान के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन द्वारा धर्माचार्य के रूप में प्रतिनिधित्व।

(18) फरवरी 2001 में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान भूमि प्रयाग-इलाहाबाद में

'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का ऐतिहासिक नवनिर्माण।

(19) जनवरी 2001 में प्रयाग-इलाहाबाद के महाकुंभ मेले में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित नवम धर्मसंसद में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ द्वारा जैनधर्म का अद्भुत शंखनाद।

(20) सन् 2003-2004 में भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में 'नंद्यावर्त महल तीर्थ' का भव्य निर्माण एवं 'भगवान महावीर ज्योति रथ' का भारत भ्रमण हेतु प्रवर्तन।

(21) दिसम्बर 2003 में भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि राजगृही (नालंदा) बिहार व भगवान महावीर स्वामी की निर्वाणभूमि पावापुरी (नालंदा) बिहार में जिनमंदिरों के निर्माण एवं विशाल प्रतिमाओं की स्थापना।

(22) नवम्बर 2004 में गणधर गौतम स्वामी की निर्वाणभूमि गुणावां जी सिद्धक्षेत्र में जिनमंदिर का निर्माण।

(23) सन् 2005-2007 में 'भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव' का 6 जनवरी 2005 को बनारस में उद्घाटन एवं 4 जनवरी 2008 को अहिच्छत्र में समापन।

(24) जनवरी 2005 में भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी (सारनाथ) में पूज्य माताजी ससंघ के सान्निध्य में भगवान श्रेयांसनाथ की विशाल प्रतिमा का भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव।

(25) दिसम्बर 2005 में शाश्वत तीर्थ सम्मेदशिखर जी में 9 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की पद्मासन प्रतिमा से समन्वित सुन्दर कमल मंदिर का निर्माण।

(26) अप्रैल 2006 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के 'आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती महोत्सव' का राष्ट्रीय स्तर पर भव्य आयोजन।

(27) अप्रैल-मई 2007 में तेरहद्वीप जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव।

(28) अक्टूबर 2008 में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के हीरक जन्मजयंती महोत्सव का भव्य आयोजन।

(29) दिसम्बर 2008 में 21 दिसम्बर को जम्बूद्वीप स्थल पर पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल द्वारा 'विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन' का उद्घाटन।

(30) अगस्त 2009 में संसद भवन-दिल्ली में गृहमंत्री श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा उद्घाटित ''श्री जे.के. जैन अभिनंदन समारोह'' का आयोजन।

(31) वर्ष 2009 से इस संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दिगम्बर जैन समिति के सहयोग से प्रतिवर्ष बिहार सरकार के पर्यटन एवं संस्कृति विभाग तथा जिला प्रशासन नालंदा द्वारा भगवान महावीर जन्मजयंती के अवसर पर 'कुण्डलपुर महोत्सव' का आयोजन किया जा रहा है।

(32) फरवरी 2010 में जम्बूद्वीप स्थल पर 'जम्बूद्वीप रजत जयंती महोत्सव' के साथ भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग विशाल खड्गासन प्रतिमाओं तथा नवनिर्मित तीनलोक रचना के भगवन्तों का 'अंतर्राष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं तीर्थंकरत्रय महामस्तकाभिषेक महोत्सव'।

(33) मार्च 2010 में शोभित युनिवर्सिटी-मेरठ एवं जम्बूद्वीप संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में 'इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन इण्डियन सिविलाइजेशन थ्रू मिलेनिया' का सफल आयोजन।

(34) जून 2010 में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी (देवरिया, निकट-गोरखपुर) उ.प्र. का ऐतिहासिक विकास कार्य करके विशाल जिनमंदिर एवं कीर्तिस्तंभ का निर्माण तथा मंदिर जी में सवा 9 फुट उत्तुंग भगवान पुष्पदंतनाथ की पद्मासन प्रतिमा का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, शिखर कलशारोहण एवं ध्वजारोहण समारोह।

(35) अक्टूबर 2010 में शरदपूर्णिमा महोत्सव के शुभ अवसर पर विश्व में प्रथम बार निर्मित तीनलोक रचना का भव्य उद्घाटन समारोह।

(36) नवम्बर 2010 में गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की दीक्षा भूमि माधोराजपुरा (जयपुर) राज. में 'गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी दीक्षा तीर्थ' पर सम्मेदशिखर की अति सुन्दर प्रतिकृति का निर्माण करके चौबीस तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाओं से समन्वित चौबीस चैत्यालय एवं सबसे ऊपर भगवान पार्श्वनाथ की 15 उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा का विशाल स्तर पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव।

(37) फरवरी 2011 में भगवान ऋषभदेव के जन्मस्थान प्रथम टोंक-अयोध्या जी में अत्यन्त सुन्दर एवं कलात्मक जिनमंदिर का निर्माण करके विशाल स्तर पर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं भगवान ऋषभदेव महामस्तकाभिषेक का आयोजन।

प्रस्ताविकी-2

गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी का आदर्श व्यक्तित्व, उनकी महत्वपूर्ण शिक्षाएँ तथा पीठाधीश पद के प्रति पूज्य माताजी का मन्तव्य

प्रारंभ से स्वस्तिश्री स्वामी जी को संस्कार देने वाली प्रातःस्मरणीय गुरु

आदर्श क्यों है ?

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का व्यक्तित्व

किसी भी परिस्थिति को बदलने के लिए विचारों में नई ऊर्जा एवं क्रांति की आवश्यकता होती है। इस शृँखला में इस बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी में सर्वप्रथम युग के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज का जन्म भारत की धरती पर हुआ और उन्होंने जैनधर्म एवं संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और विकास हेतु समाज के मध्य ऐसे विचारों को प्रवाहित किया, जिसके बल पर जैनधर्म का दिगम्बरत्व अपना धर्म संरक्षण प्राप्त करके आगम परख बन सका। उन महामुनि की सूझ-बूझ और चिंतन अद्भुत होने के साथ दूरगामी शुभ संकेतों को प्रदर्शित करता था, यही कारण रहा कि उनके विचारों ने समाज को अत्यन्त प्रभावित करके अपने अनुरूप नई गति प्रदान की, जिसका परिणाम यह रहा कि साधु समाज हो या श्रावक समाज हो, सभी के जीवनवृत्त को प्राचीन जैनधर्म, संस्कृति के आधार पर नई रेखाओं ने अभिसिंचित किया और प्राचीन परम्परा, मान्यता व संस्कृति जीवन्त हो गई, ऐसे महापुरुष यथा-कदा जन्म लेते हैं, जिनके आश्रय से देश और समाज को नई दिशा प्राप्त होती है और विकास का क्रम आसमान को छूता है।

जैन समाज का यह अत्यन्त सौभाग्य रहा कि इसी बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी के संक्रमण काल में एक और महान आत्मा का जन्म इस धरती पर हुआ और उन्होंने जैन, संस्कृति के उत्थान हेतु सारे देश में अद्भुत अलख जगाकर श्रावकों को अपने कर्तव्यों से परिचित कराया, विस्मृत होते प्राचीन तीर्थों की स्मृति को पुर्नस्थापित किया और कठिन परिश्रम के साथ अपनी लेखनी से पुष्पदंत और भूतबली जैसे महान आचार्यों का युग दिखाने का भी सत्प्रयास किया। वे महान आत्मा हुईं ''युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, सिद्धान्तचक्रेश्वरी, गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी''। पूज्य माताजी ने अपने जीवन काल में जो भी लक्ष्य बनाया, उन लक्ष्यों ने न सिर्फ उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को समाज के बीच स्थापित किया, अपितु समस्त श्रावक समाज व संस्कृति को भी इस सदी के बहुमूल्य लाभ प्राप्त हुए। साथ ही पूज्य माताजी के जीवन में अप्रत्याशितरूप से कुछ घटनाएँ भी ऐसी हुईं, जिनके कारण समाज को सदैव महान गौरव और स्वर्णिम इतिहास देखने का अवसर प्राप्त हुआ है। ये अप्रत्याशित घटनाएँ कुछ इस प्रकार हैं–

(1) जन्म एवं वैराग्य की तिथियों का अद्भुत संयोग–

अपनी जन्मतिथि 'शरदपूर्णिमा' के दिन ही पूज्य माताजी ने सन् 1952 में वैराग्य का पथ अपनाकर समस्त गृहबंधन आदि का त्याग किया और आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत तथा सप्तम प्रतिमा के व्रत स्वीकार करके उन्होंने अपने मनुष्य जीवन को सार्थक कर लिया। देवयोग से यह संयोग अनायास ही बन गया, क्योंकि पूज्य माताजी स्वयं भी नहीं जानती थीं कि उनकी जन्मतिथि भी शरदपूर्णिमा ही है। इस संयोग की बात उनकी माँ ने व्रत लेने के उपरांत स्वयं ही बताई।

(2) उत्कृष्ट वैराग्य भावना–

बाराबंकी (उ.प्र.) में सन् 1952 में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज की केशलोंच सभा के मध्य कु. मैना के रूप में पूज्य माताजी ने स्वयं ही दर्शक दीर्घा में बैठे-बैठे अपना भी केशलोंच प्रारंभ कर दिया और 18 वर्ष की उम्र में ही दीक्षा की ओर कदम बढ़ा दिये। वैराग्य भावनाओं का उत्कृष्ट उदाहरण इस घटना से अधिक और क्या हो सकता है।

(3) प्रथम कुंवारी कन्या का वैराग्य मार्ग में प्रवेश–

इस बीसवीं सदी में गुलामी और आजादी की चल रही लड़ाई जैसे विकट माहौल में पूज्य माताजी द्वारा सर्वप्रथम कुंआरी कन्या के रूप में अल्पायु में ही मोक्षमार्ग पर कदम बढ़ाने का इतिहास भी उनकी उत्कृष्ट वैराग्य भावनाओं के फलस्वरूप स्वर्णाक्षरित हो गया। पुनः यहीं से अन्य कुंआरी कन्याओं के लिए भी मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो सका।

(4) ज्ञान का अद्भुत क्षयोपशम–

लौकिक शिक्षा अर्थात् जैन स्कूल में मात्र प्राइमरी कक्षा तक अध्ययन किया लेकिन ज्ञान के उत्कृष्ट क्षयोपशम के आधार पर हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, मराठी जैसी भाषाओं पर अधिकार प्राप्त करके जैनधर्म के अनेकशः कठिन से कठिन दुरूह ग्रंथों का स्वयं अध्ययन किया और निष्णातरूप से आद्योपांत ग्रंथों के मर्म को समझकर अपने शिष्य-शिष्याओं तथा अनेक मुनि-आर्यिकाओं को भी गुरु आदेश के अनुसार गोम्मटसार जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड, कातंत्र रूपमाला, अष्टसहस्री,

नियमसार, समयसार, पंचास्तिकाय, राजवार्तिक, मूलाचार आदि महान ग्रंथों का अध्यापन भी कराया।

(5) साहित्य सृजिका के रूप में इतिहास की प्रथम आर्यिका माता–

चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के उपरांत 2600 वर्षों के अंतराल में पूज्य माताजी एक ऐसी प्रथम महिला साध्वी हैं, जिन्होंने ग्रंथ लेखन का कार्य किया है। अनेक प्राचीन ग्रंथागारों व पाण्डुलिपि भण्डारों में कोई ऐसी पाण्डुलिपि प्राप्त नहीं हो सकी, जिसका लेखन किसी आर्यिका अथवा महिला के द्वारा किया गया हो अपितु प्राचीनकाल के समस्त ग्रंथों, पाण्डुलिपियों में किसी आचार्य अथवा पुरुष विद्वानों द्वारा ही लेखन का इतिहास प्राप्त होता है। ऐसे अनूठे इतिहास को भी पूज्य माताजी द्वारा अनायास ही रचा गया और उन्होंने अपने जीवनकाल में जिनेन्द्र भगवान के 1008 गुणों में अनुराग करते हुए सर्वप्रथम सन् 1955 म्हसवड़-महाराष्ट्र में जिनसहस्रनाम स्तोत्र की रचना करके अपनी लेखनी का शुभारंभ किया। पुनः इसके पश्चात् उनकी लेखनी से चारों अनुयोगों के अनेकानेक ग्रंथों का सूत्रपात हुआ। इनमें षट्खण्डागम ग्रंथ की 16 पुस्तकों पर संस्कृत भाषा में सिद्धान्तचिंतामणि टीकाओं का लेखन, अष्टसहस्री जैसे अत्यन्त कठिन न्याय ग्रंथ के भाग 1-2-3 की भाषा टीका, नियमसार प्राभृत ग्रंथ की संस्कृत-हिन्दी टीका का लेखन, मूलाचार भाग 1 व 2, ज्ञानामृत, कातंत्र रूपमाला व्याकरण, गोम्मटसार जीवकाण्ड सार, कर्मकाण्ड सार, रत्नकरण्डश्रावकाचार, द्रव्यसंग्रह आदि अनेक आगम ग्रंथों का लेखन/टीका/अनुवाद/संकलन आदि अत्यन्त सरल भाषा में स्वाध्यायी महानुभावों के लिए प्रदान किया। इसके साथ ही भक्तिमान श्रावकों के लिए इन्द्रध्वज मण्डल विधान, कल्पद्रुम मण्डल विधान, सिद्धचक्र मण्डल विधान, सर्वतोभद्र मण्डल विधान, त्रैलोक्य विधान, तेरहद्वीप विधान, जम्बूद्वीप मण्डल विधान, विश्वशांति महावीर विधान, तीनलोक विधान आदि विधानों की रचना तथा युवा व नव पीढ़ी के लिए बालविकास, जैन बाल भारती तथा आटे का मुर्गा, जीवनदान, भरत का भारत, परीक्षा-जैन रामायण, प्रतिज्ञा आदि जैसे उपन्यासों की रचना की। इस प्रकार ऐतिहासिक रूप में उनकी कलम से 275 से अधिक ग्रंथों का सृजन संस्कृति संरक्षण की दिशा में किया गया। इन ग्रंथों की प्रतिवर्ष लाखों-लाख प्रतियाँ प्रकाशित हो रही हैं, जो जैनधर्म की अद्भुत धर्मप्रभावना में महान सहकारी हैं।

(6) कालजयी रचनाओं की प्रदात्री–

कालजयी रचनाओं के रूप में पूज्य माताजी द्वारा लिखित नवदेवता पूजा आज देश के प्रत्येक जैन श्रावक द्वारा प्रतिदिन प्रातःकाल नित्य पूजा में की जाती है। इस पूजा से भक्तों को कितनी उत्कृष्ट भावविशुद्धि प्राप्त होती होगी इसकी कल्पना इसकी प्रसिद्धि से स्वयं की जा सकती है। साथ ही पूज्य माताजी द्वारा कन्नड़ भाषा में रचित ''बारह भावना'' भी ऐसी ही रचना सिद्ध हुई है, जो विगत 46 वर्षों से प्रत्येक दक्षिण प्रान्तीय जैन कन्नड़भाषियों के कंठ को पवित्र कर रही है और सभी को यह रचना कंठस्थ याद रहती है।

(7) तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास–

पूज्य माताजी ने सदैव अपने जीवन में जो लक्ष्य बनाया है, उसकी सफलता हेतु उन्होंने इतना अधिक प्रयास किया कि उस प्रत्येक लक्ष्य की पूर्ति समाज के लिए स्वर्णमयी बनकर महान उपकारी सिद्ध हो गई। उन्होंने साहित्य लेखन का लक्ष्य बनाया और वर्तमान में उनकी लेखनी से जैन दर्शन व सिद्धान्त के ऐसे अद्भुत लेखन कार्य सम्पन्न हुए, जिनको यह समाज युगों तक भुला नहीं सकता। इसी प्रकार उन्होंने अपने जीवन में तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों के विकास का लक्ष्य बनाया और वे इस लक्ष्य में इतनी सफल हुईं कि जिसकी कल्पना करके मानों विश्वास नहीं होता है कि यह केवल एक साध्वी की प्रेरणा का प्रतिफल है। भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप तीर्थ का निर्माण आज सारे देश में तीर्थों के माथे पर तिलक के समान जगमगाता है और इसे तीर्थशिरोमणि के रूप में समाज पूजती है। जम्बूद्वीप जैसे आदर्श तीर्थ की वृहद् कल्पना को संजोना और योजनाबद्ध तरीके के साथ उसके विकास का पल-पल स्वर्णिम बनाना, यह पूज्य माताजी की दूरदृष्टि, आगमनिष्ठता एवं जैनधर्म में विज्ञान के प्रति विशेष अभिरुचि को प्रदर्शित करता है।

तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास की शृँखला में ही आपकी दृष्टि अयोध्या जैसे शाश्वत तीर्थ पर पड़ी और वर्तमान में भगवान ऋषभदेव आदि 5 तीर्थंकरों की उस जन्मभूमि का नाम राम जन्मभूमि के साथ ही भगवान ऋषभदेव जन्मभूमि के नाम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गुंजायमान होता है। पुनः वहाँ प्रथम टोंक पर विशाल जिनमंदिर का निर्माण किया जाना एवं अनंतनाथ भगवान की टोंक पर नूतन जिनमंदिर का शिलान्यास होना भी आपका पुण्य प्रताप एवं लक्ष्य सिद्धि का सूचक है।

इसी प्रकार भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार के विकास हेतु पूज्य माताजी के मुख से उद्घोष किया जाना समाज के लिए विशेष जागृति का केन्द्र बना और मात्र 2600 वर्षों में देखते ही देखते जीर्ण-शीर्ण होती वर्तमान शासनपति भगवान महावीर स्वामी की जन्मभूमि का मात्र 22 वर्षों में ऐतिहासिक विकास कार्य सम्पन्न हुआ और

बिहार सरकार का पर्यटन विभाग भी वहाँ बने नंद्यावर्त महल जैसी प्रतिकृति से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका।

इसी शृँखला में वर्तमान में भगवान महावीर स्वामी की प्रथम देशनाभूमि के रूप में विख्यात राजगृही की प्राचीनता को भी पूज्य माताजी ने प्रकाशित करते हुए समाज को यह बताया कि राजगृही तीर्थभूमि को भगवान महावीर स्वामी से लगभग 12 लाख वर्ष पूर्व हुए 20वें तीर्थंकर भगवान मुनिसुव्रतनाथ की जन्मभूमि होने का भी गौरव प्राप्त है। इस विशेष निर्देश के साथ पूज्य माताजी की प्रेरणा पर राजगृही में मुनिसुव्रतनाथ की विशाल प्रतिमा से समन्वित सुन्दर कमल मंदिर भी निर्मापित किया गया।

आपके विशेष सान्निध्य एवं आशीर्वाद में अनेक वर्षों से अड़चनों को प्राप्त हो रही भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी-सारनाथ में भी भगवान की विशाल प्रतिमा का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव जनवरी 2005 में सानंद सम्पन्न हुआ और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जन्मभूमि सिंहपुरी-सारनाथ में गौरव के साथ जैनत्व का विकसित दृश्य समाज के बीच उपस्थित हो सका।

आगे, 9वें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि का विकास कार्य पूज्य माताजी की प्रेरणा पर सम्पन्न हुआ और प्राचीन मंदिर की ऐसी मूलवेदी जिसकी समस्त जिनप्रतिमाएं ही दुर्भाग्यशाली लोगों द्वारा अपहृत कर ली गई हो, ऐसी उस जीर्ण-शीर्णता को प्राप्त जन्मभूमि काकंदी (देवरिया-निकट गोरखपुर) उ.प्र. में 9 फुट उत्तुंग विशाल प्रतिमा की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करके भव्य जिनमंदिर व कीर्तिस्तंभ का निर्माण किया गया।

इस प्रकार नितप्रति ही पूज्य माताजी समाज को तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास की प्रेरणा प्रदान करती रहती हैं और निकट भविष्य में ही अन्य जन्मभूमियों का विकास भी सम्पन्न होगा, इस बात के लिए हम पूर्ण आशान्वित हैं।

(8) युगादि तीर्थ भूमि पर विकास का कदम–

युगादि तीर्थभूमि, जिसका गुणगान तो परे ही सही, जिसकी तरफ समाज के किसी व्यक्तित्व व साधुओं का ध्यान भी नहीं गया हो, ऐसी युग की प्रथम तीर्थभूमि प्रयाग-इलाहाबाद का विकासकार्य होना निश्चित ही पूज्य माताजी जैसी महान दृष्टि को धारने वाली विरली साधिका ही हो सकती हैं। इस युग के प्रथम तीर्थंकर जिन्होंने इस युग में जैनधर्म का प्रवर्तन किया, ऐसे भगवान श्री ऋषभदेव जी ने प्रयाग-इलाहाबाद में दीक्षा ली थी, प्रयाग में ही उन्होंने युग का प्रथम केशलोंच किया था, प्रयाग में ही उन्हें केवलज्ञान हुआ था, प्रयाग में ही उनका दिव्य समवसरण रचा गया था और प्रयाग में ही उनकी सुपुत्री ब्राह्मी और सुन्दरी को युग की प्रथम आर्यिका दीक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, ऐसी अत्यन्त प्राचीन एवं महान तीर्थभूमि का विकास पूज्य माताजी की प्रेरणा पर सम्पन्न हुआ और 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का निर्माण करके कैलाशपर्वत की भव्य प्रतिकृति, समवसरण जिनमंदिर, भगवान ऋषभदेव दीक्षा मंदिर आदि बनाये गये। पूज्य माताजी के जीवन का यह आदर्श चिंतन समाज में प्रत्येक श्रावक और साधुओं को प्राचीन तीर्थभूमियों की स्थिति और विकास की ओर दृष्टिपात करने के लिए विशेष प्रेरित करता है।

(9) आर्यिका दीक्षा स्वर्ण जयंती को पूर्ण करने वाली प्रथम साधिका–

बीसवीं-इक्कीसवीं सदी में समस्त दिगम्बर जैन साधु-साध्वियों के मध्य पूज्य माताजी ऐसी प्रथम साध्वी हुईं, जिन्होंने अपने मूल आर्यिका दीक्षा जीवन काल के स्वर्णिम 50 वर्षों को सर्वप्रथम पूरा किया। पूज्य माताजी ने सन् 1934 में टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र. में जन्म लिया पुनः सन् 1952 में गृहत्याग करके आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत व सप्तम प्रतिमा के व्रत धारण किए, सन् 1953 में महावीर (राज.) में आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से क्षुल्लिका दीक्षा प्राप्त की और सन् 1956 में माधोराजपुरा (जयपुरा) राज. में आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा के व्रतों को धारण किया। अतः सन् 2006 में आपकी आर्यिका दीक्षा का स्वर्ण जयंती महोत्सव देश में प्रथम बार विशाल स्तर पर आयोजित हुआ, जिसमें समाज के सभी गणमान्य महानुभावों तथा हजारों-हजार श्रद्धालुओं ने भाग लेकर महान पुण्य अर्जित किया।

(10) अपनों को सिखाया वैराग्य–

माँ मोहिनी से जन्म लेकर पुनः वैराग्य पथ की ओर स्वयं कदम बढ़ाना और फिर अपने साथ अन्य छोटे भाई-बहनों को भी मोक्षमार्ग के लिए प्रेरित करके उनका प्रवेश वैराग्य पथ पर कराना, इतना ही नहीं स्वयं अपनी जननी माँ को भी पूर्व में दी गई वचनबद्धता के साथ स्वयं केशलोंच करके पूज्य आचार्य श्री धर्मसागर महाराज द्वारा आर्यिका दीक्षा के संस्कारों से संस्कारित कराना आपके जीवन का महत्वपूर्ण आदर्श रहा है।

(11) प्रत्येक कार्य की हुई सिद्धि और प्रसिद्धी–

पूज्य माताजी के जीवन में बने किसी भी छोटे या बड़े लक्ष्य की सम्पूर्ति इतनी उचित योजना-संयोजना के साथ कार्यकुशलतापूर्वक सम्पन्न हुई कि प्रत्येक लक्ष्य की सिद्धि कार्य से पूर्व ही अवश्यंभावी सिद्ध हो गई और सफलतापूर्वक उनके हर लक्ष्य अत्यन्त प्रसिद्धि को प्राप्त हुए। उदाहरणार्थ-

जम्बूद्वीप ज्ञान ज्योति रथ प्रवर्तन, भगवान ऋषभदेव समवरण श्रीविहार रथ प्रवर्तन, भगवान महावीर ज्योति रथ प्रवर्तन, जम्बूद्वीप पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन, अनेक शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान, विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन, विभिन्न तीर्थों का निर्माण, साहित्य सृजन आदि।

(12) एक सूत्रीय अनुशासन–

पूज्य माताजी का एक और महत्वपूर्ण आदर्श गुण हैं- अनुशासनप्रियता। उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में शिष्यों को सदा अत्यन्त स्नेह, वात्सल्य देकर उनकी योग्यता का पूर्ण मूल्याकंन किया और अपने अनुशासन की डोर में सभी को बांधे रखा। इसी कारण से पूज्य माताजी का संघ सदैव एकसूत्रीय अनुशासन की डोर में बंधे हुए मोती माला की तरह अपनी आभा को सदा बिखेरता रहा है।

(13) अद्भुत जिनेन्द्रभक्ति–

पूज्य माताजी के हृदय में व्याप्त जिनेन्द्र भक्ति को आज श्रावक और साधु समाज में अत्यन्त आदर्श स्वरूप माना जाता है। उनके परिणामों की उत्कृष्ट भावविशुद्धि एवं मुखमण्डल से निकलता संयम का तेज पग-पग पर पूज्य माताजी की आत्मा में समाहित जिनमंदिर, जिनप्रतिमाओं और गुरुओं के प्रति अनन्य श्रद्धा एवं समर्पण के संस्कारों को प्रदर्शित करता है। उनकी त्याग, तपस्या, साधना एवं अद्भुत जिनेन्द्र भक्ति का यह तेज ही आने वाले समस्त श्रद्धालु भक्तों को आध्यात्मिक एवं लौकिक उन्नति प्रदान करने में विशेष वरदान स्वरूप बन जाता है। निश्चित ही ऐसी उज्ज्वल आत्माओं का दर्शन एवं उनकी सन्निधि हमारी आत्मा से असंख्य कर्मों की निर्जरा में निमित्त बनता होगा।

(14) कभी कोई दान प्रेरणा नहीं दी–

पूज्य माताजी का यह उत्कृष्ट आदर्श रहा कि उन्होंने अपने जीवन काल में चाहे जितने भी तीर्थों के निर्माण आदि की प्रेरणा प्रदान की, लेकिन कभी समाज के किसी भक्त को स्वयं दान देने के लिए प्रेरित नहीं किया। आपने जम्बूद्वीप निर्माण के प्रारंभ में ही अपने शिष्य ब्र. मोतीचंद जी से लिखित पत्र द्वारा यह नियम कराया था कि 'माताजी! आप केवल हमें रचना के विषय में बताएंगी, लेकिन कभी किसी कार्य की सम्पन्नता के लिए किसी से भी दान के लिए प्रेरणा नहीं देंगी।' पूज्य माताजी ने पूर्व में ही शिष्यों को कह दिया था कि यदि 'आप लोगों की हिम्मत होवे, तो कार्य को करना, वरना कभी मुझे किसी श्रावक को पैसे के लिए कहने की बात मत कहना'। इस प्रकार यह उनकी त्याग-तपस्या का अद्भुत चमत्कार रहा कि उनके द्वारा सोचे गये प्रत्येक कार्य निर्विघ्न सम्पन्न हुए और कभी उन्हें किसी भक्त से दान हेतु कहने की जरूरत नहीं पड़ी। इस नियम के निर्वहन में अवश्य ही उनके शिष्यगण ब्र. मोतीचंद जी (मोतीसागर जी), ब्र. रवीन्द्र कुमार जी (रवीन्द्रकीर्ति जी) व ब्र. माधुरी जी (आर्यिका चंदनामती माताजी) का महान योगदान रहा और उन्होंने गुरुभक्तिपूर्वक अपने कर्तव्यों का सदैव पालन करते हुए पूज्य माताजी की हर योजना को साकार करने में हर संभव प्रयास करके सफलता प्रदान कराई।

(15) संघ संचालन में कभी किसी संस्था के धन का उपयोग नहीं होने दिया–

पूज्य माताजी के अनेक नियमों में एक यह भी अखण्ड नियम सदैव संघ द्वारा पालन किया गया कि संस्थान में किसी भी भक्त द्वारा दिये गये दान की राशि का उपयोग संघ के संचालन में कभी नहीं किया गया। पूज्य माताजी के नियमानुसार सदैव किसी न किसी संघ भक्त श्रावकों द्वारा संघ का संचालन किया गया। लेकिन किसी संस्थान की कोई राशि कभी संघ के संचालन में खर्च नहीं की गई। इस नियम के पालन में संघस्थ शिष्यों के साथ ही महान गुरुभक्त श्रावकों का महनीय योगदान रहता है।

(16) वृहद् दृष्टिकोण–

पूज्य माताजी ने यथाशक्ति अपने धर्मसूर्य का प्रकाश जैन समाज के अतिरिक्त सम्पूर्ण जन समाज में भी फैलाने का उत्तम प्रयास किया और जैन चिंतन धारा से जैनेतर साधु समाज एवं भक्तों को भी प्रभावित करने में वे सफल हुईं। मुख्यरूप से इस दिशा में आपने भारत देश के सबसे बड़े अनुष्ठान के रूप में सम्पन्न होने वाले प्रति 12 वर्षीय महाकुंभ प्रयाग-इलाहाबाद के मेले में सन् 2001 में जैन व जैनेतर संत-महंतों का सम्मानजनक समन्वय स्थापित करने का सफल प्रयास किया तथा वहाँ विश्व हिन्दू परिषद द्वारा आयोजित की गई नवम धर्म संसद में आपके मुखारविन्द से लाखों श्रद्धालु भक्तों एवं संतों की उपस्थिति में जैनधर्म का उद्घोष गुंजायमान हुआ। इसी प्रकार हरिद्वार के अर्ध महाकुंभ मेले में अपने शिष्यों की उपस्थिति कराकर जैनधर्म की प्रभावना, भगवान ऋषभदेव एवं भगवान राम की जन्मभूमि अयोध्या में अनेक दिगज एवं ज्ञानी हिन्दू संतों के साथ जैनधर्म की परिचर्चा एवं प्रभावना व न्यूयार्क (अमेरिका) में विश्व शांति शिखर सम्मेलन में अपने शिष्य ब्र. रवीन्द्र कुमार जी को जैन धर्माचार्य के रूप में भेजकर जैनधर्म के सिद्धान्तों को विश्वव्यापी जन समाज में प्रचारित-प्रसारित करना पूज्य माताजी का सर्वोपरि आदर्श गुण रहा है।

आर्ष परम्परा की सम्पोषिका एवं संरक्षिका,

बीसवीं-इक्कीसवीं शताब्दी में जैनधर्म की महान उन्नायिका

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के प्रत्यक्ष जीवन दर्शन से संकलित

कतिपय लोक व्यवहारी, आवश्यक एवं महत्वपूर्ण शिक्षाएँ-प्रेरणाएँ

(1) तीर्थंकर भगवन्तों की पंचकल्याणक तिथियों पर विशेष आयोजनों का होना आवश्यक है–

उत्सव-महोत्सव की शृँखला में अपने-अपने स्थानीय जिनमंदिरों अथवा तीर्थक्षेत्रों पर जाकर 24 तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मकल्याणक आदि कल्याणक तिथियों पर विशेष आयोजन करना चाहिए। यदि किसी भी तीर्थंकर भगवान का जन्मकल्याणक उनकी साक्षात् जन्मभूमि में जाकर मनाया जाये, तो वह अति उत्तम फल प्रदायक सिद्ध होगा।

(2) पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में भगवान का 'नाथ' पूर्वक नामोल्लेख करना उचित है–

समाज में कहीं भी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित किये जाते हैं, तब विभिन्न कल्याणकों के समय तीर्थंकर भगवान के नामोच्चार में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहिए अर्थात् यदि भगवान महावीर का पंचकल्याणक हो रहा है तब जन्मकल्याणक के अवसर पर उनका नाम 'महावीर कुमार' उच्चारित नहीं करना चाहिए अपितु तीर्थंकर महावीर स्वामी का उद्बोधन दिया जाना चाहिए। इसी प्रकार दीक्षाकल्याणक के अवसर पर अनेकशः लोग भगवान के नाम के आगे 'सागर' का उच्चारण करने लगते हैं अतः चूँकि तीर्थंकर भगवान तो जन्म से ही तीनलोक के नाथ की उपमा से सुसज्जित होते हैं, जिनके गर्भ में आने के पहले ही सौधर्म आदि इन्द्रों तथा धनकुबेर द्वारा विशेष उत्सव सम्पन्न किया जाता है अतः किसी भी तीर्थंकर के दीक्षाकल्याणक में किसी सामान्य मुनि की तरह नाम में ''सागर'' लगाकर उनका उद्बोधन करना उचित नहीं है अतः भगवान का नाम ज्यों का त्यों ही दीक्षाकल्याणक के अवसर पर उच्चारित करना चाहिए।

(3) पंचमकाल में भगवान का अभिषेक, पूजन, जाप्य, स्वाध्याय आदि कर्म निर्जरा के प्रबल साधन हैं–

इस पंचमकाल में ध्यान साधना करके अपने मन को एकाग्र करना अत्यन्त कठिन होता है अतः ध्यानाग्नि से कर्मों की निर्जरा करने के प्रयास करना उचित है लेकिन बहुलता से सभी को भगवान की पूजा भक्ति, अभिषेक, जाप्यानुष्ठान, स्वाध्याय, स्तोत्र आदि का पाठ, गुरु भक्ति जैसे कार्यों में सदैव निमग्न रहकर शुभोपयोग में अपना समय व्यतीत करना चाहिए, यह इस पंचमकाल में आत्मा को पवित्र करके उत्तम गति दिलाने में मुख्य कारण है।

(4) सदैव निर्धारित लक्ष्य पर केन्द्रित रहना उन्नति एवं सफलता का सूचक है–

एक लक्ष्य की पूर्णता होने के पहले ही दूसरे लक्ष्य की योजनाएँ निर्धारित कर ली जाना चाहिए। इससे व्यक्ति का मन-मस्तिष्क सदैव उचित कार्य में निर्धारित लक्ष्य पर केन्द्रित रहता है अतः स्वयं की उन्नति के साथ परिवार, समाज, देश व संस्कृति की उन्नति में भी हम अपना कुछ सहयोग प्रदान कर पाते हैं।

(5) रात्रि सोने से पहले अत्यन्त आवश्यक है शुभोपयोग–

जैनधर्म में निहित कर्म सिद्धान्त के अनुसार आत्मा के साथ कर्मों का आस्रव सदा चला करता है। अतः विशेषरूप से प्रत्येक व्यक्ति को रात्रि में सोते समय सदैव चिंतन के द्वारा तीर्थों-जिनमंदिरों की वंदना, गुरुओं का दर्शन तथा भगवान की भक्ति का स्मरण करना चाहिए, जिससे कि नींद में भी सोते समय शुभ कर्मों का आस्रव हो सके, क्योंकि जैसा चिंतन सोने से पूर्व होता है, वैसे ही स्वप्नों का दर्शन मन के अंदर सुप्त अवस्था में भी देखा जाता है।

(6) बिना सोचे कुछ करना नहीं और इतना भी नहीं सोचना कि कुछ कर ही न पाएँ–

किसी भी कार्य को कभी बिना सोचे नहीं करना चाहिए लेकिन उस कार्य को करने के लिए इतना भी नहीं सोचना चाहिए कि वह कार्य ही प्रारंभ न हो सके। अर्थात् थोड़ा सोच-विचार करके कार्य को प्रारंभ कर देना चाहिए।

(7) मंदिर का मूल आधार है 'मूर्ति', जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा तीर्थ/ मंदिर विकास से पूर्व की जा सकती है–

अक्सर ऐसा होता है कि समाज में जिनमंदिर का व्यवस्थित निर्माण करने के उपरांत ही वहाँ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सम्पन्न कराई जाती है। इस विषय में मेरी मान्यता यह रहती है कि भगवान की मूर्ति मंदिर अथवा तीर्थ स्थल पर आने के बाद सर्वप्रथम उस मूर्ति को यथोचित स्थान पर विराजमान करने हेतु व्यवस्था करके उस जिनबिम्ब का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव कर दिया जाना चाहिए। पुनः मंदिर के निर्माण में चाहे जितना समय लगे, आगे उसका कार्य किया जाना चाहिए। इससे भक्तों को तीर्थ/मंदिर की पूज्यता का लाभ मिलना प्रारंभ से ही शुरू हो जाता है। अर्थात् मूर्ति को अधिक दिन अप्रतिष्ठित नहीं रखना चाहिए।

(8) सैद्धान्तिक विषयों पर कभी न करें समझौता–

अपने सच्चे धर्म, शास्त्र सम्मत मान्यता, परम्परा व सिद्धान्तों में जीवन के किसी भी मोड़ पर समझौता नहीं करना चाहिए। सिद्धान्तवादी व्यक्तित्व की सदैव समाज में प्रतिष्ठा होती है और वह समाज के लिए विशेष प्रेरणादायी बनता है।

(9) बहुत अच्छा करने की महत्वाकांक्षा में समय पर छोटे रूप में भी कार्य न हो पावे, यह उचित नहीं है–

किसी भी कार्य को बहुत बड़ा और बहुत अच्छा करने का लक्ष्य बनाना उचित है, लेकिन इस लक्ष्य के साथ ऐसा न हो जाये कि हम वह कार्य छोटे रूप में भी न कर सकें और समय व्यतीत हो जाये, इस बात का सदैव ध्यान रखना चाहिए। इसलिए ज्यादा बड़े कार्य की अपेक्षा छोटे-छोटे कार्यों से ही अपना कार्य शुरू कर देना चाहिए क्योंकि समय पर सम्पन्न हुआ कार्य अधिक महत्वपूर्ण होता है।

(10) तीर्थंकर निर्वाणभूमियों के समान तीर्थंकर जन्मभूमियाँ भी महान पूज्य हैं–

जहाँ से सम्पूर्ण कर्मों का नाश करके महान आत्माओं ने मोक्ष को प्राप्त किया, उन्हें सिद्धक्षेत्र या निर्वाणक्षेत्र कहते हैं। वे तीर्थ अत्यन्त महान होते हैं, लेकिन उन महान आत्माओं ने जिस भूमि पर जन्म लिया, वह जन्मभूमि भी उतनी ही पूज्यनीय होती है जितनी कोई निर्वाणभूमि। क्योंकि जन्म के बिना निर्वाण संभव नहीं हो सकता अतः तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियाँ भी महान पूज्य हैं, इनकी एक नहीं अनेक बार वंदना करना अपने जीवन का प्रमुख लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। प्रायः सभी तीर्थंकरों ने अपनी जन्मभूमि में दीक्षा ली और जन्मभूमि में ही केवलज्ञान प्राप्त किया है अतः वहीं समवसरण की प्रथम रचना हुई हैं।

(11) सरस्वती पुत्रों का सम्मान आवश्यक है–

समाज में आर्ष परम्परानुयायी सरस्वती पुत्रों का सदैव सम्मान किया जाना चाहिए क्योंकि विद्वानों ने सदा ही समाज की रीढ़ बनकर धर्म की प्रभावना, संस्कृति का संरक्षण और सिद्धान्तों के प्रति कटिबद्धता का धर्म निभाया है। कुछ समय पहले ही जब प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के समय में समस्त दिगम्बर जैन पिच्छीधारियों की कुल संख्या 100 भी नहीं थी, तब ऐसे समय में एवं उससे पूर्व के समय में निश्चित ही विद्वानों ने महान प्राचीन ग्रंथों का लेखन, टीकाकरण, अनुवाद आदि कार्य सम्पन्न करके अपनी आर्ष परम्परा को जीवंत रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और आज भी इस दिशा में तथा विधिविधान, प्रतिष्ठा आदि के क्षेत्र में विद्वानों की भूमिका परम आवश्यक होती है। अतः समाज के लिए सरस्वती पुत्रों का योगदान एवं उनकी भूमिका सदैव सम्मान की पात्र होना चाहिए।

(12) आत्म साधना हेतु स्वास्थ्य के प्रति भी सजग रहना आवश्यक है–

निश्चित ही हमारी यह पुद्गल काया अजीव द्रव्य है और तीनों लोकों का सम्पूर्ण सार आत्मा में ही केन्द्रित होता है लेकिन मनुष्य जीवन को प्राप्त करके आत्मा को परमात्मा के मार्ग पर लगाने में इस पुद्गल काया का उपकार कभी भूलना नहीं चाहिए। क्योंकि शरीर ही आत्मा को मोक्ष तक की यात्रा कराने का प्रमुख साधन है अतः इस जीवन में स्वास्थ्य के प्रति सदैव सजग एवं अनुकूल रहने का सत्प्रयास भी रखना चाहिए।

(13) सदा समय की कीमत अवश्य करना चाहिए–

समय बीतते ही बचपन से जवानी और जवानी से बुढ़ापा कब आ जाता है, इस बात का यथार्थ ज्ञान व्यक्ति को अपनी अकर्मण्य स्थिति में पता लगता है अतः जब हमारा बल, पौरुष एवं इन्द्रियाँ भली प्रकार कार्यरत हों, तभी से समय की

कीमत करना सीखकर प्रतिक्षण धर्म मार्ग का अनुसरण करते हुए अपने उचित कर्तव्यों के निर्वहन का दृढ़ लक्ष्य मन में रखना चाहिए।

(14) बीते को भूल जाना और कुछ पाने के लिए आगामी अवसर खो नहीं देना–

जीवन के वास्तविक लक्ष्य में बीते समय में प्राप्त सफलता या विफलता महत्वपूर्ण नहीं होती अपितु आगामी पल अर्थात् भविष्य में क्या उचित किया जा सकता है, उसे सोचकर आगे बढ़ना चाहिए। ''जो बीत गया, सो बीत जाने दो, आगे की सुध रखियो''। यह सोचकर भविष्य में कुछ अच्छा करने का पुरुषार्थ करना चाहिए।

(15) गतिमान रहना जीवन का लक्ष्य होना चाहिए–

चलते रहना जीवन का प्राथमिक लक्ष्य होना चाहिए अर्थात् सदैव अपने मन, वचन, काय की स्थिति को गतिमान रखते हुए नये-नये लक्ष्यों की ओर कितनी भी धीमी गति अथवा तेज गति से, लेकिन सदा बढ़ते रहना चाहिए। एक घटक पर स्थिर हो जाना, हमें जीवन की अनेक ऊँचाईयों एवं उपलब्धियों से वंचित कर सकता है।

(16) कार्यकर्ता पर अविश्वास और अतिविश्वास, दोनों ही उचित नहीं हैं–

किसी भी कार्य को सम्पन्न करने वाले योग्य कार्यकर्ता की योग्यता पर अविश्वास और अतिविश्वास दोनों ही उचित नहीं है। अर्थात् योग्यतानुसार कार्य की जिम्मेदारी सौंपने के उपरांत उस कार्यकर्ता पर विश्वास करके कार्य के प्रति उसका उत्साह वृद्धिंगत करना चाहिए। लेकिन किसी कार्यकर्ता को अति विश्वास करके पूरी बागडोर छोड़ भी नहीं देना चाहिए।

(17) संस्कृति, समाज व परिवार के उद्धारक पूर्ववर्ती व्यक्तित्वों एवं गुरु को कभी न भूलें–

आर्ष परम्परा का संरक्षण करने वाले पूर्वाचार्यों, पूर्ववर्ती विद्वानों, समाजसेवियों एवं कार्यकर्ताओं के प्रति सदैव सम्मान एवं उपकार की भावनाएं समाज में व्याप्त होना चाहिए और विशेषरूप से अपने परम्परा गुरु का गुणानुवाद एवं उनकी कीर्ति को दिग्दिगंत व्यापी करने का सत्प्रयास करना चाहिए।

(18) अपने धर्म एवं आगम परम्परा के लिए सदा समर्पित रहना आवश्यक है–

अपने अहिंसा परमोधर्मः और आगम परम्परा के प्रति सदैव समर्पण भाव रखकर उसके सम्पोषण, विकास एवं उन्नति में अग्रिम भूमिका निभाना चाहिए।

(19) धर्म की अभिवृद्धि हेतु अन्य भाषाओं का प्रयोग भी उचित है–

भाषाओं की महत्ता के आधार पर सदा धर्म, गुरु एवं शास्त्र के वचन आवश्यकतानुसार विभिन्न भाषाओं में अनुवादित कर उनका प्रचार-प्रसार करना चाहिए। विशेषरूप से वर्तमान में अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में विख्यात आंग्ल (अंग्रेजी) भाषा का ज्ञानार्जन एवं जैनधर्म की शिक्षाओं, सिद्धान्तों एवं विभिन्न ग्रंथों का अनुवाद अंग्रेजी भाषा में करके विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

(20) मन में स्व प्रभावना का लक्ष्य कभी न रक्खें–

धर्म, गुरु एवं संस्कृति के प्रति प्रत्येक व्यक्ति के भावों में इतना समर्पण होना चाहिए कि कभी मन में स्व-अपनी प्रभावना के भाव उत्पन्न न होवे, अपितु सदा धर्म, गुरु और संस्कृति के प्रति कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए उन्हीं की प्रभावना में अपना जीवन न्यौछावर करें।

(21) धर्म प्रभावना हेतु आधुनिक उपकरणों का उपयोग भी उचित है–

धर्म की प्रभावना यथासंभव करने का प्रयास रखना चाहिए। इसके लिए वर्तमान में उपलब्ध आधुनिक उपकरणों में टी.वी. चैनल, वी.सी.डी., इंटरनेट, कम्प्यूटर आदि के माध्यम से धर्मप्रभावना का यथोचित प्रयास करना चाहिए।

(22) तर्क विवेचना हेतु प्रथमानुयोग के सच्चे उदाहरणों का उपयोग ही सर्वोचित है–

विद्वानों को अपने प्रवचनों-संभाषणों में किसी तर्क को समझाने हेतु समाज के समक्ष आगम ग्रंथों के आधार पर प्रथमानुयोग के वास्तविक उदाहरणों का उपयोग करना चाहिए। काल्पनिक एवं मिथ्या उदाहरणों से धर्म को समझाने का प्रयास करना उचित नहीं है।

(23) आत्म विकास के लिए आवश्यक है चारों अनुयोगों की ज्ञान प्राप्ति–

यद्यपि समयसार आत्मोत्थान का अंतिम सत्य है लेकिन सम्पूर्ण जैन वाङ्मय का ज्ञान प्राप्त करना और नियमित उस ज्ञान के आधार पर अपने जीवन की चर्याओं को निर्धारित करना व अपने आत्मप्रकाश को विकसित करते रहने का प्रयास परम आवश्यक है। इसके लिए चारों अनुयोगों के ग्रंथों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए।

(24) शुभोपयोग और ध्यान-चिंतन के लिए परम आवश्यक है जैन करणानुयोग का ज्ञान–

दैनिक स्वाध्याय में करणानुयोग के ग्रंथों का अध्ययन आत्म विकास तथा मनन-चिंतन के लिए अत्यन्त सदुपयोगी होता है। इस संदर्भ में जैन भूगोल का अध्ययन करके नियमित ध्यानपूर्वक मध्यलोक में जम्बूद्वीप आदि के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालयों, अष्टान्हिका में नंदीश्वर द्वीप के शाश्वत जिनमंदिरों, ढ़ाई द्वीप के पंचमेरु पर्वतों व तीनलोक के समस्त जिनबिम्बों का दर्शन करना चाहिए, इससे असंख्य कर्मों की निर्जरा होती है और अपनी आत्मा में चिंतन का अद्भुत विषय प्राप्त होता है। इसी प्रकार निगोद, नरक, मध्यलोक की संरचना, ज्योतिर्लोक, स्वर्ग, नव ग्रैवेयक, नवअनुदिश, पंच अनुत्तर आदि की व्यवस्थाएँ व साक्षात् मोक्ष का स्थान अर्थात् सिद्धशिला आदि के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त करने से मनुष्य जीवन में उचित कर्म करने की प्रेरणा प्राप्त करके उच्च गति में जाने का भाव बंधता है।

(25) पढ़कर भूल जाना भी अच्छा है, न पढ़ने की अपेक्षा–

मेरी समस्त शिष्यों को यह विशेष प्रेरणा रहती है कि स्वाध्याय अथवा अध्ययन किया हुआ विषय पढ़कर यदि भूल भी गये, तो भी वह व्यर्थ नहीं है, बजाय कि भूलने के भय से पढ़ाई ही नहीं की जाये। वर्तमान में पढ़ा हुआ जैन वाङ्मय का एक भी अक्षर भले ही इस भव में हमारी स्मृति से बाहर हो जाये, लेकिन कभी न कभी किसी अन्य भव में विकट परिस्थितियों का सामना होने पर कदाचित् पुण्योदय स्वरूप वह पढ़ा हुआ ज्ञान जातिस्मरण बनकर हमें संसार भ्रमण से मुक्ति दिलाने में सहायक बन सकता है। अतः विषय कितना भी कठिन अथवा गूढ़ हो, जो समझ में आवे या न आवे, उसको भी पढ़ना अवश्य चाहिए, क्योंकि वर्तमान में हमारा यह कृत्य कर्मनिर्जरा में तो अत्यन्त सहायक होता ही है और अन्य भवों में यह ज्ञानोदय कभी भी फलदायी सिद्ध होता ही है।

(26) फुर्सत की अपेक्षा सदा व्यस्तता का इंतजार होना चाहिए–

काम करता आदमी ही भला लगता है, फुर्सत में बैठा व्यक्ति न किसी को अच्छा लगता है और न वह स्वयं उन्नति की दिशा प्राप्त कर सकता है अतः काम करने से भागने का प्रयास कभी उन्नतिदायक नहीं हो सकता है। अतः कोई भी काम करने से कभी बचे नहीं। व्यस्तता हमारे मानसिक एवं शारीरिक संतुलन व विकास के लिए भी परम आवश्यक है।

(27) गृह के मुख्य द्वार पर अवश्य अंकित होवे णमोकार महामंत्र–

णमोकार महामंत्र अत्यन्त शक्तिशाली मंत्र है। इस मंत्र से चौरासी लाख अन्य मंत्रों की उत्पत्ति बतलाई गई है अतः जितने भी जैन महानुभाव हैं, उन सबको अपने घर के मुख्य द्वार पर, शयन कक्ष के मुख्य द्वार पर या अन्य किसी भी आवश्यक स्थान पर अर्थात् दूकान, ऑफिस, फैक्ट्री आदि के मुख्य द्वार पर णमोकार महामंत्र अवश्य लिखना चाहिए। यह रक्षा कवच मंत्र सदैव किसी भी आपत्ति-विपत्ति में हमें समाधान प्रदान करने की मदद करता है।

(28) व्यक्तिगत, सामाजिक निर्माण कार्य में जैन चिन्हों का उपयोग अवश्य करें–

अपने घरों, बंगलों, ऑफिस आदि के निर्माण में प्रत्येक जैन व्यक्ति को सदैव खिड़की, दरवाजे, रोशनदान आदि स्थानों पर किसी भी जैन चिन्ह की डिजाइन से समन्वित जाली आदि लगाना चाहिए। जैसे-लकड़ी के दरवाजों पर डिजाइन अथवा खिड़की, रोशनदान में लगने वाले लोहे के जाल में तीनलोक का नक्शा, सुमेरु का नक्शा, स्वस्तिक चिन्ह, भरतक्षेत्र-आर्यखण्ड का नक्शा आदि जैन चिन्ह बनाये जा सकते हैं। दीवारों पर भी इस प्रकार के जैन चिन्हों की कारविंग की जा सकती है।

(29) किसी भी निर्माण कार्य के शुभारंभ में विधि-विधान एवं यंत्र स्थापना अवश्य करें–

मंदिर, मकान, ऑफिस आदि किसी भी निर्माण के समय विधानाचार्य को बुलाकर जैन विधि-विधान अवश्य कराना चाहिए। विशेषरूप से किसी भी नये निर्माण की नींव अथवा नई दीवार, छत आदि के शुभारंभ में जैन रक्षा यंत्र अवश्य

रखना चाहिए। यह आध्यात्मिक शक्ति प्रदायक तथा भविष्य में जैनत्व के संरक्षण के हित में रहता है और सभी की रक्षा में निमित्त बनता है।

(30) पिच्छीधारी दिगम्बर जैन मुद्रा का सदा सम्मान करें–

मंदिर में, सड़क पर अथवा किसी धर्मशाला में कोई भी पिच्छीधारी साधु-साध्वी दिखने पर उनके प्रति सदैव सम्मान से माथा झुकाकर यथायोग्य विनयपूर्वक नमन करना चाहिए। क्योंकि मुद्रा सदैव पूज्य होती है।

(31) आवश्यक है बुराई को गौण करना और अच्छाई को प्रकट करना–

जिस प्रकार बुरे समय को भूलकर अच्छा समय याद रखा जाता है, उसी प्रकार किसी भी व्यक्ति की बुराई को भूलकर सदा उसकी अच्छाई याद रखना चाहिए। ऐसा करने से सकारात्मक कार्यशक्ति बढ़ती है और मानसिक रूप से हमें किसी भी कार्य को प्रगति प्रदान करने में कोई अवरोध नहीं आता है।

(32) व्यक्ति विशेष की प्रतिभा का सदा मूल्याकंन करना गुणग्राहकता है–

प्रतिभा का सदैव मूल्याकंन किया जाना चाहिए, फिर प्रतिभा चाहे किसी बालक में हो, युवा में हो या किसी भी अन्य वर्ग में। क्योंकि दूसरों की उत्कृष्ट प्रतिभा को जानने, उसकी अनुमोदना करने एवं उसका यथायोग्य सम्मान करने से स्वतः हमें अपनी प्रतिभा विकसित करने का बहुमूल्य अवसर प्राप्त होता है। गुणग्राहकता का यह गुण प्रत्येक व्यक्ति में होना आवश्यक है।

(33) पाश्चात्य नहीं भारतीय संस्कृति के अनुसार मनाएँ जन्मदिवस आदि विशेष अवसर–

लौकिक व्यवहार में बच्चों के जन्मदिन अथवा शादी की सालगिरह आदि को तिथि से मनाना चाहिए, न कि तारीखों से। पुनः इन अवसरों पर केक काटना, मोमबत्ती बुझाना, गुब्बारे फोड़ना जैसी पाश्चात्य परम्परा (काटना, बुझाना, फोड़ना) में कभी विश्वास न रखकर भारतीय संस्कृति पर आधारित लड्डू (मिठाई) बनाना, खाना एवं बाँटना, भगवान के समक्ष दीप समूह को प्रज्ज्वलित करके आरती करना तथा रंग-बिरंगे गुब्बारे फुलाकर उन्हें नील गगन में छोड़ना जैसे शुभ लक्षणी एवं हर्ष प्रदायी कार्य करना चाहिए, ऐसा करना हमारे व्यक्तित्व की धनात्मक ऊर्जा व चिंतन को प्रदर्शित करता है। प्रसन्नता के जितने दिवस अथवा वर्ष बीत गये, उसकी गिनती में एक बढ़ाकर उतने दीपों से भगवान की मंगल आरती करना चाहिए तथा उतने ही फल चढ़ाना चाहिए।

(34) धार्मिक मंच पर नाटक मंचन हेतु एक ही लिंगधारी पात्रों का चयन करना उचित है–

किसी भी धार्मिक मंच पर नाटक के मंचन के दौरान यदि पति-पत्नी का रोल करना होवे, तो सदा एक ही लिंग धारी (लड़का-लड़का या लड़की-लड़की) पात्रों को पति-पत्नी, स्त्री-पुरुष आदि का रोल करना चाहिए। अर्थात् अपनी-अपनी वेशभूषा में दोनों ही तरह के पात्र या तो स्त्री ही होवें या पुरुष ही होवें। क्योंकि किसी स्त्री-पुरुष को पति-पत्नी बना देने से दोष लगता है। यदि सच्चे पति-पत्नी को पति-पत्नी बनाते हैं, तो अति उत्तम है।

(35) अपने बच्चों के नामकरण हेतु अच्छे अर्थ वाले शब्दों का चयन आवश्यक है–

बच्चों के जन्मोपरांत नामकरण करते समय उनके नाम देश के महापुरुषों, तीर्थंकर भगवन्तों अथवा किसी उच्च अर्थ वाले शब्दों/नामों का चयन करना चाहिए। क्योंकि किसी बच्चे का नाम 'राम' रखने पर निश्चित ही उसके जीवन में उसे सदा राम का चरित्र याद रखने की इच्छा उत्पन्न होगी और स्वतः ही उसे अपने कार्यकलाप भी सदा उसी अनुरूप करने की प्रेरणा प्राप्त होती रहेगी।

(36) अंतर्जातीय, विजातीय एवं विधवा विवाह या पुनर्विवाह न करें, यह आगम विरुद्ध है।

जैन समाज में प्राचीनकाल से 84 जातियाँ प्रचलित हैं। उनमें जन्म लेने वाले सभी जाति के लोगों को अपनी-अपनी जैन जाति में विवाह करना चाहिए। इससे सज्जातित्व की रक्षा होती है। इसके अतिरिक्त कोई भी जैन द्वारा किसी भी जैन जाति के लड़के-लड़कियों के साथ विवाह करना अन्तर्जातीय विवाह कहलाता है। जैन से अतिरिक्त जातियों में विवाह विजातीय विवाह है। पति से तलाक लेकर स्त्री द्वारा दूसरे पुरुष के साथ विवाह करना पुनर्विवाह है तथा विधवा नारी द्वारा दूसरा विवाह करना विधवा विवाह कहलाता है। ये प्राचीन आगम परम्परा के विरुद्ध हैं अतः सज्जातित्व की रक्षा करते हुए

ऐसे विवाह संबंध नहीं करना चाहिए, ताकि भविष्य में अपनी कुल-परम्परा में तीर्थंकर आदि महापुरुषों का जन्म होता रहे और सतत मोक्ष परम्परा चलती रहे।

(37) राजनीति के साथ धर्मनीति उचित है लेकिन धर्मनीति के साथ राजनीति अनुचित है–

राजनीति सदैव धर्मनीति से संयुक्त होना चाहिए ताकि कूटनीति न बनने पाए। लेकिन धर्मनीति सदा राजनीति से पृथक् ही होना चाहिए। अन्यथा धर्मनीति विकृत हो जाएगी।

(38) राजनीति में धर्मनीति के समावेश हेतु धर्म मंच पर राजनेताओं का आगमन आवश्यक है–

धार्मिक मंचों पर राजनेताओं को आमंत्रित करना अपने धर्म की प्रभावना का प्रमुख अंग है। राजनेताओं के आगमन पर हम अपने मंच से अपने धर्म की शिक्षा उन राजपुरुषों तक पहुँचा सकते हैं, जिनके प्रयास से शासन-प्रशासन संचालित होता है। हमारी धर्म शिक्षा का एक अंश भी यदि उनकी राजनीति में घुल जाये, तो निश्चित ही राजनीति में धर्मनीति के इस समावेश से नागरिकों, समाज एवं देश का न्यायपूर्ण उत्थान संभव हो सकता है। अतः धार्मिक क्षेत्र में राजनेताओं का आगमन निरर्थक नहीं मानकर सार्थक मानना चाहिए।

(39) शिक्षाविदों का सदा बहुमान करें–

समाज में सदा शिक्षाविदों–डॉक्टर, प्रोफेसर और कुलपति आदि का उचित सम्मान किया जाना चाहिए। क्योंकि विकास के विरले चिंतन की धाराएं इन्हीं के मन-मस्तिष्क में बहती हैं।

(40) धर्म क्षेत्र में आधुनिक शोध की मान्यता नव पीढ़ी के लिए भ्रामक सिद्ध हो सकती है–

वर्तमान में देखा जा रहा है कि आधुनिक शोधकर्ताओं द्वारा प्राचीन सदियों में महान जैनाचार्यों द्वारा लिखित जैन आगम में उल्लेखित साक्ष्यों पर पृथक् दृष्टिकोण से शोध करके नई-नई अवधारणाएँ एवं निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाता है, यह कदापि उचित नहीं है। अतः शोध करने वाले शोधार्थियों को प्रस्तावित शोध ग्रंथ का सूक्ष्मता से अध्ययन करके ही लेखनी चलानी चाहिए। जैसे-कुछ लोग ऋषभ जन्मभूमि, राम जन्मभूमि अयोध्या को थाईलैण्ड में कह देते हैं आदि।

(41) धार्मिक स्थल-तीर्थ-मंदिर की प्राचीन मान्यताओं को कभी न बदलें–

किसी भी धार्मिक स्थल/तीर्थ/मंदिर की परम्पराओं व मान्यताओं को अपनी मान्यतानुरूप बदलना अथवा बदलने का प्रयास करना अनुचित है। प्रत्येक तीर्थ पर प्राचीनकाल से चली आ रही मान्यता अर्थात् बीसपंथ, तेरहपंथ परम्परा सभी को ग्राह्य होना चाहिए।

(42) संस्कृति संरक्षण हेतु तीर्थों पर लगे शिलालेखों को कभी न हटावें–

किसी भी तीर्थ पर लगे प्राचीन शिलालेखों को हटाने का प्रयास नहीं करना चाहिए। यदि तीर्थ का जीर्णोद्धार भी किया जाये, तब भी उन शिलालेखों को सुरक्षित निकालकर पुनः जीर्णोद्धार के उपरांत यथास्थान लगा देना चाहिए, यही प्राचीन संस्कृति के संरक्षण हेतु हमारा परम कर्तव्य है।

(43) मूल सिद्धान्तों की रक्षा करते हुए धर्मप्रभावना करना चाहिए–

अपने जीवन में कतिपय सिद्धान्तों के प्रति सदैव कड़ा अनुशासन रखना चाहिए। पुनः उस अनुशासन की सीमा से स्वयं बंधकर रहना चाहिए और अन्यों की भूमिका भी उसी के अनुकूल स्वीकार्य होना चाहिए।

(44) शासन जयंती पर्व अवश्य मनाएँ–

प्रत्येक तीर्थंकर भगवन्तों के केवलज्ञानकल्याणक की तिथि को शासन जयंती पर्व के रूप में उद्घोषित करके उल्लासपूर्वक उसका उत्सव-महोत्सव समाज में अवश्य करना चाहिए। विशेषरूप से प्रतिवर्ष फाल्गुन कृ. ग्यारस को युग का प्रथम दिव्यध्वनि दिवस मनाते हुए भगवान ऋषभदेव शासन जयंती पर्व, धर्मविच्छेद काल के उपरांत पुनः उदित हुए धर्म सूर्य के अविच्छिन्न रहने वाले पौष शुक्ला दशमी को भगवान शांतिनाथ शासन जयंती पर्व तथा वर्तमान शासनपति अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का दिव्यध्वनि दिवस श्रावण कृ. एकम् को अवश्य मनाना चाहिए।

(45) रात्रि विश्राम की अवस्थिति में आवश्यक परिग्रह छोड़कर अन्य परिग्रहों का त्याग करना उचित है–

धार्मिक दृष्टिकोण से कोई व्यक्ति किसी कार्य विशेष को करने अथवा नहीं करने के लिए जब कटिबद्ध हो जाता है, तब जैनधर्म के कर्म सिद्धान्त के अनुसार उसके संयम के प्रति पुण्य योग का बंध प्रारंभ हो जाता है। अतः बिना किसी प्रयास के अत्यन्त सरलतापूर्वक एक विशेष नियम का पालन प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है, वह है-रात्रि विश्राम की अवस्थिति में आवश्यक अर्थात् अपने ओढ़ने-बिछाने के परिग्रह को छोड़कर अन्य समस्त परिग्रह का त्याग कर देना। अर्थात् रात्रि सोने के उपरांत तथा उठने से पहले तक के लिए आवश्यक परिग्रह के अलावा अन्य सभी परिग्रह तथा चतुर्विध आहार का भी नियमपूर्वक त्याग कर देना। इस नियमपूर्वक अनायास किसी घटना-दुर्घटना में प्राण निकलने पर समाधिपूर्वक मरण से उच्च गति प्राप्त होती है।

(46) बच्चों में प्रारंभ से सोने व उठने के समय नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ने के संस्कार अवश्य डालें–

संसारी प्राणी के सदा ही आर्तध्यान और रौद्रध्यान लगा रहता है, लेकिन रात्रि सोते समय एवं प्रातःकाल उठते समय 9 बार णमोकार महामंत्र पढ़ने से सम्पूर्ण रात्रि एवं सम्पूर्ण दिवस दोनों ही मांगलिक होते हैं तथा मन में सदा शुभ भावों का परिणमन होता है। इससे बुरे कर्मों का आस्रव कम होता है, व्यक्तित्व भी महान बनता है तथा अनिष्ट की संभावना भी समाप्त होती हैं अतः प्रत्येक माता-पिता को अपने घर में बच्चों को प्रारंभ से ही रात्रि सोने व सुबह उठने के समय 9 बार णमोकार महामंत्र पढ़ने के संस्कार अवश्य देना चाहिए।

(47) रत्नत्रयधारी एवं मोक्षमार्गी जीवों के लिए यह पंचमकाल, चतुर्थ काल की अपेक्षा भी श्रेयस्कर है–

पंचमकाल में यद्यपि मोक्ष नहीं जा सकते, लेकिन यह पंचमकाल हम सबके लिए चतुर्थकाल से भी अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि उस चतुर्थ काल के आने पर हम कुछ नहीं कर पाए होंगे, तभी आज तक इस संसार में भटक रहे हैं अतः वर्तमान में इस पंचमकाल में जिन्होंने संयम को धारण कर लिया है तथा सम्यग्दर्शन आदि रत्नत्रय को प्राप्त कर लिया है, ऐसे मोक्षमार्गी जीवों के लिए चतुर्थ काल की अपेक्षा यह पंचमकाल भी अत्यन्त श्रेयस्कर है अतः हमें इस पंचमकाल में ही भगवान की अत्यधिक भक्ति करके मोक्ष प्राप्ति का पुरुषार्थ अवश्य करते रहना चाहिए।

(48) शरीर को नौकर मानकर इससे अधिक से अधिक काम लेना चाहिए–

यह शरीर नाशवान है अंत में एक दिन माटी में ही मिल जायेगा अतः जितना अधिक से अधिक कठोर परिश्रम करने की आपमें सामर्थ्य है, उतना कार्य इस शरीर को नौकर मानकर इससे लेना चाहिए। आवश्यक राशन-पानी (भोजन) देकर सदा ही इस शरीर का उपयोग धर्म आदि अच्छे पुरुषार्थ के लिए करते रहना चाहिए।

(49) पठितव्यं खलु पठितव्यं अग्रे अग्रे स्पष्टं भविष्यति–

जैन शास्त्रों का कोई विषय समझ में नहीं आने पर भी उसे एक बार पूरा अवश्य पढ़ना चाहिए। पढ़ने के उपरांत उस विषय से संदर्भित बुद्धि का विकास अपने आप होता है और एक बार, दो बार अथवा तीन बार में वह विषय हमारे गम्य बन जाता है। अतः कोई विषय कठिन महसूस होने पर उससे दूर भागना उचित नहीं है।

(50) कल्पद्रुम विधान सभी अनुष्ठानों में सर्वश्रेष्ठ है–

संसार में तीर्थंकर भगवन्त समस्त पूज्य पुरुषों में सबसे महान और पूज्य हैं, चक्रवर्ती सम्राट् सबसे अधिक वैभवशाली पूजक हैं, उनके द्वारा किया गया महान पूजा अनुष्ठान ''कल्पद्रुम महा विधान अनुष्ठान'' कहलाता है। सभी श्रावकों को जीवन में एक बार कल्पद्रुम विधान अवश्य करना चाहिए।

पीठाधीश पदारोहण के संदर्भ में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा हस्तलिखित घोषणा पत्र

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

घोषणा पत्र

भगवान शांतिनाथ की जन्मभूमि हस्तिनापुर तीर्थ पर आज भगवान महावीर स्वामी की दीक्षाकल्याणक तिथि मगसिर कृष्णा दशमी के दिन वीर नि. सं. 2538 रविवार दि. 20 नवंबर 2011 को मैं गृहत्यागी सप्तमप्रतिमाधारी कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार को अनुमतित्यागरूप दशवीं प्रतिमा तक के व्रत देकर इस जंबूद्वीप के धर्मपीठ के द्वितीय पीठाधीश के पद पर आसीन करके 'स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी' के नाम से घोषित करती हूँ।

वीर नि. सं. 2498, ईसवी सन् 1972 से जबसे इस दिगंबर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना हुई है, आप तभी से ब्र. मोतीचंद के साथ-साथ जंबूद्वीप निर्माण आदि से लेकर आज तक के संपूर्ण कार्यकलापों को मूर्तरूप प्रदान करते हुये वर्तमान में इस संस्थान के यशस्वी अध्यक्ष हैं।

वीर नि. सं. 2513, सन् 1987 में मैंने आ. शु. 10 के दिन क्षुल्लक मोतीसागर को प्रथम पीठाधीश पद पर स्थापित किया था। उनके समाधिमरण के पश्चात्—

पीठाधीश पद की नियमावली के अनुसार आप दशवीं प्रतिमाधारी उत्कृष्ट श्रावक के पद को सुशोभित करते हुये इस संस्थान के 'अध्यक्ष' पद का भी निर्वहन करते हुये संपूर्ण कार्यकलापों को सुचारुरूप से संचालित करते रहेंगे।

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर महाराज, उनके प्रथम पट्टाचार्य श्री वीरसागर महाराज की मैं शिष्या गणिनी ज्ञानमती, मेरे शिष्य आप रवीन्द्रकीर्ति स्वामी हैं, अतः इस गुरुपरंपरा के अनुसार आप आज से गेरुवे वस्त्र के धारी रहेंगे।

आप चिरकाल तक दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत जंबूद्वीप हस्तिनापुर, श्री ऋषभदेव तपस्थली दि. जैन प्रयाग तीर्थ, भगवान महावीर जन्मभूमि कुंडलपुर आदि तीर्थों का संरक्षण-संवर्द्धन करते रहें एवं अयोध्या जन्मभूमि के टोंकों का जीर्णोद्धार तथा मांगीतुंगी में निर्मित हो रही विशाल ऋषभदेव प्रतिमा के निर्माण में तथा अन्य तीर्थों के विकास आदि कार्यों में सफलता प्राप्त करते रहें, दीर्घायु हों, यही मेरी शुभकामना एवं बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है।

हस्तिनापुर तीर्थ — गणिनी ज्ञानमती

मगसिर कृ. 10, वी. सं. 2538

दि. 20 - 11 - 2011

स्वामी जी की अद्भुत आयोजना शक्ति का छोटा-सा उदाहरण

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर संस्थान के निर्देशन में

पारस चैनल पर विभिन्न आयोजनों के सीधे प्रसारण की शृँखला सम्पन्न

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से गत माह में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न महोत्सवों का आयोजन सानंद सम्पन्न हुआ, जिनके पारस चैनल पर सीधे प्रसारणों की शृँखला से भारत वर्ष की जैन समाज में निम्न कार्यक्रमों का विशेष आनंद एवं पुण्य लाभ अर्जित किया। लगातार इन समस्त कार्यक्रमों का आयोजन स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी के द्वारा निराबाध रूप से सफलतापूर्वक किया गया। प्रस्तुत है इन आयोजनों की एक संक्षिप्त रिपोर्ट–

क्र.	महोत्सव	दिनाँक	स्थान
1.	शरदपूर्णिमा महोत्सव	10-11 अक्टूबर 2011	जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
2.	आर्यिका श्री रत्नमती अवदान समारोह	10 नवम्बर 2011	जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
3.	पीठाधीश पदारोहण समारोह	20 नवम्बर 2011	जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
4.	भगवान पुष्पदंतनाथ जन्मजयंती एवं महामस्तकाभिषेक महोत्सव	26 नवम्बर 2011	काकंदी (देवरिया) उ.प्र.
5.	भगवान पार्श्वनाथ दि. जैन कमल मंदिर एवं आचार्य वीरसागर निलय शिलान्यास समारोह	4 दिसम्बर 2011	शिर्डी (महा.)
6.	चौबीसी जिनमंदिर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं ह्रीं प्रतिमा का मस्तकाभिषेक	8 दिसम्बर 2011	जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर
7.	भगवान पार्श्वनाथ महामस्तकाभिषेक महोत्सव एवं आचार्य वीरसागर निलय शिलान्यास	13 दिसम्बर 2011	गणिनी श्री ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ माधोराजपुरा (राज.)

अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी (करौली) राज. में

भगवान महावीर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

स्थान-पंचबालयति दि. जैन मंदिर, महावीर धाम, अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी (राज.)

तिथि – **माघ शुक्ला षष्ठी से माघ शुक्ला दशमी, वीर. नि. सं. 2538**

दिनाँक – **29 जनवरी, रविवार से 2 फरवरी 2012, गुरुवार तक**

आशीर्वाद – **पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी** (हस्तिनापुर में विराजमान)

मार्गदर्शन – **प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी** (हस्तिनापुर में विराजमान)

सान्निध्य – **स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर**

महावीर जी में शांतिवीर नगर के निकट बने उपरोक्त मंदिर जी की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं। महोत्सव में भाग लेने वाले महानुभावों की समुचित व्यवस्थाओं का प्रबंध समिति द्वारा किया गया है।

निवेदक-श्री महेशचंद-श्रीमती संतोष जैन एवं परिवार
श्रीमती जैन धार्मिक ट्रस्ट (रजि.)
18/2, राजपुर रोड, सिविल लाइंस, जैन मंदिर के सामने, दिल्ली
संपर्क-011-23928152, 23920603, 09810080540

आयोजक-दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.-(01233) 280184, 280994, मो.-09411025124
Email - jambudweeptirth@gmail.com

प्रस्ताविकी-4

स्वस्तिश्री स्वामी जी के जनक व जननी का परिचय

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के जनक
लाला श्री छोटेलाल जी का परिचय

जहाँ हम महामना महापुरुषों का वन्दन कर, उनका गुणानुवाद कर अपने जन्म को सार्थक समझते हैं, वहीं एक बार हमारा मस्तक उन भव्यात्माओं के जन्मदाता माता-पिता के लिए भी झुकता है, क्योंकि जिस प्रकार वृक्ष के हरे-भरे एवं फलदार होने में उसकी जड़ की मुख्यता है, जिस प्रकार किसी भी सुन्दर, आकर्षक एवं सुसज्जित मकान में उसकी नींव की प्रमुखता है, ठीक उसी प्रकार उन सन्तों की महानता, उनके व्यक्तित्व आदि में उनके माता-पिता की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वस्तुतः बालक की प्रथम पाठशाला उसके माता-पिता होते हैं, जिनके द्वारा प्रदत्त संस्कार बालक को महान से महान और अधम से अधम भी बना देते हैं और यह तो सभी जानते हैं कि जीवन में संस्कारों का विशेष महत्व होता है। हमारे जीवन के प्रत्येक क्षण में संस्कार अपनी अहम् भूमिका निभाते हैं। उन महापुरुषों के जन्मदाता को नमन करते हुए आपको यहाँ परिचित कराया जा रहा है श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के जनक लाला श्री छोटेलाल जी से, जिन्हें हम ''चैतन्य रत्नाकर'' कहते हुए स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते हैं।

शाश्वत तीर्थ अयोध्या के निकट बाराबंकी जिले के अन्तर्गत टिकैतनगर नामक नगर में लाला श्री नौबतराय जी के पुत्र श्री धन्यकुमार जी के तीन पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ थीं। जिनके नाम इस प्रकार हैं-बब्बूमल, छोटेलाल, बालचंद, कुनका देवी, रानी देवी, प्यारी देवी। इन सभी के पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि से समन्वित परिवार देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में सतत अग्रणी रहते हैं। तीन पुत्र एवं तीन पुत्रियों में द्वितीय पुत्र के रूप में जन्मे छोटेलाल को धार्मिक संस्कार विरासत में ही प्राप्त हुए थे, ये प्रतिदिन देवदर्शन करके ही नाश्ता आदि लेते थे। इन्होंने बचपन में स्कूल में 3-4 कक्षा तक ही अध्ययन किया पुनः व्यापार में रुचि अधिक होने से यह कपड़े का व्यापार करने लगे। बचपन से ही प्रतिदिन मंदिर जाते, पानी छानकर पीते और रात्रि में भोजन नहीं करते थे। पिता धन्यकुमार ने परम्परा के अनुसार इन्हें आठ वर्ष की उम्र से ही अष्टमूलगुण दिलाकर जनेऊ पहना दिया था। 14-15 वर्ष की छोटी सी उम्र में यह घोड़ा चलाना सीख गए और दो-चार साथियों के साथ घोड़े पर कपड़ा लादकर ये टिकैतनगर के बाहर गांवों में व्यापार करने लगे। देखते ही देखते यह कुशल व्यापारी बन गए और अपने भुजबल के श्रम से अच्छा धन कमाया और प्रतिष्ठित महानुभावों में गिने जाने लगे।

युवावस्था में इनका विवाह अवध प्रान्त के महमूदाबाद नगर के लाला श्री सुखपालदास जी की सुपुत्री मोहिनी देवी के साथ सम्पन्न हुआ। पति और पत्नी संसार में गाड़ी के उन दो पहियों के समान होते हैं, जिनके साथ-साथ चलने से गृहस्थीरूपी मंजिल शीघ्र पार हो जाती है। मोहिनी देवी को भी अपने पिता से विरासत में सुसंस्कार प्राप्त हुए थे, इन्होंने अपने पिता से दहेज में पद्मनंदि पंचविंशतिका नाम से एक ग्रंथ प्राप्त किया था, फिर तो सोने में सुहागा की कहावत चरितार्थ हो गई और गृहस्थावस्था में प्रवेश कर मोहिनी धर्मध्यानपूर्वक अपना काल यापन करने लगीं। इनके चार पुत्र एवं नौ पुत्रियाँ, ऐसी 13 सन्तानें हुईं, जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं-1. मैना 2. शांति 3. कैलाश 4. श्रीमती 5. मनोवती 6. प्रकाश 7. सुभाष 8. कुमुदनी 9. रवीन्द्र 10. मालती 11. कामिनी 12. माधुरी और 13. त्रिशला। जिनमें से कु. मैना ने 18 वर्ष की लघुवय में उस समय त्यागमार्ग को अंगीकार कर कुमारिकाओं का मार्ग प्रशस्त किया, जब कोई भी कुमारी कन्या उस समय त्यागमार्ग पर निकली ही नहीं थी और उस षोडश वर्षीय बालिका ने त्यागमार्ग पर कदम बढ़ाने के साथ गणिनी ज्ञानमती माताजी के रूप में उत्तरोत्तर वृद्धि करते हुए विश्व में अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व से, जो अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है, वह युगों-युगों तक चिरस्मरणीय एवं स्तुत्य रहेगा। कु. मनोवती ने उसी पथ का अनुसरण करते हुए हैदराबाद में पूज्य ज्ञानमती माताजी से क्षुल्लिका दीक्षा ग्रहण की और सन् 1969 में आचार्य श्री धर्मसागर महाराज से आर्यिका दीक्षा लेकर ''आर्यिका अभयमती'' नाम प्राप्त किया। कु. माधुरी ने 11 वर्ष की लघुवय में ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर 18 वर्ष पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की छत्रछाया में रहकर गुरुसेवा, वैय्यावृत्ति, अध्ययन-अध्यापन द्वारा चहुँमुखी प्रतिभा को निखारते हुए 13 अगस्त 1989 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी से आर्यिका दीक्षा ग्रहण कर चन्दनामती नाम प्राप्त किया है। शेष पुत्रियों में शांति देवी, श्रीमती देवी, कुमुदनी देवी, मालती देवी, कामिनी देवी व त्रिशला कुशलतापूर्वक गृहस्थी का संचालन कर देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति करते हुए धर्माराधना में तत्पर हैं व अपनी पीढ़ी में भी धार्मिक संस्कारों का समावेश किया है।

लाला जी के चार पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र श्री कैलाशचंद जैन

टिकैतनगर से लखनऊ में आकर सामाजिक व राजनीतिक गतिविधियों में सक्रियरूप से भाग लेते हुए धर्माराधना में सदैव तत्पर रहते हैं। द्वितीय पुत्र श्री प्रकाशचंद जी ने भी गृहस्थावस्था में रहकर गृहस्थी का कुशल संचालन करते हुए समय-समय पर सामाजिक व राजनीति गतिविधियों में भाग लिया था। 21 मार्च 2005 को सम्मेदशिखर व पूज्य माताजी का ध्यान करते-करते टिकैतनगर में आपका स्वर्गवास हुआ है।

तृतीय पुत्र श्री सुभाषचंद जी गृहस्थ धर्म का कुशल संचालन कर देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति में तत्पर हैं तथा चतुर्थ पुत्र 'कर्मयोगी' की उपाधि से अलंकृत (रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी) लघुवय में ही ब्रह्मचर्य व्रत लेकर पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में रहकर उनके द्वारा निर्देशित प्रत्येक कार्यकलापों को मूर्तरूप देते हैं और अनेक संस्थाओं के सक्रिय अध्यक्ष व प्रत्येक युवा के आदर्श प्रेरणास्रोत हैं।

कहा जाता है कि कोई भी व्रत अथवा नियम जब लिया जाता है, तब उसकी परीक्षा अवश्य होती है। लाला जी का मंदिर जाने का नियम था, कैसी ही व्यापारिक व्यस्तता क्यों न हो, भले ही दिन में 12-1 बज जाये किन्तु लाला जी घर में आकर मंदिर जाकर दर्शन करके ही भोजन करते थे। घर में स्वाध्याय भी करते थे, जिसकी प्रेरणा इन्हें अपनी बड़ी पुत्री मैना से प्राप्त हुई थी। बाद में कभी-कभी तो शास्त्र पढ़ते-पढ़ते गद्गद् हो जाते, उसमें मगन हो जाते और उस आनन्द की अनुभूति वह घर में पत्नी व बच्चों को शास्त्र की बातें सुनाते हुए करते थे। उनका प्रायः यही कहना था कि भइया! तुम चाहे धर्म-कर्म थोड़ा करो, व्रत उपवास मत करो, किन्तु झूठ मत बोलो, दूसरों का गला मत काटो अर्थात् बेईमानी करके दूसरों का धन मत हड़पो, किसी को कटु वचन मत बोलो, यही सबसे बड़ा धर्म है। यह धर्म ही मनुष्य को मनुष्यता का पाठ सिखाता है अन्यथा मनुष्य मनुष्य न रहकर पशु अथवा हैवान बन जाता है।

उन्हें यह दृढ़ विश्वास था कि तीर्थयात्रा करने से, दान देने से, मंदिर में धन लगाने से, धार्मिक उत्सवों में बोलियाँ आदि लेने से, सच्चे साधुओं की सेवा-वैय्यावृत्ति करने से व्यापार बढ़ता है, इसीलिए वे सदा इन कार्यों में भाग लिया करते थे। अवध प्रान्त में शाश्वत तीर्थ अयोध्या से कुछ दूरी पर भगवान धर्मनाथ की जन्मभूमि रतनपुरी है, उसकी वेदी प्रतिष्ठा के समय की बात है, लाला श्री छोटेलाल जी ने उसमें वेदी का पर्दा खोलने की बोली ली थी, जब श्री जी को विराजमान करने का समय आया तब लाला जी ने अपनी बड़ी पुत्री कु. मैना से पर्दा खुलवाया। चूँकि मैना में धार्मिक संस्कार कुछ विशेष ही थे, अतः उन्होंने ज्यों ही महामंत्र का स्मरण कर पर्दा खोला कि अकस्मात् वहाँ पर एक दिव्य प्रकाश चमक उठा। वहाँ पर खड़े हुए सभी की आँखों में चकाचौंध सा हुआ और सबने प्रतिमा जी का चमत्कार एवं लाला जी की सुपुत्री का विशेष पुण्य जान उच्च स्वर में जय-जयकार के नारे लगाना शुरू कर दिया।

लालाजी को जिनमंदिर में होने वाली धार्मिक मीटिंगों में भी विशेष रुचि थी। वे प्रायः सभी मीटिंगों में जाते और वहाँ से आकर समाज की सारी गतिविधियों की जानकारी घर के सभी सदस्यों को दिया करते थे तथा दुकान पर होने वाली विशेष बातों को घर जाकर पुत्री मैना को सुनाया करते थे। वस्तुतः लालाजी को अपनी पुत्री मैना पर बड़ा गर्व था, जब से कु. मैना 9-10 वर्ष की हुई थी, तभी से लालाजी अपनी पुत्री मैना को अपने पुत्र के समान समझकर घर एवं दुकान की तिजोरी की चाबियाँ, रुपये-पैसे आदि सब उन्हीं को संभलवाते थे। इन्होंने जब अपना नया घर बनवाना प्रारंभ किया, तो स्वयं खड़े रहकर बनवाया, ये प्रारंभ से ही बहुत परिश्रमी थे, पिता धन्यकुमार जी इनके श्रम से बहुत ही प्रसन्न रहते थे, अतः वृद्धावस्था में ये अपने इन्हीं पुत्र छोटेलाल के पास रहा करते थे और लाला जी भी अपने पिता की सेवा-सुश्रूषा अपने हाथों करके बहुत प्रसन्न होते थे। सन् 1939 में आपके पिताजी स्वर्गस्थ हुए हैं।

इन्होंने अपनी माँ के वचनों का भी सदैव सम्मान किया। कभी भी उन्हें अपमानजनक वचन स्वयं कहना तो बहुत दूर था, किसी अन्य को कहने भी नहीं दिया था। माँ के मन को किसी बात से दुःख हो, ऐसा कार्य भी कभी नहीं करते थे। माँ की इच्छा के अनुसार अपनी बहनों को बुलाकर सदा उन्हें यथायोग्य मान-सम्मान एवं वस्तुएं दिया करते थे। साथ ही घर तथा व्यापार के प्रत्येक कार्यों में अपने बड़े भाई बब्बूमल और छोटे भाई बालचंद की सलाह से ही कार्य किया करते थे, इन्होंने यह आदर्श अपने घर में भाइयों के जीवित रहने तक बराबर जीवित रखा था, आज के युग में प्रत्येक भाई के लिए यह उदाहरण अनुकरणीय है।

लाला जी में एक गुण विशेष था, वह यह कि यह अपनी पुत्रियों को रत्न के समान मानते थे। यदि कोई भी इनसे कह देता कि लाला छोटेलाल जी! आपकी तो कई पुत्रियाँ हैं....., तो इन शब्दों से इन्हें ऐसी नाराजगी होती कि शान्त स्वभावी लालाजी उसी समय चिढ़कर कहते कि भइया! तुम कौन होते हो मेरी पुत्रियों की गिनती करने वाले। मेरी सभी बेटियाँ अपना-अपना भाग्य लेकर आई हैं.....इत्यादि।

उन्होंने जीवन में कभी भी अपनी पुत्रियों को डाँटा नहीं अपितु कभी भाइयों ने कुछ कह दिया, तो उन्हें डांटा और दण्डित भी किया है, साथ ही जो लोग कन्या के जन्म से दुःखी होते या चिन्ता व्यक्त करते, तो उन्हें समझाया ही है। उनका कहना था-भइया! कन्या एक रत्न है, अपनी सन्तान है, उसे भार क्यों समझते हो। उसके जन्म के समय दुखी क्यों होते हो। देखो! पुरुष तो एक ही कुल की शोभा है, जबकि कन्या दो कुलों की शोभा होती है और फिर जन्म लेते ही सब अपना-अपना भाग्य साथ लाई हैं वे किसी के भाग्य का रत्ती भर भी नहीं ले जाएंगी। यह उदाहरण भी वर्तमान युग के माता-पिता के लिए अनुकरणीय ही नहीं सर्वथा ग्रहण करने योग्य है। इससे कन्या का मन तो जीवन भर प्रसन्न रहता ही है, साथ ही भाई-बहनों का भी आपस में जीवन भर सच्चा प्रेम बना रहता है। यही कारण है कि आज भी उस हरे-भरे परिवार में बहुत सी कन्याएं हैं। आज भी सबको अपने माता-पिता का उतना ही प्रेम मिल रहा है जितना उनके भाइयों को मिलता है।

लाला छोटेलाल जी अत्यन्त मोही प्रकृति के थे, इन्हें अपनी प्रत्येक सन्तान से बहुत मोह था। जब इनकी बड़ी पुत्री मैना को छोटी सी उम्र में वैराग्य हुआ और अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी उन्होंने दीक्षा ले ली तब पिता छोटेलाल जी को बहुत ही दुःख हुआ था। उसके बाद में वे साधुओं के संघ में आते जाते रहते थे किन्तु कुछ जन्मान्तर के संस्कार ही समझना चाहिए कि इनके सभी पुत्र-पुत्रियों ने जीवन में त्याग के लिए कदम उठाया है। उनमें जिनका पुरुषार्थ फल गया, वे त्यागमार्ग में निकल गए और जो त्याग की ओर नहीं बढ़ सके, वे आज भी अपने परिवार सहित दान, पूजा, स्वाध्याय आदि में निरत हैं।

सन् 1969 की बात है, शायद उनके जीवन का अन्त समय नजदीक आ रहा था, इन्हें पीलिया हो गया, जिससे ये काफी अस्वस्थ रहने लग गये थे। चूँकि समय-समय पर पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी (कु. मैना) ने घर के सभी लोगों को यही शिक्षा दी थी, जीवन का किया हुआ धर्मकार्य अन्त समाधि से ही सार्थक होता है अतः पिता की अच्छी तरह से सल्लेखना करवा देना और उनके अन्त समय में कोई भी उनके पास रोना नहीं। इस प्रकार माताजी की प्रेरणा से उनके पुत्रों के साथ-साथ सभी पुत्रवधूएं और पुत्रियाँ भी उनके पास धार्मिक पाठ भक्तामर स्तोत्र, समाधिमरण आदि सुनाया करते थे। उनकी पत्नी मोहिनी देवी जी ने पतिसेवा करते हुए उनकी बीमारी में अन्त समय जानकर बहुत ही सावधानीपूर्वक उन्हें सम्बोधा था। जिस समय लालाजी अस्वस्थ थे, उस समय टिकैतनगर में आचार्य सुमतिसागर जी महाराज संघ सहित आ गए थे, तब मोहिनी जी ने आचार्यश्री से प्रार्थना की थी कि ''महाराज जी! आप कृपया इन्हें सम्बोधन प्रदान करें। उस समय महाराज जी ने उन्हें बहुत ही सुन्दर शब्दों में सम्बोधित करते हुए कहा कि लालाजी! तुमने आर्यिका ज्ञानमती जैसी पुत्री को जन्म देकर अपना जीवन धन्य कर लिया है, सभी यात्राएं कर ली हैं और सभी साधुओं के दर्शन करके उनका उपदेश भी सुना है, उन्हें आहार देना, वैयावृत्ति आदि भी आपने किया है। इस नश्वर शरीर से आपने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग किया है अतः अपने कुटुम्ब से मोह छोड़कर शरीर से भी मोह छोड़कर अपना अगला भव सुधार लो।'' इत्यादि प्रकार से महाराज जी ने बहुत कुछ कहा था। जहाँ लालाजी लेटते थे, वहीं उनके सामने ऊपर में ज्ञानमती माताजी की पुरानी पिच्छी टंगी रहती थी, जिसे देखकर वे हाथ जोड़कर उसे नमस्कार करते थे। उनका अन्त समय जानकर औषधि अन्न आदि का त्याग कराकर उन्हें धर्मरूपी अमृत ही पिलाया जा रहा था, उन्होंने पत्नी मोहिनी देवी एवं अपने सभी पुत्र-पुत्रवधुओं आदि परिवारजनों से क्षमायाचना करके स्वयं क्षमाभाव धारण कर लिया था।

मरण से लगभग एक घण्टे पूर्व की बात है, पूज्य मातजाी को याद करते हुए उन्होंने कहा कि था मुझे मेरी ज्ञानमती माताजी के दर्शन करवा दो। जब उन्होंने यह इच्छा कई बार व्यक्त की तब मोहिनी देवी तथा बड़े पुत्र कैलाशचंद ने कहा कि इस समय माताजी यहाँ से बहुत दूर जयपुर में विराजमान हैं, उन्होंने आपके लिए आशीर्वाद भिजवाया है। पुनरपि जब वह बोले-मुझे मेरी ज्ञानमती माताजी के दर्शन करा दो। तब घर के लोगों ने उनके सामने एक महिला को जो कि ब्रह्मचारिणी थी, श्वेत साड़ी पहने थी, उन्हें लाकर खड़ा कर दिया। तब उन्होंने आंख खोलकर देखा और सिर हिलाकर धीरे से कहा-''ये ज्ञानमती माताजी नहीं हैं''। इतना कहकर पिताजी (छोटेलाल जी) ने आँख बंद कर ली पुनः वापस नहीं खोली। उस समय उनका अन्त जानकर भी कोई रोया नहीं, अपितु उनके पास मौजूद सभी कुटुम्बीजनों ने लगातार जोर-जोर से णमोकार मंत्र का पाठ लगभग एक घंटे तक किया और उनकी सुन्दर समाधि बनवाई, जिसकी आकांक्षा प्रत्येक गृहस्थ को रहती है और विरले ही लोगों को अन्त समाधि का सौभाग्य मिल पाता है।

इस प्रकार णमोकार मंत्र सुनते-सुनते लाला छोटेलाल जी ने 25 दिसम्बर 1969 के दिन इस नश्वर शरीर को छोड़कर स्वर्गधाम को प्राप्त किया और यह उनकी पत्नी और

पुत्र-पुत्रियों की गंभीरता और महानता ही रही कि प्राण निकल जाने के बाद भी सब थोड़ी देर तक णमोकार मंत्र बोलते रहे, कोई भी वहाँ रोया-धोया नहीं। अनन्तर जब शरीर ठण्डा हो गया तब रोना-धोना प्रारंभ हुआ। सभी ने पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की आज्ञा को ध्यान में रखकर पिता के जीवित क्षणों तक धैर्य धारण कर णमोकार मंत्र सुनाया। उनकी सच्ची सेवा की तथा अच्छी सल्लेखना कराकर एक आदर्श उपस्थित किया।

कहा जाता है कि जो अपने जीवन को सत्कर्मों में लगाता है उसे सुगति की प्राप्ति होती है। श्रीमान् लाला छोटेलाल जी ने अपने जीवन में साधु संघ के दर्शन, आहारदान, तीर्थयात्रा, गुरुओं के उपदेश तथा आशीर्वाद ग्रहण आदि से जो पुण्य संचित किया था, इसी के फलस्वरूप अन्त समय घर के अन्दर इतने बड़े परिवार के बीच में रहते हुए भी उनको अच्छी समाधि का लाभ मिला। आज लालाजी हमारे बीच में इस नश्वर तन से भले ही न हों परन्तु उनकी सन्तानों को देखकर उनकी महानता का परिज्ञान होता है। उनके द्वारा उन सन्तानों को प्रदत्त संस्कार आज भी पुष्पित और पल्लवित होकर अपनी सुरभि से समस्त संसार को महका रहे हैं। धन्य हैं ऐसे पिता जिनके व्यक्तित्व के सम्मुख सम्पूर्ण विश्व नतमस्तक है।

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी की जननी (माता मोहिनी)
पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी का परिचय

आदिब्रह्मा भगवान ऋषभदेव की जन्मभूमि अयोध्या और उसके आस-पास के क्षेत्र को भी अवध के नाम से जाना जाता है। वैसे इन प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव और उनके प्रथम पुत्र चक्रवर्ती सम्राट् भरत के समय वह अयोध्या नगरी 12 योजन लम्बी थी अतः 96 मील होने से लखनऊ, टिकैतनगर, त्रिलोकपुर, बाराबंकी, महमूदाबाद आदि नगर उस समय अयोध्या नगरी की पवित्र भूमि की सीमा में विद्यमान थे। आज भी अयोध्या तीर्थ की पवित्रता से सम्पूर्ण अवध का वातावरण सुवासित, धर्मपरायण एवं परम पवित्र है।

उसी अवध प्रान्त में जिला सीतापुर के अन्तर्गत महमूदाबाद नामक एक नगर है, जहाँ विशाल जिनमंदिर के निकट वर्तमान में 60-70 जैन घर हैं। उसी नगरी में एक सुखपालदास जी नाम के श्रेष्ठी निवास करते थे। अग्रवाल दिगम्बर जैन जातीय लाला सुखपालदास जी की धर्मपत्नी का नाम मत्तोदेवी था। पूरे नगर में धर्मात्मा श्रेष्ठी के रूप में प्रसिद्ध सुखपालदास जी भगवान की नित्य पूजन के साथ-साथ स्वाध्याय भी करते थे। सात्त्विक प्रवृत्ति वाले इन महामना श्रावक की धर्मपत्नी भी पतिव्रता आदि गुणों से सहित धर्मपरायण एवं अत्यन्त सरल प्रकृति की थीं। इन धर्मनिष्ठ दम्पत्ति के चार संताने थीं, जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार थे – 1. शिवप्यारी देवी 2. मोहिनी देवी 3. महिपालदास 4. भगवानदास। पिता सुखपालदास जी ने इन सभी संतानों को धर्ममय संस्कारों से विशेष संस्कारित किया था।

ईसवी सन् 1914 में इन धर्मपरायण दम्पत्ति की बगिया में द्वितीय सन्तान के रूप में जन्मी कन्या का नाम पिता ने बड़े ही प्यार से 'मोहिनी' रखा था और माता-पिता, कुटुम्बीजनों, यहाँ तक की नगरवासियों का भी इस कन्या पर विशेष स्नेह था। कन्या के कुछ बड़ी होने पर पिता सुखपालदास जी उसकी विशेष देखरेख करते तथा रोज उसे अपने साथ मंदिर भी ले जाते थे। 5-6 वर्ष की उम्र में स्कूल जाने पर थोड़े ही दिनों में मोहिनी देवी ने 3-4 कक्षा तक अध्ययन कर लिया। चूँकि महमूदाबाद का इलाका मुस्लिम इलाका था अतः पिताजी ने अपने महीपाल पुत्र की शिक्षा हेतु एक मौलवी अध्यापक की व्यवस्था कर रखी थी, वे उन्हें उर्दू पढ़ाते थे और तीक्ष्ण बुद्धि की धनी कन्या मोहिनी अपने छोटे भाई को उर्दू पढ़ते देख स्वयं भी उर्दू पढ़ना सीख गई। घर में सबसे छोटे भाई भगवानदास के जन्म लेते ही मोहिनी का उसके प्रति विशेष वात्सल्य होने से मोहिनी ने स्कूल जाना छोड़ दिया। प्रायः देखा जाता है कि होनहार, कुशाग्र बुद्धि के छात्र-छात्राएं गुरु के लिए विशेष प्रेमपात्र होते हैं और गुरु का उन पर विशेष स्नेह रहता है अतः जब कन्या मोहिनी कुछ दिन स्कूल नहीं गईं, तो उनकी अध्यापिकाएँ आकर लाला सुखपालदास जी से उसकी कुशाग्र बुद्धि के कारण उसे स्कूल भेजने का आग्रह करतीं, साथ ही कहतीं कि इसके बगैर तो हमारा स्कूल ही सूना हो जाता है। पिताजी की प्रेरणा के बाद भी मोहिनी अपने भाई को खिलाने का बहाना कर स्कूल जाने को मना कर देती। चूँकि उस समय कन्याओं को ज्यादा पढ़ाने की परम्परा नहीं थी और माँ मत्तोदेवी भी कन्या को स्कूल भेजने का आग्रह नहीं करती थीं, अतः उनकी लौकिक शिक्षा अल्प ही रही। पुनः पिताजी ने मोहिनी के अन्दर धार्मिक संस्कार डालने हेतु उन्हें

भक्तामर, तत्त्वार्थसूत्र आदि का अध्ययन कराना प्रारंभ किया और रात्रि में पूरे परिवार को एक साथ बिठाकर मोहिनी से शास्त्र पढ़वाते और बड़े खुश होते थे पुनः सबको शास्त्र का अर्थ भी समझाते थे।

एक बार पिता ने मोहिनी को एक मुद्रित ग्रंथ 'पद्मनन्दिपंचविंशतिका' देकर उसका स्वाध्याय करने को कहा। मोहिनी ने पिता की आज्ञा स्वीकार कर उस ग्रंथ का स्वाध्याय किया और उस स्वाध्याय का प्रतिफल यह रहा कि मोहिनी ने उस ग्रंथ में ब्रह्मचर्य व्रत के महत्त्व को पढ़कर भगवान की प्रतिमा के सम्मुख अष्टमी, चतुर्दशी के दिन ब्रह्मचर्य व्रत पालन करने का आजीवन नियम ले लिया और किसी को इस व्रत के बारे में विदित भी न हो सका। चूँकि जिनमंदिर में प्रतिदिन सुखपालदास जी ही शास्त्र वांचते थे अतः सभी इन्हें पण्डित जी कहकर पुकारते थे। बड़े पुत्र महिपालदास जी कुश्ती के अच्छे खिलाड़ी बन गए थे और इलाके में बड़ी-बड़ी कुश्ती में कई एक प्रतियोगिता जीती थीं। मोहिनी देवी के पिताजी पहले कपड़े का व्यवसाय करते थे इनका नियम था देवपूजा करके ही दुकान खोलना और अगर मंदिर न हो तो 'जाप्य' करके ही ग्राहक से बात करना। उनके इस नियम के कारण ही उनकी अंत समाधि बहुत ही अच्छी हुई। एक बार वे बिसवां में व्यापार हेतु गये, प्रातः ही एक ग्राहक आ गया, तब उन्होंने कहा – भाई! मैं जाप्य करके ही वार्तालाप करूँगा। तब वह ग्राहक बाहर बैठ गया पुनः वह शुद्ध वस्त्र पहनकर जाप्य करने बैठे और जाप्य करते-करते ही उनके प्राण पखेरू उड़ जाने से उन्हें उत्तम गति की प्राप्ति हुई। उधर जब बहुत देर हो गई, तो उस ग्राहक ने अंदर जाकर देखा, तो उन्हें मृत पाया। तब परिवार के लोगों को बुलाकर उनकी अन्त्येष्टि की गई। वास्तव में बंधुओं! एक छोटा से छोटा नियम भी इस जीव को संसार से पार करने में सहकारी कारण बन जाता है, इसीलिए धर्मगुरु सदैव हमें कोई न कोई व्रत नियम लेने की प्रेरणा प्रदान करते हैं।

सेठ सुखपालदास जी ने अपने सामने ही अपने सभी पुत्र-पुत्रियों का विवाह कर दिया था, जिसमें लाडली पुत्री मोहिनी का उन्होंने अयोध्या के निकट बसे धर्मपरायण नगर बाराबंकी जिले में स्थित टिकैतनगर नामक ग्राम के धर्मात्मा श्रावक लाला धन्यकुमार जी एवं उनकी धर्मपत्नी फूलमती के द्वितीय पुत्र छोटेलाल जी के साथ किया था। लाला धन्यकुमार जी ने महमूदाबाद के लाला सुखपाल जी की बहुत ही प्रशंसा सुन रखी थी, साथ ही मोहिनी के गुणों से भी बहुत प्रभावित थे। सुखपालदास जी ने भी उनके पुत्र में एक वर के सभी गुणों को देखकर तुरंत स्वीकृति प्रदान कर दी और शुभ मुहूर्त में चि. छोटेलाल जी के साथ आयु. मोहिनी देवी का पाणिग्रहण संस्कार हो गया। माता-पिता ने अश्रुपूरित नेत्रों से अपनी प्यारी पुत्री को विदाई दी, उस समय सन् 1932 में मोहिनी देवी की उम्र 18 वर्ष मात्र थी। विदाई के समय यूँ तो पिता जी ने अपनी बेटी को दहेज में यथायोग्य सब कुछ प्रदान किया, किन्तु जब उनके मन को पूर्ण संतुष्टि नहीं हुई, तो उन्होंने मोहिनी को ''पद्मनन्दिपंचविंशतिका'' ग्रंथ को सच्चे दहेज के रूप में देकर कहा – बिटिया मोहिनी! तुम हमेशा इस ग्रंथ का स्वाध्याय करती रहना, इसी से तुम्हारे गृहस्थाश्रम में सुख और शांति की वृद्धि होगी और तुम्हारा यह नरभव पाना सफल हो जायेगा। पुत्री मोहिनी ने भी पिता के द्वारा स्नेहपूर्वक प्रदत्त सच्चे दहेजरूप ग्रंथ को सबसे अधिक मूल्यवान समझा।

ससुराल में मंगल प्रवेश कर मोहिनी ने पिता द्वारा प्रदत्त उस ग्रंथ को अनमोल निधि के रूप में संभाल कर रखा और नियमपूर्वक प्रतिदिन देवदर्शन के पश्चात् उसका स्वाध्याय किया। यहाँ इस भरे-पूरे परिवार में मोहिनी को घुलते-मिलते देर न लगी। घर में देवदर्शन, रात्रि भोजन त्याग, जल छानकर पीना, सायंकाल मंदिर जाकर आरती करना और शास्त्र सभा में बैठकर विनयपूर्वक शास्त्र सुनना आदि श्रावकोचित्त सभी क्रियाएँ होती थीं। घर के निकट जिनमंदिर होने से मंदिर के घंटे, पूजा-पाठ व आरती की आवाज घर बैठे कानों में गूंजा करती थी। गृहस्थधर्म का परिपालन करती हुई मोहिनी देवी ने सन् 1934 में आसोज सुदी पूर्णिमा – शरदपूर्णिमा की रात्रि में प्रथम पुष्प के रूप में एक कन्या रत्न को जन्म दिया, जिसकी शुभ्र चांदनी आज सारे भारतवर्ष में फैल रही है। उस कन्या मैना के जन्म से पहले ही मोहिनी देवी ने मैनासुन्दरी नाटक पढ़ा था और उन्हें सुरसुन्दरी-मैनासुन्दरी का संवाद याद था, उसे वे हमेशा गुनगुनाया करती थीं और यही संस्कार गर्भस्थ बालिका पर अच्छी तरह से पड़ गए। माता मोहिनी प्रतिदिन प्रातः उठकर सामायिक करती, पुनः स्नानादि से निवृत्त होकर मंदिर में जाकर भगवान की पूजा करके रसोई बनाती थीं और छोटे बच्चों को दूध पिलाते समय स्वाध्याय और भक्तामर आदि के पाठ किया करती थीं, जिससे वह दूध भी अमृत तुल्य बन जाता था और बच्चों में धार्मिक संस्कार पड़ते जाते थे। प्रतिदिन सायंकाल वे स्वयं मंदिर जातीं और बच्चों को भी भेजती थीं, प्रतिदिन किसी भी बालक को मंदिर जाए बिना नाश्ता भी नहीं मिलता था, यही कारण था कि माता मोहिनी की सभी संतानें इसी धर्म के साँचे में ढलती चली गईं। माता मोहिनी अपनी पुत्री मैना की बातों को जैनागम से प्रमाणित

समझकर सदैव उनकी बातों को मान्यता प्रदान करती थीं।

सन् 1952 में जब आपकी पुत्री मैना ने गृहत्याग किया, उस समय आपने अश्रुपूरित नयनों से उन्हें अपनी स्वीकृति देते हुए मैना से वचन लिया था कि बेटी! जैसे आज मैं तुझे संसार से पार होने में सहयोग दे रही हूँ, इसी प्रकार एक दिन तुम भी मुझे गृहस्थी के जाल से निकालकर मोक्षमार्ग में लगा देना।

इस प्रकार माता मोहिनी ने अपनी सभी सन्तानों को सुसंस्कारित कर गृहस्थोचित सभी क्रियाओं का कुशल संचालन करते हुए अपने पति लाला छोटेलाल जी के अन्त समय में उनकी सुन्दर समाधि कराकर नारी जाति के लिए एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। अपने पुत्र-पुत्रियों को उन्होंने उसी प्रकार पालने में शिक्षा प्रदान की, जिस प्रकार रानी मदालसा ने अपने पुत्रों को पालने में शिक्षा दिया था कि – शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरंजनोऽसि, संसार माया परिवर्जितोऽसि' हे पुत्र! तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरंजन है और संसार की माया से रहित है। ऐसा सुन-सुनकर उसके सभी पुत्र युवा होकर विरक्त हो घर से चले जाते थे।

उन पुत्र-पुत्रियों की भांति ही माता मोहिनी की भी तीन पुत्रियाँ एवं एक पुत्र गृहबंधन से निकल गए और शेष 6 पुत्रियाँ व 3 पुत्र गृहस्थ धर्म में रहकर देव-शास्त्र-गुरु का दृढ़ श्रद्धान कर धर्माराधनापूर्वक जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

मोहिनी माता बनीं आर्यिका रत्नमती – सन् 1971 में संघ का चातुर्मास अजमेर शहर में हो रहा था। उस समय मोहिनी देवी अपने बड़े पुत्र कैलाशचंद व पुत्रवधू के साथ संघ के दर्शनार्थ आईं। वहाँ एक दिन वे ज्ञानमती माताजी से कहने लगीं – माताजी! अब मेरी इच्छा घर जाने की नहीं है। अब मेरा मन पूर्णरूपेण विरक्त हो चुका है, मैं दीक्षा लेकर अपना आत्मकल्याण करना चाहती हूँ। उस समय ज्ञानमती माताजी ने अपने दिये हुए वचन को निभाया और उनके मुख से इतना सुनते ही बहुत प्रसन्न होकर कहने लगीं कि आपने बहुत अच्छा सोचा है। देखो –

''जब लो न रोग जरा गहे, तब लो झटिति निज हित करो।''

इस पंक्ति के अनुसार अभी आपका शरीर साथ दे रहा है अतः अब आपको किसी की भी परवाह न कर आत्मसाधना में ही लग जाना चाहिए। इसके साथ ही माताजी ने उन्हें यह भी बता दिया कि मैंने सुगंधदशमी के दिन माधुरी को आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत दे दिया है, उसकी शादी का तो कोई प्रश्न ही नहीं उठता। यह सुनकर आश्चर्यचकित मोहिनी माता बोलीं कि माताजी! अभी तो माधुरी मात्र 13 वर्ष की है, वह ब्रह्मचर्य का अर्थ क्या समझे। अभी से व्रत न देकर कुछ दिन संघ में रखकर धर्म पढ़ा देतीं, तो अच्छा था। पुनः वे कहने लगीं कि अब मैं किसी के मोक्षमार्ग में बाधक क्यों बनूँ, जिसका जो भाग्य होगा, सो होगा। मुझे तो अब आर्यिका दीक्षा लेनी है।''

माताजी ने उसी समय रवीन्द्र कुमार को बुलाकर माँ के भाव बता दिये, जिसे सुनकर माँ के कमजोर शरीर एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से रवीन्द्र जी मोहवश एकदम विचलित हो गये, किन्तु माता मोहिनी ने उस हेतु अपना दृढ़ निश्चय रखा। माताजी ने रवीन्द्र जी का माँ के प्रति मोह देख संघस्थ मोतीचंद जी को बुलाकर सारी बात बताई और श्रीफल लाने को कहा। मोतीचंद जी ने यह सुनकर बहुत ही प्रसन्न हो श्रीफल लाकर माता मोहिनी के हाथ में दे दिया और मोहिनी देवी उसी समय माताजी के साथ सेठसाहब (सेठ भागचंद सोनी) की नशिया में आचार्यश्री के समक्ष श्रीफल लेकर बोलीं – महाराज जी! मैं आपके करकमलों से आर्यिका दीक्षा लेना चाहती हूँ और श्रीफल चढ़ा दिया। आचार्य श्री उस समय प्रसन्नमना हो ज्ञानमती माताजी की ओर देखने लगे। उपस्थित सभी साधुवर्ग उनके वैराग्य की सराहना करने लगे। तब आचार्यश्री ने कहा कि तुम्हारा शरीर बहुत कमजोर है और यह जैनी दीक्षा तलवार की धार है। तब मोहिनी माता ने सारपूर्ण उत्तर देते हुए कहा कि महाराज जी! संसार में रहकर भी तो कितने कष्ट सहन करने पड़ते हैं, दीक्षा में जो कष्ट होंगे, उन्हें सहन करने में मैं अपना सौभाग्य समझूंगी। फिर माताजी ने अजमेर के एक अति विश्वस्त श्रावक जीवनलाल जी को टिकैतनगर भेजकर यह समाचार पहुँचा दिया। इधर घर में समाचार पहुँचते ही सबको बहुत झटका लगा और सब विक्षिप्त हो रोने लगे पुनः येन-केन प्रकारेण मन को समझाकर शीघ्र ही उनके पुत्र-पुत्री, भाई आदि सब अजमेर पहुँच गए और सभी मोहिनी जी से चिपककर रोने लगे। सभी ने इनकी दीक्षा रोकने के बहुत प्रयत्न किए। किन्तु मोहिनी जी निर्मोहिनी बन गईं और अपने निर्णय पर अडिग रहीं, अन्ततोगत्वा माता मोहिनी की दीक्षा का कार्यक्रम बहुत ही उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ, जो कि अजमेर नगर के लिए ऐतिहासिक अवसर था। दीक्षा के दिन मोहिनी जी के सिर के बाल छोटे थे क्योंकि उन्होंने एक माह पूर्व ही अपने केश काटे थे अतः छोटे केशों का लुंचन करना बड़ा कठिन था। जब ज्ञानमती माताजी ने चुटकी से इनके केश निकालना शुरू किया तो सारा सिर लाल-लाल हो गया उस समय माता मोहिनी के पुत्र-पुत्री

और कुटुम्बी ही क्या अनेक देखने वाले लोग भी खूब रोने लगे और मोहिनी के साहस एवं वैराग्य की प्रशंसा करने लगे। उस समय दीक्षा के अवसर पर अनेक साधुओं ने निर्णय लिया कि चूँकि माता मोहिनी साक्षात् रत्नों की खान हैं अतः इनका 'रत्नमती' यह सार्थक नाम रखना चाहिए, तब आचार्य श्री धर्मसागर महाराज ने इन्हें "आर्यिका रत्नमती माताजी" के नाम से सम्बोधित किया।

आर्यिका श्री रत्नमती माताजी ने दीक्षा के पश्चात् पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के संघ में रहते हुए 13 चातुर्मास किए और दीक्षा के पूर्व तो अनेक ग्रंथों के स्वाध्याय किए ही थे, दीक्षा के पश्चात् चारों अनुयोगों के ग्रंथों का अच्छी तरह स्वाध्याय किया। समय-समय पर, आगत यात्रियों, महिलाओं, बालिकाओं को धर्म का उपदेश देकर देवदर्शन, पूजन, रात्रि भोजन त्याग, स्वाध्याय आदि का वे उपदेश देती थीं और दर्शनार्थ आने वाले जैनेतर बंधुओं को मद्य, मांस, मधु त्याग की प्रेरणा देती रहती थीं। आर्यिका रत्नमती माताजी का स्वास्थ्य पित्त प्रकोप की बहुलता से युक्त था। इनका आहार अति अल्प था, मूंग की दाल के पानी में भीगी दो रोटी और लौकी की उबली सब्जी मात्र वे लेती थीं तथा थोड़ी सी दूध की दलिया, थोड़ा सा दूध, अनार का रस और कभी-कभी थोड़ा सा फल, बस यही उनका आहार था। इनके इतने अधिक पथ्य को देखकर कभी-कभी वैद्य भी हैरान होकर कहते थे कि माताजी! श्रावक आहार में जो आपको देता है, सो यदि आपका त्याग न हो, तो ले लिया करें। मौसम में आने वाले फल तथा खिचड़ी, चावल भी ले लिया करें, किन्तु ये किसी की नहीं सुनती थीं। घर में भी यह अपनी सन्तानों को भी ऐसे ही पथ्य कराती रहती थीं, यही कारण है कि इनके पुत्र-पुत्रियों में खाने की जिह्वा लोलुपता नहीं दिखती है। आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का प्रायः सब त्याग है, मात्र दो अन्न, दो रस और गिने-चुने फल और उसमें भी अक्सर उनका भी त्याग कर देती हैं, महीने में कई दिन नीरस भोजन करती हैं एवं अष्टमी-चतुर्दशी को तो उनका सदैव अन्न का त्याग रहता है।

आर्यिका श्री रत्नमती माताजी प्रातः 3 बजे उठकर महामंत्र का जाप्य करके अपररात्रि स्वाध्याय में तत्त्वार्थसूत्र का पाठ कर पुनः सहस्रनाम, भक्तामर, त्रिलोकवंदना, निर्वाणकाण्ड आदि स्तोत्रों का पाठ करती थीं। 7 से 8 बजे तक सामूहिक स्वाध्याय में बैठतीं, अनन्तर आहार के बाद सामायिक कर विश्राम करती थीं। पुनः 2 बजे से 4 बजे तक मनोयोगपूर्वक स्वाध्याय सुनती थीं, अनन्तर वृद्धावस्था के कारण कुछ क्षण शरीर की सेवा करवाकर दैवसिक प्रतिक्रमण करतीं पुनः सायंकाल भगवान के दर्शन कर सामायिक करती थीं। रात्रि में सर्दी के दिनों में तो पूर्वरात्रिक स्वाध्याय में छहढाला का पाठ पढ़ती या सुनती थीं। इन्हें छहढाला से विशेष प्रेम था, यदि किसी कारणवश यह छहढ़ाला न सुन सकें, तो उन्हें लगता कि मैंने कुछ सुना ही नहीं है। इस प्रकार वे अपनी आगम चर्या का पूर्णतः पालन करती थीं। यदि कदाचित् पित्त प्रकोप आदि से विशेष अस्वस्थ रहती थीं, तो संघस्थ आर्यिकाएँ उन क्रियाओं को सुनाती थीं। इन्हें ऋषिमण्डल स्तोत्र और उसके मंत्र से भी विशेष प्रेम था। इनकी अस्वस्थता के कारण प्रायः संघ में चैत्यालय रहता था फिर भी मंदिर जाकर भगवान का दर्शन करके ही इन्हें संतोष होता था। पित्त प्रकोप होने से इनके शरीर के लिए उपवास हितकर नहीं था, फिर भी व्रतों का प्रेम और सल्लेखना विधि की भावना से पंचमेरु आदि व्रत उपवासपूर्वक किया करती थीं।

इनकी सबसे बड़ी विशेषता थी – इनकी निरभिमानता। ये कभी ज्ञानमती माताजी का नाम न लेकर उन्हें 'माताजी' कहकर ही सम्बोधित करती थीं। वास्तव में धन्य थीं उनके जीवन की वह घड़ियाँ, जब 15 जनवरी 1985 – माघ कृ. नवमी को उन्होंने पूज्य माताजी के चरण सानिध्य में हृदयस्पर्शी आध्यात्मिक संबोधन प्राप्त कर सल्लेखना विधिपूर्वक जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में समाधिमरण किया। दिन में 1 बजकर 45 मिनट पर इस नश्वर शरीर से वह दिव्यआत्मा निकलकर देवलोक में जाकर विराजमान हो गई। यूँ तो एक जगतमाता के हमारे बीच से जाने पर एक अपूरणीय क्षति हुई फिर भी मृत्यु से संघर्ष करना वीरता का परिचायक है और यह निश्चित है कि शीघ्र ही उन्हें सिद्धगति की प्राप्ति होगी।

पूज्य आर्यिका श्री रत्नमती माताजी के जीवन में 13 का अंक विशेष शुभ रहा। 13 सन्तानों को जन्म देने वाली, दीक्षा लेकर 13 प्रकार के चारित्र का परिपालन कर 13 वर्ष तक दीक्षित जीवन में रहकर उन्होंने सदैव स्व-परकल्याण का भाव रखा।

ऐसी तपःपूत रत्नों की खान, निरभिमानी, वात्सल्यमयी, अनमोल निधि की प्रदात्री माता रत्नमती जी शीघ्र ही सिद्धगति की प्राप्ति करें, उनके चरण कमलों में कोटिशः वंदन –

अनेकरत्नैरतिदीप्तिमद्भिः, यथा प्रसूतैः समलंकृतोर्वी।
अन्वर्थसंज्ञामनवद्यकीर्तिम्, तामार्यिकां रत्नमतीं नमामि।।

प्रस्ताविकी-5

स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के तीन महत्वपूर्ण वक्तव्य

ज्ञानज्योति रथ प्रवर्तन के समय इम्फाल (आसाम) में

मुख्यमंत्री जी को अंग्रेजी भाषा में ब्र. रवीन्द्र कुमार जी द्वारा बताये गये ज्ञानज्योति के उद्देश्य-26 अक्टूबर 1984

Respected Chief Minister Sri Resong Kresing, Health Minister Sri Radha Vinod and all the gentle man!

Jambudweep Gyan Jyoti was inaugurated by the Prime Minister Smt. Indira Gandhi on 4th June, 1982 at Red Fort Ground, Delhi, by the blessings of Her Holiness Jain Saint 'Sri Gyanmati Mataji'.

Mataji is a renowned author, meditator and devotee of the Jain Society. Her entire life right from the childhood has been spent in the reading of Literatures.

From 4th June, 1982 upto now Gyan Jyoti has gone in all over India-Rajasthan, Bengal, Bihar, Maharashtra, Karnataka, Tamilnadu, Madhya Pradesh and Gujrat also. From 14th date of this month Gyan Jyoti came in Assam and first function was held in Gauhati.

Now we want to know what is Jambudweep Gyan Jyoti. The name of the foremost 'island' in this central world is Jambudweep. This island is expanded over one lakh yojanas-means forty crore miles and in its one part, Bharat Khetra is 190th part of Jambudweep comprising an area of 526 yojanas only. And present total world is a little part of Bharat Khetra. Now this institution wants to research in this subject, which is unknown to present human beings. Only for this the construction of Jambudweep is being created in Hastinapur holy and historical place, which is established only 100 Km. away from Delhi and in this Gyanjyoti a small model of that Jambudweep which is being created in Hastinapur, has fixed to understand the peoples in all over India. Looking at this map one can easily have knowledge of the size and shape of the Globe.

The aim of Gyan Jyoti Pravartan is first to give the knowledge and philosophy of Jambudweep to all the country men. Secondly, to help in establishing atmosphere of religious toleration among the different religions. Third aim to propogate the tenets of Anuvrat like non-violence, truth, non-stealing, celibacy and non attachment for the happiness, peace and prosperity of all and other aim to inspire character-building.

The description of Jambudweep has not only been given by the Jaina Scholars since two thousands years in their various scripture like 'Triloksar', 'lok Bibhag', 'Tiloyapannatti', 'Moksha Shastra' etc. but also by the vedic religious books like 'Agni Purana', 'Vayu Purana', 'Vishnu Purana', 'Shrimad Bhagwat', 'Yogdarshan' and Boddha religious books 'Nikaya Majihima-Nikaya' and 'Sut Nikin".

It is for the first time that such a geographical map is being created in India.

In the middle of this creation, 101 feet high the 'Sumeru Parvat' is already constructed on which stand 16 Jain idols, Stairs have been provided from inside to reach the top of the Sumeru. The remaining construction work is going to complete. With in 6 months after it, the Jambudweep Panchkalyanaka Function will be held from 28 April of 1985.

Hastinapur Pilgrimage has been the centre of many historical events.

In all over India, Gyan Jyoti was welcome by the Governors, Chief Ministers and Ministers. Today in Imphal, honourable Chief Minister of

Manipur State and Health Minister welcome Gyan Jyoti. We are very happy and giving many thanks by the central committee of Gyan Jyoti Pravartan, Hastinapur and all the Jain society of Manipur State.

Now we will very happy by your immediate visit to this sacred place of Jambudweep at Hastinapur.

Thanking You.

धर्मप्रभावना हेतु विदेश की भूमि पर स्वस्तिश्री स्वामी जी

विश्वशांति शिखर सम्मेलन (न्यूयार्क) में कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन द्वारा भगवान ऋषभदेव का उद्घोष

समापन सत्र (31-8-2000, Waldorf Astoria Hotel, Newyork)

मैं आज प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ कि सम्पूर्ण विश्व में शांति, मैत्री और सुभिक्षता स्थापित करने के लिए समस्त विश्व के धर्माचार्य संयुक्त राष्ट्र संघ के आमंत्रण पर यहाँ एकत्रित हुए हैं। युद्ध की विभीषिका में जलते हुए विश्व में शांति की शीतल जलधारा कैसे प्रवाहित हो, उसी के लिए यह प्रयास किया गया है।

मैं उस पवित्र भारत भूमि से यहाँ आया हूँ जहाँ की हर श्वास में आध्यात्मिकता, त्याग, तपस्या एवं अहिंसा की सुगंध है। उस पावन धरा पर न जाने कितने ही ऋषियों-मुनियों ने जन्म लेकर सारे वातावरण को अपने त्याग से सुवासित किया है। करोड़ों-करोड़ों वर्ष पूर्व इसी भारत देश की अयोध्या नगरी में शाश्वत जैनधर्म के वर्तमान युग के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव ने जन्म लिया। वही महापुरुष थे जो मानवीय संस्कृति के आद्य प्रवर्तक थे। सर्वप्रथम उन्होंने ही जीवनयापन की कला सिखाई-असि, मसि, कृषि, विद्या, वाणिज्य एवं शिल्प का उपदेश दिया।

भगवान ऋषभदेव ने ही विश्व को सर्वप्रथम राज्य को संचालित करने की कला सिखाई, उन्होंने ही विवाह परम्परा का सूत्रपात किया, अपनी पुत्रियों ब्राह्मी और सुंदरी को क्रमशः अक्षर विद्या एवं अंक विद्या सिखाकर 'शिक्षा' का शुभारंभ किया। उन्होंने समस्त राजाओं को राजनीति की शिक्षा देते हुए कहा कि मात्र अपनी स्वतंत्रता को ही हम सर्वोपरि न मान लें, उसके साथ दूसरे के अस्तित्व का भी हमें ध्यान रखना चाहिए।

हम देख रहे हैं कि आज विश्व में शस्त्रों की होड़ मची हुई है, जगह-जगह युद्ध, अशांति, कलह और वैर का वातावरण छाया हुआ है। इस सम्मेलन में सभी धर्माचार्यों के विचारों से यह बात पूरी तरह स्पष्ट हो गई है कि आज हमें दूसरे के प्राणों का हरण कर लेने वाले शस्त्रों की आवश्यकता नहीं बल्कि सभी के प्राणों की रक्षा करने वाले महापुरुषों के अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह जैसे सुंदर शस्त्रों की आवश्यकता है, ये ऐसे शस्त्र हैं जिनको धारण करने से परस्पर एक दूसरे के प्रति कोमलता की, सहृदयता की एवं मैत्री की भावना विकसित होती है, अपने विकास के साथ-साथ दूसरे की उन्नति भी हमें अच्छी लगने लगती है, दूसरों के दुःख हमें अपने प्रतीत होने लगते हैं। आज के विश्व को धर्मगुरुओं के वैचारिक उद्बोधन की जरूरत है, सही विचारधारा को जन-जन में स्थापित करने की जरूरत है और यह कार्य धर्मगुरु की कुशलतापूर्वक कर सकते हैं।

धर्मगुरुओं द्वारा बताई गई नीतियों में विकृति लाकर विश्व ने आज अपने लिए समस्याएँ उत्पन्न कर ली हैं इसमें दोष हमारा अपना है। अहिंसा के सिद्धांत में युद्ध की विभीषिका से शांति के साथ-साथ पर्यावरण का संरक्षण भी होता है, जिसके लिए आज अनेक देश की सरकारें प्रयासरत हैं। भगवान ऋषभदेव की धर्मनीति ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति आदि सभी में जीव मानकर इन सभी के प्राणों की रक्षा का उपदेश करोड़ों वर्ष पूर्व ही दिय था। उनका अपरिग्रह का सिद्धान्त गरीबी दूर करने में आधारभूत है क्योंकि हर देश में कतिपय स्वार्थी हाथों में संग्रह की वृत्ति होने के कारण ही बाकी सामान्य जनता को गरीबी की समस्या से जूझना पड़ता है।

मेरी गुरु एवं भारतीय जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने वर्तमान में संसार भर के लिए इन सिद्धांतों की आवश्यकता को महसूस किया इसीलिए

उन्होंने भगवान ऋषभदेव के नाम एवं उनके सर्वोदयी सिद्धांतों को जन-जन में और संसार के कण-कण में पहुँचाने का महान लक्ष्य बनाया है। इसके लिए उन्होंने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कई कार्यक्रम आयोजित करने की प्रेरणा दी है। इस विश्वशांति शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए उन्होंने मुझे यहाँ भेजा है, उनकी यही मंगल प्रेरणा है कि विश्व की ज्वलंत समस्याओं का यदि कोई हल है तो वह है 'आपसी सौहार्द' तथा 'जिओ और जीने दो' का अमर सिद्धांत। भगवान महावीर जो इस युग में जैनधर्म के अंतिम 24वें तीर्थंकर हैं, उन्होंने भी 2600 वर्ष पूर्व इन्हीं सिद्धांतों को विश्व के सम्मुख रखा था।

अंत में मैं इस अनूठी परिकल्पना के संयोजन को मूर्तरूप देने वाले सम्मेलन के महासचिव श्री बावा जैन को सम्पूर्ण भारतीय जैन समाज की ओर से हार्दिक बधाई देता हूँ, जिन्होंने इस जिम्मेदारी का सफलतापूर्वक निर्वहन करके दुनिया भर के धर्माचार्यों को एक मंच पर लाने का यह पुरुषार्थ किया है और उनके नाम के माध्यम से विश्व के कोने-कोने में शांति का संदेश पहुँचाने का यह प्रयास निश्चित ही सराहनीय हैं एक उच्च कोटि के उद्देश्य की प्राप्ति में आधार बनकर बावा जैन ने जैन समाज के मस्तक को गौरवान्वित कर दिया है।

विश्वभर के समस्त धर्माचार्यों द्वारा चार दिनों तक जो बहुमूल्य विचार प्रस्तुत किये गये हैं, उनका सार जब हम अपनी-अपनी मातृभूमि पर अपने लोगों के बीच में क्रियान्वित करेंगे, तभी इस शिखर सम्मेलन की सार्थकता सिद्ध हो पावेगी। सम्पूर्ण विश्व में शांति हो, सुभिक्षता हो, मैत्री हो, समन्वय हो, यही मेरी भगवान ऋषभदेव से प्रार्थना है।

भगवान पार्श्वनाथ कमल मंदिर, शिर्डी (महा.)के शिलान्यास अवसर पर

4 दिसम्बर 2011 को शिर्डी में स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी द्वारा प्रस्तुत अत्यन्त मार्मिक एवं प्रभावी वक्तव्य

''स्वामी जी के निःसंकोच, निर्भीक, निश्छल, सटीक एवं स्पष्ट कार्यनीति से युक्त व्यक्तित्व को जानने के लिए एक बार अवश्य पढ़ें यह वक्तव्य''

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृतां।
ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां, वन्दे तद्गुणलब्धये।।

आज शिर्डी में प्रथम बार भगवान पार्श्वनाथ जो हमारे संकटमोचक हैं, जो हमारे विघ्नों के नाशक हैं, चिंताओं के नाशक हैं, ऐसे पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा विराजमान करने का और एक भव्य उत्तुंग कमल मंदिर बनाने का शिलान्यास समारोह रखा गया है। इस कार्यक्रम में आज देश के कोने-कोने से और महाराष्ट्र के अनेक प्रान्तों से भक्तगण आये हैं। आप सभी लोगों ने पीठाधीश बनने के उपलक्ष्य में मेरा यहाँ पर सम्मान भी किया।

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी और उनके परिवार के उनके भाई होने का मुझे गौरव प्राप्त है। हम 13 भाई-बहन हैं और उसमें मैं अपने माता-पिता की 9वीं संतान हूँ। जब मैं दो साल का बालक था, तब उस समय मुझे ज्ञानमती माताजी छोड़कर आई थीं। उसके बाद जबसे मैंने माताजी को देखा, तब से बहन के रूप में न देखकर उनको आर्यिका, साध्वी के रूप में ही देखा है। ज्ञानमती माताजी ने, सन् 1968 में जब मैं शायद पहली बार माताजी के दर्शन के लिए प्रतापगढ़ (राज.) में आया था, उस समय मुझे समझा-बुझाकर दो साल का ब्रह्मचर्य व्रत दिया और यह संकल्प कराया कि जब शादी और व्यापार की चर्चा चले तो मेरे पास होकर जाना और उसके बाद आगे बढ़ना।

लखनऊ विश्वविद्यालय से पढ़ने के बाद जब माताजी के पास मैं पुनः आया तो माताजी ने समझा-बुझाकर मुझे आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का संकल्प दिलाया। वह व्रत सन् 1972 में आचार्य धर्मसागर जी महाराज जो आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के तृतीय पट्टाचार्य थे, उनसे उस व्रत को प्राप्त करने का अवसर और सौभाग्य मिला। सन् 1972 के बाद पूज्य माताजी के साथ मैं इस प्रकार रहा जैसे पूज्य माताजी के साथ ब्र. मोतीचंद जी और ब्र. यशवंत कुमार जी सनावद वाले रहे। ये दो युवा पूज्य माताजी के साथ सन् 1968 के बाद से आये थे। यशवंत कुमार जी ने पूज्य माताजी की प्रेरणा से मुनि दीक्षा ली और मुनि वर्धमानसागर बन गये। उसके बाद भी मुनि वर्धमानसागर जी लगातार कई वर्षों तक

पूज्य माताजी के पास रहे और वे आज आचार्य वर्धमानसागर जी महाराज के रूप में हैं। उनके दूसरे शिष्य थे मोतीसागर जी, मोतीचंद जी थे। उन्होंने सन् 1987 में क्षुल्लक दीक्षा ली और पूज्य माताजी ने उन्हें पीठाधीश पद पर अभिषिक्त किया।

सन् 1987 में जब मोतीसागर जी महाराज को पीठाधीश बनाया गया, तो उन्होंने कहा कि पूज्य माताजी! चूँकि मैं क्षुल्लक हूँ, मेरे हाथ में पिच्छी-कमण्डलु है इसलिए मैं संस्था का अध्यक्ष पद स्वीकार नहीं करूँगा। मैं किसी भी बैंक के चेक पर हस्ताक्षर या किसी प्रकार का लेन-देन अपने हाथ से नहीं करूँगा। मैं अपने क्षुल्लक व्रत का पालन करते हुए पीठाधीश पद का निर्वाह करूँगा। उनका मार्गदर्शन पीठाधीश के रूप में हमारे दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान को और उससे संबंधित जितनी भी संस्थाएँ रहीं, उन सभी को बराबर 24 साल से प्राप्त होता रहा और उन्होंने अपने व्रतों का पूरा निर्वाह करते हुए अभी 10 नवम्बर 2011, कार्तिक शु. पूर्णिमा को समाधिमरण पूज्य माताजी के सान्निध्य में मुनि अवस्था में प्राप्त किया। उनका लंगोट और चादर हटा दिया गया और उनका समाधिमरण हो गया। अगले दिन ही पूज्य माताजी ने विचार करके कि एक पीठाधीश का अवसान हुआ अतः दूसरा पीठाधीश नियुक्त करना है इसके लिए पूज्य माताजी ने निश्चय किया। मैंने काफी मना किया, मैंने कहा कि नहीं, मेरे को मुनि दीक्षा लेनी है और समय अब निकल चुका है, लेकिन माताजी ने कहा कि नहीं, इस संस्था को अभी संचालित करना है और सबसे बड़ा कार्य जो है, मांगीतुंगी में 108 फुट मूर्ति का अभी वह अधूरा है, जब तक उस मूर्ति को बनाकर तुम सामने नहीं लाते हो, उसका पंचकल्याणक सम्पन्न नहीं होता है, तब तक तुमको पीठाधीश के पद पर रहना है ऐसा पूज्य माताजी ने घोषित किया और 20 नवम्बर को ही माताजी ने मुझे 10वीं प्रतिमा के व्रत देकर हस्तिनापुर में पीठाधीश का पद प्रदान किया।

10वीं प्रतिमा माताजी ने मुझे इसलिए दी कि इसमें जो पहली प्रतिमा से नवमी प्रतिमा तक हैं वह मध्यम श्रावक का कथन हमारे आगम के अंदर है और 10वीं-11वीं प्रतिमा उत्कृष्ट श्रावक की प्रतिमा मानी गई है। 11वीं प्रतिमाधारी क्षुल्लक और ऐलक होते हैं और उनके पास पिच्छी-कमण्डलु होता है, उनकी कुछ सीमाएँ होती हैं, अनेक उनके नियम होते हैं और उस नियम से कुछ कम नियम 10वीं प्रतिमा में होते हैं, जिससे हम कहीं भी रेल से, हवाई जहाज से, मोटर से, कार से जा सकते हैं। इसीलिए पूज्य माताजी ने 11वीं प्रतिमा न देकर मुझे 10वीं प्रतिमा देकर पीठाधीश का पद प्रदान किया।

सन् 1955 में जब आचार्य शांतिसागर जी महाराज का समाधिमरण हुआ है, उस समय दो महिने तक ज्ञानमती माताजी आचार्य शांतिसागर जी महाराज के पास कुंथलगिरि में क्षुल्लिका के रूप में विराजमान थीं, उन्होंने पूज्य आचार्य शांतिसागर जी महाराज से जो चर्या, जो आगम, जो ज्ञान प्राप्त किया, उसके अनुसार उन्होनें कहा कि सातवीं प्रतिमा के बाद जो प्रतिमा ली जाती है, उसमें सफेद वस्त्र बदलकर लाल वस्त्र दिये जाते हैं, आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा में आज भी जो क्षुल्लक, ऐलक की दीक्षा लेते हैं, उनको लाल वस्त्र प्रदान किये जाते हैं, लाल यानि कि गेरुए वस्त्र। उसके अनुसार पूज्य माताजी ने हमारे सफेद वस्त्र हटा करके और हमको लाल वस्त्र दिए हैं। आगम और आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के अनुसार व्रत, नियम हमें प्रदान किये।

पिछले 40 साल से जो भी पूज्य माताजी ने हमसे कहा और जो हम उनकी आज्ञा का पालन करके जो कुछ भी कर सकते थे, चाहे वह हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना और अन्य रचनाओं का निर्माण का कार्य हो, चाहे अयोध्या जो पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि है वहाँ का विकास कार्य हो, मस्तकाभिषेक हो, चाहे काकंदी जो अत्यन्त उपेक्षित थी, हमारे निर्मल जी सेठी बैठे हैं, उनकी फ्लोर मिल है गोरखपुर में, और ये भी चाहते थे कि किसी भी तरह से काकंदी जो पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि हैं जहाँ साल में 10 यात्री भी नहीं जाता है, जहाँ 2000 रुपये महिने की आमदनी भी नहीं हो और एक कर्मचारी की तनख्वाह गोरखपुर की जैन समाज चंदा करके देती हो, ऐसे काकंदी तीर्थ पर पूज्य माताजी की पावन प्रेरणा से पिछले वर्ष हमने 9 फुट के ग्रेनाइट पाषाण के भगवान विराजमान करके भव्य विशाल मंदिर का निर्माण कराया। ऐसे उपेक्षित तीर्थ जहाँ-जहाँ हमारे तीर्थंकर भगवन्तों ने जन्म लिया, उन तीर्थों के विकास में पूज्य माताजी की दृष्टि गई।

पूज्य माताजी ने अपने नाम से किसी तीर्थ का निर्माण नहीं करवाया, उनका कहना है कि हमारे 24 तीर्थंकर भगवान की 16 जन्मभूमियाँ हैं, अगर वह जन्मभूमियाँ उपेक्षित हैं, तो उनका विकास अगर हम कुछ कर सकते हैं, तो अवश्य करें। हमने कभी भी 50 करोड़, 100 करोड़, 25 करोड़ की कोई योजना हाथ में नहीं ली। छोटी-छोटी योजना ली और उस कार्य को हमने एक-दो साल के अंदर पूरा किया। आप लोग यहाँ बैठे अनेक प्रान्तों के लोग, जिन्होंने भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर को देखा हो, पूज्य ज्ञानमती माताजी वहाँ गईं, 22 महीने तक वहाँ कच्चे कमरों में रहकर, टीन के कमरों में रहकर उस कुण्डलपुर तीर्थ को बनाया और केवल

2601-2601 रुपये आप लोगों से लेकर और उससे बड़ी राशि 26001 रुपये लेकर उस कुण्डलपुर तीर्थ को आज स्वर्ग जैसा बनाया और वहाँ पर सुन्दर निर्माण हुआ नंद्यावर्त महल का, जिस महल के अंदर राजा सिद्धार्थ ने रानी त्रिशला ने भगवान महावीर को बालक के रूप में जन्म दिया था, उस महल का नाम नंद्यावर्त महल, सात मंजिल का उस महल का निर्माण वहाँ पर किया गया।

उस बिहार प्रदेश के मुख्यमंत्री एक बार आराम से बैठे हुए थे कुण्डलुपर में नंद्यावर्त महल में। उन्होंने बार-बार मेरे से पूछा कि भाई जी! आप यह बताओ कि इस निर्माण में आपका कितना रुपया लगा है। हमने कहा, मंत्री जी! सामान लोग भेज देते हैं, कोई ईंट भेजता है, सरिया भेजता है, कोई सीमेंट भेजता है, मैं लगा देता हूँ। मुझे नहीं मालूम कितना पैसा लगा। उनने कहा-फिर भी कितना लगा, मैंने कहा कि दो से ढाई करोड़ रुपये इस तीर्थ के पूरे निर्माण में जमीन खरीदने से लेकर पूरे निर्माण में हमारा दो से ढ़ाई करोड़ रुपया लगा है। उन्होंने आश्चर्य चकित होकर कहा कि ''अगर मेरी सरकार को बनाना होता, तो हो सकता है मेरा यह काम काफी राशि और समय लगाकर पूरा हो पाता। आप सबको एवं जैन समाज को और ज्ञानमती माताजी को मैं बहुत बधाई देता हूँ'', यह शब्द मुख्यमंत्री नीतीश कुमार जी के हैं। उन्होंने कहा कि ''आपने यहाँ आकर के और हमारे बिहार प्रदेश का एक ऐसा दर्शनीय स्थल बना दिया है, भगवान महावीर के जन्मभूमि के रूप में, जो हमारा पर्यटन विभाग है, उसके लिए एक तीर्थ दिया है, एक स्थान दिया है, जहाँ घूमने के लिए, देखने के लिए पर्यटक आते हैं।'' आज हमें कहते हुए खुशी है कि आज भी वहाँ पर प्रतिदिन शिक्षण संस्थाओं की बसें और उनके बालक आकर के और कुण्डलपुर के भगवान महावीर के दर्शन करते हैं और उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। ऐसे तीर्थों के निर्माण में पूज्य माताजी ने प्रेरणा प्रदान की, हम लोगों ने समाज को जोड़कर के छोटी-छोटी सी राशि से उन तीर्थों को निर्मित किया।

आज अवसर आया इस शिर्डी तीर्थ के निर्माण का। कई साल से योजनाएं चल रही थीं। हमारे कोपरगांव के लोग, हमारे राजाभाऊ पाटनी, हमारे औरंगाबाद के लोग, कई बार पूज्य माताजी के पास गये, कि थोड़ा सा शिर्डी की तरफ ध्यान दीजिए और शिर्डी का जो मंदिर बनाना है, उसका निर्माण शीघ्र हो जाये। आज का यह मुहूर्त निकला, अत्यन्त शुभ मुहूर्त है मगसिर शुक्ला दशमी आज सिद्धी योग, बहुत सुन्दर मुहूर्त है और पूर्णा तिथि है, रविवार का दिन है, यह दिन पूज्य माताजी ने हमें प्रदान किया कि आप लोग जाकर के वहाँ शिलान्यास करो, मंदिर का निर्माण करो।

हमारे बीच में राजाभाऊ पाटनी बैठे हैं, वे हमारे ट्रस्ट के महामंत्री हैं। आज मैं उनकी प्रशंसा इसलिए कर रहा हूँ कि आज उनके जीवन के अंदर यह पहला कार्य होगा कि इस मंदिर का निर्माण उनके परिवार की ओर से होगा, उनके द्वारा शिलान्यास होगा, इस मंदिर के निर्माण कराने का श्रेय और पुण्य इस परिवार को प्राप्त हो रहा है। उन्होंने जीवन के अंदर करोड़ों रुपये कमाए होंगे, खर्च किए होंगे, लेकिन उनके जीवन का सबसे बड़ा शिखर और कलश यह शिर्डी के मंदिर का निर्माण होगा, यहाँ कमल मंदिर का निर्माण होगा। और भी हमारे लोग हैं। जैसे सुभाषचंद जी साहू ने कहा कि मैं अतिथि भवन का शिलान्यास करूँगा।

आप लोगों ने एक-एक फ्लैट बोले, ऐसे एक-एक करके हो जायेंगे, धीरे-धीरे हो जायेंगे। हमने छोटी-छोटी राशि से सब काम किया है। 5100/-5100/-रुपये की राशि देकर तथा किसी ने 51000 रुपये की राशि घोषित की, 11000/-रुपये की राशि घोषित की है, किसी ने 5100/-रुपये की राशि घोषित की है, आपका यह पैसा जैसा कि हमने 2600-2600 रुपये से कुण्डलपुर का निर्माण किया है, उसी प्रकार से इस ज्ञान तीर्थ शिर्डी के निर्माण का जो सूत्रपात आपने किया है, जो उत्साह बढ़ाया है 5100-5100 रुपये देकर, यह राशि आपकी नींव का पत्थर है। यह राशि आपके 5100 नहीं 51 लाख के बराबर है। और आने वाले समय में साल-दो साल के अंदर ये तीर्थ आपको देखने को मिलेगा और आप कहेंगे मेरा 5100/-रुपये लगाना, 51000/- लगाना यहाँ पर सार्थक हो गया।

बंधुओं! मैं 5 दिन से इस महाराष्ट्र में आया हूँ। जिस दिन से औरंगाबाद में आया 30 नवम्बर की शाम को 5 बजे, उस शाम को 5 बजे से लेकर, ऐरोड्रम से लेकर आज तक जो पीठाधीश पद का मेरा आपने सम्मान किया है, यह वस्तुतः मेरा सम्मान नहीं है। यह व्यक्ति का सम्मान नहीं है। ये पूज्य ज्ञानमती माताजी की भावनाओं का सम्मान है। उनकी भावना है कि जो तीर्थ हम करोड़ों की सम्पत्ति से बनायें, उस तीर्थ का संरक्षण हमारा कोई न कोई व्रती पीठाधीश जो गृह विरत हो, जिसके पीछे घर की कोई चिंताएं नहीं हों, परिवार की कोई चिंता नहीं हो, उद्योग की कोई चिंता न हो, व्यापार की चिंता नहीं हो, ऐसा कोई व्रती व्यक्ति इस तीर्थ को संभालता रहे, इन भावनाओं के साथ पूज्य माताजी ने मुझे पीठाधीश का पद समर्पित किया है, मैं पूज्य माताजी के चरणों में नमन करता हूँ। आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज को हमने नहीं देखा,

आचार्य श्री वीरसागर महाराज को हमने नहीं देखा, लेकिन उस परम्परा के आचार्य श्री शिवसागर जी, श्री धर्मसागर जी, श्री अजितसागर जी, श्री अभिनंदनसागर जी, श्री वर्धमानसागर जी और उस परम्परा से रिलेटेड जितने आचार्य हुए हैं, आचार्य देशभूषण जी, आचार्य विमलसागर जी, सुबलसागर जी इन सब आचार्यों के मैंने दर्शन किये हैं और उनके भी अनुभव मैंने प्राप्त किए हैं। मैं उन सभी आचार्यों के चरणों में परोक्ष रूप से वंदना करता हूँ।

आज हमारे अरहनाथ भगवान जो हस्तिनापुर के जन्मे हुए भगवान हैं, उनका दीक्षाकल्याणक है, वे तीर्थंकर हैं, कामदेव हैं, चक्रवर्ती हैं। हस्तिनापुर एक ऐसी धरती है, जहाँ तीन तीर्थंकर हुए हैं। अन्य तीर्थंकर के साथ 21 तीर्थंकर न तो चक्रवर्ती थे, न कामदेव थे। शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ तीन भगवान तीर्थंकर भी थे, चक्रवर्ती भी थे, और कामदेव भी थे। यानि तीर्थंकर के रूप में, चक्रवर्ती के रूप में जिन्होंने छह खण्ड का शासन हस्तिनापुर से किया हो, ऐसे अरहनाथ भगवान का आज दीक्षाकल्याणक भी है। उनके चरणों में आज मैं परोक्ष में नमोस्तु करता हूँ।

और आप सब की जो शुभकामना हमें प्राप्त हुई हैं, ये सम्मान जो आपने माला से किया है, ये तो आप किसी का भी करते हैं, कर सकते हैं, ये सम्मान माताजी की भावनाओं का है और आपका जो स्नेह, आपका जो विश्वास, आपकी जो श्रद्धा मेरे अंदर है, मैं तो यही चाहता हूँ कि इस श्रद्धा के अंदर इस विश्वास के अंदर, मैं आगे भी इसी प्रकार से चलता रहूँ। जो रुपया आज तक मुझे समाज से प्राप्त हुआ है। आज तक जहाँ की जिस योजना में मुझे पैसा मिला है, मांगीतुंगी का पैसा मांगीतुंगी में लगा, काकंदी का पैसा काकंदी में लगता है, शिर्डी का पैसा शिर्डी में लगेगा, हस्तिनापुर का पैसा हस्तिनापुर में लगेगा। सब जगह के बैंक एकाउण्ट बिल्कुल अलग हैं, सबके पदाधिकारी लोग उसका संचालन करते हैं। हमारी किसी भी संस्थान में जो भारत सरकार का नियम है, कि ट्रस्ट हो या सोसायटी हो, उस प्रकार से हमारे रजिस्टर्ड ट्रस्ट या सोसायटी हैं और उसमें तीन में से दो हस्ताक्षर से पैसा निकले एवं जमा हों, वही परिपाटी है, हमारे यहाँ किसी भी संस्थान में एक हस्ताक्षर से पैसा बैंक से निकालने का किसी भी कमेटी में किसी को अधिकार आज तक 40 साल के अंदर भी नहीं दिया गया है, न आगे दिया जायेगा। पूरा संचालन पैसे का, बैंक का हमारे तीन में से दो हस्ताक्षर से होता है। वही व्यवस्था यहाँ शिर्डी में रहेगी। शिर्डी के अंदर अभी कार्यालय नहीं बना है, अभी यह खेत है। निर्माण होगा, थोड़ा समय लगेगा। इसलिए जिन बंधुओं ने यहाँ पर पैसे बोले 5100/-रुपये, 51000/-रुपये, या 3 लाख रुपये कमरे के लिए, वे हमारे महामंत्री राजाभाऊ पाटनी, नासिक के पास भेजकर आप रसीद लें। यहाँ पर हमारे शिर्डी के अंदर भाई किशोर जी गंगवाल हैं, सूरजमल गंगवाल हैं, इसके ट्रस्टी हैं यहाँ के स्थानीय हैं, उनके पास आप पैसा दे सकते हैं, उनके पास रसीद बुक रहेगी। वो आपको रसीद देकर आपका पैसा लेंगे और ट्रस्ट में पैसा जमा होगा। जिन लोगों को सुविधा हो, हस्तिनापुर में भी चेक और ड्राफ्ट भेज सकते हैं, वहां भी पैसा दे सकते हैं, वहाँ जो भी पैसा जमा होगा, वह पैसा शिर्डी में आयेगा।

जैसे आज मांगीतुंगी में प्रतिमा का निर्माण हो रहा है, मांगीतुंगी प्रतिमा के निर्माण का बैंक एकाउण्ट सटाणा में भी है, ताहराबाद में भी है, और हस्तिनापुर में भी है। हस्तिनापुर में जितना पैसा मांगीतुंगी के लिए इकट्ठा होता है, सब मांगीतुंगी में लगता है। मैं आपको गौरव के साथ कहता हूँ, आज जो पैसा मूर्ति निर्माण के अंदर लग रहा है, 90 प्रतिशत हम हस्तिनापुर से मूर्ति के लिए इकट्ठा करके मांगीतुंगी भिजवा रहे हैं, मांगीतुंगी में प्रतिमा के लिए 10 प्रतिशत पैसा आता है। अगर हमको 20 लाख रुपये महिने की जरूरत है, तो 2 लाख, 3 लाख, चार लाख रुपये मांगीतुंगी से प्राप्त होता है बाकी हम वहाँ ही लोगों से स्वीकृतियाँ लेकर उसको एकत्र करके हस्तिनापुर से भेजते हैं। हस्तिनापुर में भी हमारा बैंक एकाउण्ट है, यहाँ भी बैंक खाता है, सारा संचालन हमारा व्यवस्थित रूप से अध्यक्ष, महामंत्री, कोषाध्यक्ष के हस्ताक्षर से होता है। इस व्यवस्था की हमने आपको इसलिए जानकारी दी है, कि कई कमेटियों के अंदर कई लोगों के अनेक प्रश्न होते हैं, सब चीजों का खुलासा आपको मालूम होना चाहिए।

ज्ञानमती माताजी ने जिस दिन से संस्थान का निर्माण कराया। हमारे बीच में हमारे संस्थान के महामंत्री कैलाशचंद जी गोधा बैठे हैं, ये खण्डेलवाल जैन हैं, दिल्ली के हैं और जिस दिन से माताजी दिल्ली आईं थी, राजस्थान से, सबसे पहले सन् 1972 में, तब से जुड़े हुए हैं, उस समय ये माताजी का कमण्डलु लेकर चले और आज आप 20 साल से हमारी संस्था के महामंत्री हैं ये कोई करोड़पति नहीं हैं, कार्यकर्ता हैं, इन्होंने कार्य किया है और समाज को यह दिखाया है कि हम भी एक छोटे से व्यक्ति होकर समाज के और माताजी के कार्य को कर सकते हैं। ऐसे-ऐसे कार्यकर्ता पूज्य ज्ञानमती माताजी के साथ जुड़े रहे, जिससे आज सारे काम संभव हो सके। एक एम.एल.ए. से लेकर एक चेयरमैन से लेकर, राष्ट्रपति तक पूज्य माताजी के चरणों में आने का श्रेय माताजी का पुण्य है।

जब हम राष्ट्रपति भवन में गये राष्ट्रपति से मिलने के लिए, सन् 2008 में जब राष्ट्रपति बनीं, उनको ज्ञात हुआ कि माताजी का जन्म सन् 1934 का है, तब उन्होंने बड़े हंसते हुए कहा कि मेरा भी जन्म सन् 1934 का है और ज्ञानमती माताजी के प्रवचन आस्था चैनल पर हमारे पतिदेव रोज सुनते हैं, मुझे बताते हैं कि ज्ञानमती माताजी जैन धर्म के बारे में क्या बोलती हैं। ये शब्द थे राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल के। उन्होंने कहा कि मैं जरूर आऊँगी, माताजी का दर्शन करूँगी और माताजी का आशीर्वाद लूँगी और जिस उत्तरप्रदेश मेरठ मण्डल के अंदर कभी भी राष्ट्रपति 1950 के बाद नहीं आए, पहली बार सन् 2008 में राष्ट्रपति जी का आगमन माताजी के चरणों में हुआ और लोग देख रहे थे कि माताजी राष्ट्रपति जी को किस प्रकार से आशीर्वाद देंगी। जिस प्रकार से जैन साधु को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री को आशीर्वाद देना चाहिए, उसी आगम की परम्परा के अनुसार आगम की रक्षा करते हुए पूज्य ज्ञानमती माताजी ने आशीर्वाद राष्ट्रपति जी को प्रदान किया था 21 दिसम्बर 2008 को। ये सारी बातों की मैंने आपको जानकारी दी है।

हमारे कंधे बहुत छोटे हैं, हमारे हाथ बहुत छोटे हैं, हमारे पास करोड़-करोड़ रुपये के दातार नहीं है। हम छोटे-छोटे दान से 2600-2600 रुपये से, 5100-5100 रुपये, 51000 रुपये से तीर्थों का निर्माण करते हैं, समाज को जोड़ते हैं, हम चाहते हैं कि हर आदमी यह कहे कि यह तीर्थ हमारा है, यह प्रतिमा हमारी है। आज मांगीतुंगी के डा. पापड़ीवाल जी यहाँ बैठे हैं, महामंत्री हैं। आज वहाँ पर हमारे 1550 मेम्बर 108000/-रुपये के हैं। मांगीतुंगी प्रतिमा निर्माण के लिए सारे देश से कोई भी प्रान्त हिन्दुस्तान का बाकी नहीं है जहाँ जैन समाज रहती हो, और उन्होंने मांगीतुंगी के अंदर पैसा नहीं दिया हो। सबने 108000/-रुपये इस प्रतिमा के निर्माण के लिए दिये हैं। हमारे संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन, कमलचंद जैन, खारीबावली, अनिल जी जैन, हमारे भाई कैलाशचंद लखनऊ, हमारे डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल जी ने दिया है। हमारे कस्तूरचंद जी बड़जाते एवं प्रमोद कुमार जी कासलीवाल हैं। उस प्रतिमा निर्माण के लिए कोई 11 रुपये भी देता है, 101/-रुपये भी देता है, तो मैं मानता हूँ कि जिस प्रकार से श्रवणबेलगोल के बाहुबली भगवान पर एक राजा का कलश नहीं ढुर सका था, लेकिन एक गुलिका की छोटी सी कलशी के जल से अभिषेक होकर मस्तक से नीचे आ गया था। इसलिए 101/-रुपये देने वाला भी, 11000/-रुपये देने वाला भी उसी प्रकार से धन्यवाद का पात्र है।

मूर्ति के निर्माण में पता नहीं किसके पुण्य से इतनी बड़ी प्रतिमा का निर्माण हो जाये। हम लोग कौन मूर्ति बनाने वाले हैं, प्रतिमा को क्या भला हम बना सकते हैं, हमारे ट्रस्टी बना सकते हैं, हमारा 108000/-रुपये बना सकता हैं, हमारे पापड़ीवाल जी बना सकते हैं, अनिल जी बना सकते हैं, नहीं, कोई नहीं बना सकते। हमारे इंजीनियर सी.आर.पाटिल बैठे हैं, नहीं बना सकते। इतनी बड़ी प्रतिमा का निर्माण अगर भगवान के यक्ष-यक्षिणी नहीं चाहेंगे, गोमुख यक्ष और चक्रेश्वरी देवी नहीं चाहेंगे, तो हम प्रतिमा का निर्माण कभी नहीं कर सकते। ज्ञानमती माताजी का आशीर्वाद, चक्रेश्वरी देवी का आशीर्वाद, गोमुख यक्ष का आशीर्वाद हमारे साथ में है। इसलिए प्रतिमा के निर्माण को हम आपके सहयोग से, समाज के सहयोग से पूरा करेंगे। दृढ़ संकल्पित हैं कि प्रतिमा जल्दी से जल्दी से बनें लेकिन हम उसमें अधिक जल्दी नहीं कर सकते हैं। कुछ ऐसी चीजे होती हैं, जिसमें हम जल्दी नहीं कर सकते। वहाँ पत्थर की कटिंग चलती है, वायसा मशीन लगी है, वहाँ चेनसा मशीन लगी है। बहुत सावधानीपूर्वक काम करना पड़ता है।

वहाँ रात में महीने में कम से कम 2-4 बार शेर आता है। हमारे कारीगरों को मिलता है। अभी परसों की घटना है, वहाँ एक कारीगर बोला कि मेरे पास से 10 फुट की दूरी पर शेर आकर चला गया। हमारे सी.आर.पाटिल बैठे हैं, अधिकतर मांगीतुंगी रहते हैं, शाम को भ्रमण करने जाते हैं, नीचे इनके 1 फुट की दूरी से शेर आकर निकल गया। लेकिन आज तक किसी शेर ने किसी का कोई नुकसान नहीं किया। ऐसा अतिशय है, मैं मानता हूँ कि यह अतिशय गणिनी ज्ञानमती माताजी का है, यह चक्रेश्वरी देवी का है। यह वहाँ के भगवान पार्श्वनाथ का है, जो हमें शक्ति देते हैं और उस शेर को वहाँ आकर दर्शन करने का मौका देते हैं, किसी के नुकसान का नहीं।

आज मुझे यहाँ सूरजमल जी गंगवाल ने बताया कि भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा यहाँ पर रखी गई है, लगभग 2-3 साल हो गये इस प्रतिमा को आये हुए। हम बहुत चिंतित थे, कि यह प्रतिमा यहाँ रखी हुई है अप्रतिष्ठित है, इसकी प्रतिष्ठा बहुत जल्दी होना चाहिए, मंदिर बनना चाहिए। आज योग आया। यहाँ पर भी उन्होंने बताया कि कई बार एक काला सर्प यहाँ पर आता है, लेकिन आज तक किसी को उसने नुकसान नही पहुँचाया। यह काला सर्प और कुछ नहीं है, यह भगवान के जो धरणेन्द्र और पद्मावती यक्ष-यक्षिणी थे, जो उसके रक्षक थे, वह यहाँ के रक्षा करने वाले होंगे। यहाँ के आने वालों की रक्षा करने वाले होंगे। उनको आशीर्वाद देने वाले होंगे।

हम आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के हैं। आगम की परम्परा के हैं, हम यह कभी नहीं कहते कि यह

यक्ष-यक्षिणी हमारा कुछ नहीं करते, इनको मंदिर से हटा दो, ऐसा हम नहीं कहते, वह तो हमको शक्ति देते हैं। उनके अंदर शक्ति है, हम दस प्रतिमा धारी हैं, उनके एक भी प्रतिमा नहीं है। एक भी प्रतिमा नहीं है हमारे यक्ष-यक्षिणी के। न पद्मावती के, न क्षेत्रपाल के, लेकिन हम वह काम नहीं कर सकते, जो वह करते हैं। हम भगवान पार्श्वनाथ की रक्षा उस उपसर्ग से नहीं कर सकते थे, जो उपसर्ग की रक्षा आ करके पद्मावती और धरणेन्द्र ने किया था। यह उनकी ताकत है, उनकी शक्ति है। वे अव्रती होकर भी उनके अंदर इतनी शक्ति है, वे सम्यग्दृष्टि हैं। हमारे तिलोयपण्णत्ति ग्रंथ के अंदर आया हुआ है, हमारे जितने भी शासन देवी, यक्ष-यक्षिणी हैं, वह सम्यग्दृष्टि हैं। उनके द्वारा हमारे शासन की रक्षा होती है। जब भगवान का श्रीविहार होता है, तीर्थंकर भगवान का। उनके आगे-आगे श्री देवी, सरस्वती देवी, लक्ष्मी देवी चलती हैं, ये देवियाँ हैं। ये कोई व्रती नहीं हैं, ये कोई क्षुल्लक नहीं, कोई क्षुल्लिका नहीं हैं। चतुर्थ गुणस्थानवर्ती हैं। सम्यग्दृष्टी हैं। इनका हम यथोचित्त सम्मान करते हैं। हमारे जितने भी प्रतिष्ठा शास्त्र ग्रंथ हैं, जितने भी पूजा-पाठ के ग्रंथ हैं, सबके अंदर पूजा करने के पहले, प्रतिष्ठा करने के पहले सारे देवी-देवताओं का आह्वान किया जाता है, उनको बुलाया जाता है, उनको अपना साधर्मी समझा जाता है, उनका आदर किया जाता है कि आप भी आयें, हमें सहयोग दें, हम आपका सम्मान करते हैं, हम उनको अर्घ्य समर्पित करते हैं। उनको हम अर्घ्य देते हैं कि आप भी चढ़ाइये। हम भी आपका आदर कर रहे हैं। जैसे कि आपके घर में कोई मेहमान आता है, आप चाय से उसका स्वागत करते हैं, आप मिठाई से उसका स्वागत करते हैं, आप उसको बिठाकर स्वागत करते हैं। उसी प्रकार से हम इन यक्ष-यक्षिणियों का सम्मान करते हैं और वही रूप यहाँ पर आपको देखने को मिलेगा। यहाँ यक्ष-यक्षिणी का सम्मान होगा और उनका अतिशय यहाँ के तीर्थ के ऊपर प्रगट होगा।

बंधुओं! आप सब लोगों ने खुले दिल से मेरी बात को सुना। मैंने जो कुछ भी कहा है आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा से, आचार्य वीरसागर जी महाराज से जो ज्ञान ज्ञानमती माताजी ने लिया, जो हम शिष्यों को प्रदान किया, उसको मैंने आपको बताया।

एक बात और कहकर मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ, आपके इसी महाराष्ट्र में केवल 50 किमी. की दूरी पर वीरगाँव नाम का स्थान है। वह वीर गाँव आचार्य वीरसागर जी महाराज की जन्मभूमि है और ज्ञानमती माताजी के दीक्षा गुरु आचार्य वीरसागर जी महाराज हैं। आज ज्ञानमती माताजी और सुपार्श्वमती माताजी दो माताजी केवल हैं, जो आचार्य वीरसागर जी महाराज से साक्षात् उनके करकमलों से दीक्षित हैं। हिन्दुस्तान के अंदर और उस पीढ़ी का कोई भी साधु नहीं बचा है। ज्ञानमती माताजी एक बहुत बड़ी धरोहर हैं। उन्होंने संकल्प लिया है, मुझे आदेश दिया है कि हमारे दीक्षा गुरु आचार्य वीरसागर जी महाराज ने जहाँ जन्म लिया था, वहाँ जाकर के देखो मैं जाना चाहता था, दो दिन पहले, लेकिन स्वागत-स्वागत में रात के 10-11 बज गये। मैं नहीं जा सका, मैं जाऊँगा और उस वीर गाँव को जो आचार्य वीरसागर महाराज की जन्मभूमि है, उसको हम अतिशय क्षेत्र बनायेंगे। वीरसागर महाराज की जन्मभूमि का हम उत्थान करेंगे। वहाँ के सरपंच आये हैं। मैं इनसे कहूँगा कि हमको आपसे कुछ नहीं चाहिए। आप थोड़ी सी भूमि दीजिए वहाँ पर। अच्छा-सा स्थान दीजिए, जो वास्तु के हिसाब से हम आचार्य वीरसागर जी महाराज का जन्मभूमि के अनुरूप वहाँ का विकास कर सकें। इस भावना के साथ कि वे पूज्य ज्ञानमती माताजी के दीक्षागुरु हैं और आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के प्रथम पट्टाचार्य हैं। वे उनके प्रथम शिष्य थे, और प्रथम पट्टाचार्य भी थे।

ऐसे वीरसागर जी महाराज की उस जन्मभूमि का विकास हमें और आपको करना है। महाराष्ट्र वालों को करना है, पापड़ीवाल जी को करना है, औरंगाबाद वालों को करना है, और वहाँ के पास में बैजापुर गाँव है, बैजापुर वालों को करना है, आपको संभालना है, हम तो जाकर के देखेंगे, और सोचेंगे कि वहाँ पर क्या हो सकता है। और कम से कम कुछ नहीं, तो भगवान की इतनी बड़ी प्रतिमा जरूर वहां पर विराजमान करेंगे, कि साल में एक बार ठाट-बाट से वहाँ पर महामस्तमकाभिषेक हो, जो सारे हिन्दुस्तान के अंदर जाये कि वीरगाँव आचार्य वीरसागर जी महाराज की जन्मभूमि है, वहाँ से मस्तकाभिषेक का प्रसारण हो रहा है और हम मस्तकाभिषेक देख रहे हैं। आचार्य वीरसागर जी महाराज का स्टेचू भी लगाया जायेगा। जो वहाँ का मंदिर है, उसमें अगर जीर्णोद्धार की आवश्यकता है, उसको भी किया जायेगा। यह सारे कार्य जो वीरगाँव मैंने सुना है कि आचार्य वीरसागर जी महाराज के वंशज उनका परिवार, पोते, पहाड़े परिवार, कुछ लोग वहाँ औरंगाबाद रहते हैं और एक परिवार वहाँ वीरगाँव में भी है। उन लोगों को भी जिम्मेवारी दी जायेगी। जो वहाँ के आस-पास के लोग जिम्मेवारी ले करके इस तीर्थ को विकसित करेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आप सबको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूँ आज कि आपने जो इस तीर्थ के विकास में अपना उत्साह दिखाया है। 5100-5100 रुपये देकर करके या 51000

रुपये देकर करके या 1 लाख रुपये देकर जो उत्साह दिखाया है, इसका मतलब है कि आपकी भावना है कि यह शिर्डी का तीर्थ जल्दी से जल्दी बनें। मैं चाहता हूँ कि हर ट्रस्टी अपने-अपने गाँव से लोगों को ऐसे जोड़े कि यह तीर्थ साल-दो साल के अंदर बिल्कुल कुण्डलपुर, हस्तिनापुर, प्रयाग और अयोध्या जैसा एक विकसित तीर्थ देखने को सबको मिले। हमारा जो भी जैन पर्यटक और यात्री हस्तिनापुर में देश के कोने-कोने से, कहीं से आये तो उसको मालूम हो कि मुझे जाकर शिर्डी में ज्ञानतीर्थ पर ठहरना है। ज्ञानतीर्थ के फ्लैट अच्छे हैं। उसको यह भावना नहीं लाना है कि हमें किशोर जी के होटल में ठहरना है। हमें सूरजमल जी के होटल में ठहरना है। होटल शब्द जो है, हो टल अर्थात् अच्छे हो, तो वहाँ से टल जाओ। ये होटल शब्द जो है, ये किसी और को ठहराने के हैं। हमको अपने तीर्थ पर ठहराना है अपने दिगम्बर जैन यात्रियों को। इसलिए आप सब लोग उत्साहपूर्वक इसमें दान देना, इसमें पैसा देना। आपके एक-एक पैसे का सदुपयोग होगा।

हमारे 41 लोगों का यह ट्रस्ट है। बराबर उसकी मीटिंग होती है। सभी ट्रस्टी इसमें संभ्रात हैं। सब लोग पैसा लगाने के लिए तैयार हैं। यह तीर्थ जल्दी से जल्दी बनकर तैयार हो, पूज्य ज्ञानमती माताजी के चरणों में जो आज हस्तिनापुर में विराजमान हैं, उनके चरणों में मैं यही निवेदन करता हूँ और वंदामि करता हूँ कि उन्होंने जो पीठाधीश का पद मुझे दिया है, जो जिम्मेवारी मेरे ऊपर सौंपी है, उस जिम्मेवारी का मैं उनके आशीर्वाद से आगे भी निर्वाह करता रहूँ और इन तीर्थों के विकास में हमारे पास तो पैसा नहीं है, हम तो तन और मन लगाते हैं पैसा आप लोग लगाते हैं। हाँ, यह जरूर है कि हमारे बड़े भाई साहब जो गृहस्थ अवस्था के हैं, सम्पन्न हैं, अभी उन्होंने अयोध्या के अंदर भगवान ऋषभदेव का जो जन्म स्थान है, वहाँ पर अच्छी राशि लगा करके भगवान ऋषभदेव के जन्मभूमि का मंदिर निर्मित किया और उसका फरवरी 2011 के अंदर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हुआ। उसके कर्ता कैलाशचंद जैन सर्राफ लखनऊ वह भी धन्यवाद के पात्र हैं। क्योंकि हमने तो घर छोड़ा, तो घर से कोई संबध नहीं रखा। हम आज तक घर की किसी शादी में नहीं गये। हमारे भाई-बहनों की नाती-पोते आदि आज लगभग 175 संतानें हैं। हमारी माँ की 13 सन्तानों में से 9 सन्तानों ने विवाह किया, 4 संतानें हम अविवाहित हैं, ज्ञानमती माताजी, अभयमती माताजी, चंदनामती माताजी, और मैं ब्र. रवीन्द्रकुमार, जिन्हें माताजी ने अब रवीन्द्रकीर्ति बनाया है। 4 के अलावा जो 9 संताने हैं उनसे जो पोते-परपोते, नाती आदि मिलाकर आज 175 हैं, मैं किसी की शादी में कभी नहीं गया जब से मैंने ब्रह्मचर्य व्रत लिया। मैंने अपने ब्रह्मचर्य व्रत का निर्वाह करते हुए कभी किसी शादी में, किसी सांसारिक कार्यों में न अनुमोदना की, न उसमें सम्मिलित हुआ। तो इसी प्रकार से मेरा निर्बाध रूप से जितना जीवन शेष है, वह भगवान के चरणों में तीर्थों के निर्माण में भगवान की जन्मभूमियों के विकास में और पूज्य माताजी की आज्ञा के अनुसार जो आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा है उसके अनुसार चलता रहे, चलता रहे, चलता रहे, इन्हीं शब्दों के साथ गणिनी ज्ञानमती माताजी की जय, भगवान पार्श्वनाथ की जय।

अब प्रतिदिन टाटास्काई डिश के उपभोक्ता भी सुन सकेंगे
पूज्य माताजी के मंगल प्रवचन

पारस चैनल पर प्रतिदिन अवश्य सुनें
पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के
मंगल प्रवचन

प्रातः 6 बजे (टाटास्काई डिश के उपभोक्ताओं हेतु) एवं
रात्रि 9 बजे (वीडियोकॉन, एयरटेल डिश के उपभोक्ताओं हेतु)

प्रस्ताविकी-6

आशीर्वाद एवं विनयांजलि समर्पण
स्वस्तिश्री स्वामी जी के प्रति साधुवृंदों के आशीर्वाद तथा समाज के गणमान्य महोदयों, नेतृत्वकर्ताओं एवं विद्वानों द्वारा प्रेषित विनयांजलियाँ

मंगल आशीर्वाद

-गुजरात संतकेसरी आचार्य श्री भरतसागर जी महाराज

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र. की प्रणेता गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के संघस्थ कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी, जो कि क्षेत्र के अध्यक्ष हैं। इनकी देव-शास्त्र-गुरु के प्रति समर्पणभावना प्रशंसनीय है। आप सरल स्वभावी, व्यवहार कुशल, कर्मठ कार्यकर्ता हैं एवं विशेषकर गुरुभक्ति से आपका हृदय सदैव ओतप्रोत रहता है। आप तीर्थक्षेत्रों के उद्धार एवं प्रगति में रुचि रखते हैं तथा स्वयं की ओर शुभमय उपयोग की तटस्थता रखते हुए शुभ भावना बनाए रखते हैं। सन् 2009 में जब मैं संघ सहित हस्तिनापुर पहुँचा, तब मुझे इनका वास्तविक व्यक्तित्व और कृतित्व देखकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। वास्तव में रवीन्द्र कुमार जी की अटूट गुरुभक्ति को देखकर सहज ही मेरे मन से सदा उनके लिए वात्सल्यपूर्वक ''राजा श्रेयांस'' की उपमा निकलती है।

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि जम्बूद्वीप धर्मपीठ के नूतन पीठाधीश स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के रूप में आप श्रेष्ठ पद पर दिनाँक 20-11-2011 को आसीन हुए हैं। यथासंभव यथाशक्ति धर्माराधना एवं धर्मसाधना के साथ धर्मप्रभावना में आगे बढ़ते रहें एवं संस्थान के धर्मायतन में वृद्धि होवे। आप स्वस्थ एवं चिरंजीवी होवें, इसी भावना के साथ धर्मवृद्धिरस्तु मंगलमय दिव्य आशीर्वाद।

मंगल आशीर्वाद

-एलाचार्य मुनि श्री वसुनंदि जी महाराज

मैं पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी द्वारा ब्र. रवीन्द्र कुमार जी को पीठाधीश पद पर मनोनीत करने की घोषणा का अनुमोदन करता हूँ। अब वे पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति के रूप में जाने जायेंगे, यह प्रसन्नता का विषय है। इसी प्रकार आगे वे मुनि रवीन्द्रकीर्ति भी बनेंगे, ऐसा मेरा आशीर्वाद है। चूँकि पूज्य माताजी का आदेश है कि पहले मांगीतुंगी में मूर्ति निर्माण का कार्य पूरा हो, तब दीक्षा ली जाये अतः उनकी आज्ञा को अवश्य ही रवीन्द्रकीर्ति पालन करें और मांगीतुंगी का कार्य करके ही दीक्षा के लिए अग्रसर होवें।

(11 नवम्बर 2011 को श्री मोतीसागर जी महाराज की श्रद्धांजलि सभा में प्रस्तुत वक्तव्यांश)

मंगल आशीर्वाद

-एलाचार्य मुनि श्री निःशंकभूषण जी महाराज

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने ब्र. रवीन्द्र कुमार जी को जम्बूद्वीप तीर्थ का पीठाधीश बनाया है। मुझे बहुत प्रसन्नता है। माताजी जो भी कार्य करती हैं, सदा समाज के लिए लाभकारी सिद्ध होते हैं। मुनि होते हुए भी मेरे मन में माताजी के प्रति बहुत श्रद्धा के भाव रहते हैं क्योंकि उन्होंने एक आर्यिका होकर जैनधर्म, संस्कृति के लिए जो कार्य किए हैं, वह कोई महान आत्मा ही कर सकती है। पूज्य माताजी ने रवीन्द्र कुमार जी को धर्म के संरक्षण और तीर्थों के विकास हेतु रवीन्द्रकीर्ति स्वामी नाम देकर पीठाधीश पद पर सुशोभित किया है अतः मैं उनके जीवन की उन्नति के लिए उन्हें बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद प्रदान करता हूँ।

(20 नवम्बर 2011 को पीठाधीश पदारोहण समारोह में प्रस्तुत वक्तव्यांश)

मंगल आशीर्वाद

-उपाध्याय श्री गुप्तिसागर जी महाराज

आज ये जैन समाज बहुत सौभाग्यशाली है कि गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी इस समाज के लिए एक ऐसा प्रकाश स्तंभ है, जिसके आलोक ने बहुत सारी आत्माओं को प्रकाशित होने का मौका दिया है। एक तरफ आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के पट्टाचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज पूज्य माताजी की ज्योति के ही प्रकाशपुंज हैं, जो इस परम्परा को वृद्धिंगत करके धर्मप्रभावना कर रहे हैं। मुझे गौरव होता है कि दूसरे क्षुल्लक मोतीसागर जी महाराज रहे, जिन्होंने आत्मकल्याण के साथ पूज्य माताजी की जम्बूद्वीप आदि विभिन्न योजनाओं को अथक प्रयास करके सफल करने एवं संचालित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे लगता है कि पूज्य माताजी ने बहुत पहले ही यह सोच लिया था कि परम्परा का पोषण करने वाले व्यक्तित्व को पैदा करने की आवश्यकता है, इसीलिए उन्होंने ऐसे शिष्य रत्नों को समाज के लिए प्रदान किया।

रामायण में 2500 पात्र हैं और उन पात्रों में राम की अभिव्यक्ति सबसे प्रमुख थी। इसी प्रकार मैं समझता हूँ कि आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के पात्रों में रवीन्द्रकीर्ति जी की अभिव्यक्ति को हम प्रमुखता के साथ सहर्ष स्वीकार करना चाहते हैं। किसी भी विशेष प्रतिभा का प्रोत्साहन अवश्य करना चाहिए। कहा है कि यदि हम बहुत काम न कर सकें, तो कार्य करने वाले व्यक्तियों का दोनों हाथ उठाकर सम्मान अवश्य करें। यह हमारा नैतिक दायित्व है। पूज्य माताजी इस धरती पर एक ऐसा अनूठा विश्वास और ज्योति बन गई हैं कि आने वाली पीढ़ियों में इतना पुरुषार्थ कोई कर पायेगा, यह कठिन महसूस होता है। वही संस्कार रवीन्द्रकीर्ति जी में भी आ गये, क्योंकि गुलाब जहाँ खिलता है, वहाँ की माटी भी सुगंधित हो जाती है। रवीन्द्र जी तो माताजी के परिवार में जन्में उनके अनुज रहे अतः उनको ऊँचाई पर ले जाने में कोई रोक नहीं सकता था।

मोतीसागर जी महाराज के उपरांत रवीन्द्र भाई जी को पीठाधीश बनाकर रिक्त स्थान को पूर्णता दी गई है। पद से पहले ही रवीन्द्र जी तो सदा काम करते रहे हैं। सब मिलकर बहुत कुछ पैदा कर सकते हैं लेकिन कार्य करने वाले एक अच्छे व्यक्ति को पैदा करना अत्यन्त कठिन होता है। ज्ञानमती माताजी ने यह कार्य किया है और अच्छे लोगों को तैयार करके समाज की सेवा हेतु प्रस्तुत किया है। ज्ञानमती माताजी जैसी श्रेष्ठ आर्यिका ने भगवान महावीर के रथ को चलाने में सबसे प्रमुख भूमिका निभाई है।

मैं रवीन्द्रकीर्ति जी को यही कहूँगा कि वे दीक्षा हेतु जल्दी न करें और जब तक कोई एक स्थाई स्तंभ मजबूती के साथ तैयार न कर लें, तब तक वे इसी प्रकार समाज व धर्म के कार्य करते रहें। दक्षिण भारत में भट्टारक परम्परा चल रही है और पूज्य माताजी ने हस्तिनापुर में पीठाधीश पद के रूप में उत्तर भारत में यह परम्परा प्रारंभ की है, तो इसमें कोई बुराई नहीं है। लोग आगे-पीछे कुछ भी कहते हैं, लेकिन जो कोई इसमें बुराई समझते हैं, उन्हें मैं समझा नहीं सकता हूँ। भट्टारकों को पिच्छी-कमण्डलु प्रतीक स्वरूप दिये जाते हैं, जिससे समाज में उनके प्रति सम्मान और विश्वास की भावना जागृत रहे। इसी प्रकार भाई जी के प्रति भी समाज में विश्वास और सम्मान की भावनाएँ लोगों के दिल में सदा रही है और आगे भी सदा स्थापित रहना चाहिए। रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी बहुत सक्षम हैं, जिन्होंने मांगीतुंगी में इतने बड़े कार्य का बीड़ा उठाया हुआ है। समाज करोड़ों रुपये का कार्यक्रम कर सकती है लेकिन शिल्प से कार्य का उद्घाटन करने के लिए वह सोच पैदा हो पाना अत्यन्त दुर्लभ होता है। यह पूज्य माताजी का अद्भुत चिंतन है जिसने उन्हें वहाँ पहुँचा दिया, जैसे नेमीचंद्र सिद्धान्तचक्रवर्ती जैसी दिग्गज भव्यात्मा ने गोम्मटेश बाहुबली को जन्म दिया था।

मैं जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि माताजी दीर्घायु होवें, शतायु होवें, स्वस्थ रहें। उनके रहने से मैं बहुत सी धर्मप्रभावना देख रहा हूँ। अतः पूज्य माताजी जैसे अद्भुत व्यक्तित्व से समाज और धर्म की उन्नति सदा होती रहे, यही भावना है तथा रवीन्द्रकीर्ति जी के लिए भी मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है, वे अपने प्रत्येक लक्ष्य के साथ मांगीतुंगी के मूर्ति निर्माण में शीघ्र ही सफल होवें और उनके इस कार्य में हमसे भी जो सहयोग हो सकेगा, हम अवश्य करेंगे।

अंत में यही कहना है कि रवीन्द्र जी दीक्षा के लिए जल्दी न करें। सम्राट जब युद्ध पर जाते थे और उनको जीवन का खतरा लगता था, तब हाथी पर बैठे-बैठे ही केशलोंच कर दीक्षा ले लेते थे। अतः आप भी जल्दी न करें, जब मौका आयेगा, तब आप भी हाथी पर बैठे-बैठे दीक्षा ले लेना। लेकिन किसी योग्य स्तंभ को तैयार किए बिना दीक्षा की जल्दी उचित नहीं होगी। पुनः रवीन्द्रकीर्ति जी के लिए मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद।

(30 नवम्बर 2011 को स्वामी जी के सम्मान समारोह में प्रीतविहार-दिल्ली में प्रस्तुत वक्तव्यांश)

मंगल आशीर्वाद

-चारित्रश्रमणी आर्यिका श्री अभयमती माताजी

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर एवं इससे सम्बद्ध तीर्थों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु अत्यन्त दूरदर्शिता रखते हुए जम्बूद्वीप तीर्थ पर सन् 1987 में पीठाधीश पद की स्थापना की है। मुझे विश्वास है कि विगत 24-25 वर्षों से जिस प्रकार इस धर्मपीठ का कुशल संचालन प्रथम पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज के निर्देशन में हुआ है, उसी प्रकार भविष्य में भी सैकड़ों वर्षों तक इस धर्मपीठ के पीठाधीशगण सारे विश्व में जैनधर्म की अद्भुत प्रभावना एवं तीर्थों का संरक्षण करते रहेंगे। वर्तमान में इस पीठ पर पूज्य माताजी ने ब्र. रवीन्द्र कुमार जी को प्रतिष्ठापित करके उन्हें ''स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी'' बनाया है अतः मुझे इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता है। 18 वर्ष की उम्र से ही स्वामी जी को पूज्य माताजी के संस्कार प्राप्त हुए हैं अतः वे अपने इस नये पीठाधीश कार्यकाल में भी इस संस्थान का सर्वतोमुखी संचालन करके धर्म प्रभावना आदि के महनीय कार्य कर रहे हैं। आगे अपने चरम लक्ष्य की पूर्ति करते हुए वे अपने सम्पूर्ण मानव जीवन के शिखर पर कलशारोहण करें, यही उनके लिए मेरा बहुत-बहुत मंगल आशीर्वाद है।

मातृभक्ति एवं गुरुभक्ति के पर्यायवाची-स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

नाम के अनुरूप अपने कर्तव्य का पालन करने वाले रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी की कीर्ति वास्तव में सूर्य की रश्मियों के समान पृथ्वीतल को आलोकित करने वाली है। हम एक हजार वर्ष पूर्व के मातृभक्त चामुण्डराय महामात्य का नाम सुनते हैं, जिन्होंने भगवान बाहुबली की 57 फुट उत्तुंग प्रतिमा का निर्माण करवाकर माता के संकल्प को पूर्णता प्रदान की थी।

हम चन्द्रगुप्त महामुनिराज का कथानक पढ़ते हैं जिन्होंने अपने गुरुदेव श्री भद्रबाहु श्रुतकेवली आचार्य महामुनि के चरणों की ऐसी निःस्वार्थ सेवा की थी, जिसके फलस्वरूप देवताओं ने भी परोक्षरूप में उनकी सहायता करते हुए निर्जन जंगल में नगरी बसाकर 12 वर्षों तक उन्हें मनुष्यरूप में नवधाभक्ति करके आहार प्रदान किया था। यद्यपि यह बात ज्ञात हो जाने के बाद चन्द्रगुप्त मुनिराज ने प्रायश्चित्त ग्रहण किया था, क्योंकि दिगम्बर जैन साधु-साध्वी देवों के हाथ से भोजन नहीं ग्रहण करते हैं। फिर भी गुरुभक्ति में चन्द्रगुप्त का नाम सर्वोपरि सुना जाता है।

मेरा अभिप्राय यहाँ यह है कि संसार में माता, पिता एवं गुरु के प्रति सच्ची निष्ठापूर्वक कर्तव्य निभाने वाला व्यक्ति वास्तव में सर्वाधिक महान होता है। पुनश्च जो मोक्षमार्ग के प्रति रुचि उत्पन्न करने वाले सच्चे गुरु होते हैं, उनमें माता-पिता एवं गुरु तीनों का रूप सहज में देखा जाता है, उनके प्रति किया गया समर्पण शिष्य के लिए तीनों की आराधना का फल प्रदान करने वाला हो जाता है। जम्बूद्वीप धर्मपीठ के नूतन पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी की जीवनशैली पूर्णरूपेण गुरुभक्ति का उदाहरण प्रस्तुत करके उपर्युक्त महानुभावों के आदर्शों को उपस्थित कर रही है, यही उनके व्यक्तित्व के निखार का सबसे बड़ा चमत्कार है।

घर में माता-पिता के 4 पुत्रों में सबसे छोटे पुत्र के रूप में जन्में रवीन्द्र कुमार के प्रति पिता का अतीव स्नेह था। वे इन्हें अपने से दूर 1 दिन भी नहीं रखना चाहते थे किन्तु गाँव में उच्च शिक्षा के साधनों का अभाव होने के कारण ये लखनऊ विश्वविद्यालय में स्नातक की पढ़ाई करने हेतु दो वर्ष लखनऊ में रहे। इनकी सरलता, सहजता, मितव्ययिता, व्यसन मुक्त जीवन जीने की शैली, कर्तव्य परायणता एवं समयसूचकता, शांत प्रवृत्ति आदि नैसर्गिक क्षमताओं ने इन्हें सबका प्रिय बनाने में सर्वथा साथ दिया, यही कारण रहा कि विश्वविद्यालय की एक दिन की भी छुट्टी होने पर रवीन्द्र जी सीधे घर आते और पिताजी को अपने मधुर व्यवहार, क्रियाकलाप एवं सेवाओं से संतुष्ट कर देते थे। अपनी सेवा भावना तथा पिताजी के पुत्रवात्सल्य का ही प्रभाव रहा कि पिता के स्वर्गवास से 2-4 दिन पूर्व ही रवीन्द्रकुमार बड़े दिन की सरकारी

छुट्टी में घर आ गये थे, इन्होंने पिता की खूब सेवा करके उन्हें पूर्ण सन्तुष्ट किया तथा 25 दिसम्बर 1969 को उनके समाधिमरण के समय णमोकार महामंत्र सुनाकर अपने पुत्रकर्तव्य को पूर्ण किया। इसी प्रकार माता के प्रति भी इनकी पूर्ण निष्ठा रही। माता मोहिनी चूँकि सन् 1971 में आर्यिका दीक्षा लेकर रत्नमती माताजी बन गई थीं और रवीन्द्र जी भी आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत लेकर संघ में ही रहते थे अतः हमेशा उनकी अनुकूल वैय्यावृत्ति-आहार, औषधि आदि के द्वारा करते हुए अंतिम समाधिमरण तक पूरी तत्परता के साथ समाधिमरण आदि पाठ सुनाकर अपने कर्तव्य का निर्वाह किया।

इन सबके साथ-साथ पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के प्रति माता-पिता एवं गुरु तीनों का भाव इनके लिए सदैव वरदानरूप में सिद्ध हुआ। जैसा कि आचार्य श्री कुन्दकुन्ददेव ने कहा है– **''आइरिय पसाएण य, विज्जा मंता य सिज्झंति।''**

अर्थात् आचार्य भगवन्त की कृपा प्रसाद से अनेक विद्या और मंत्र सिद्ध हो जाते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि गुरुओं की वैयावृत्ति, उनकी अनुकूलता व उनके प्रति कर्तव्य का पालन करने वाले शिष्य भौतिक विद्या, शास्त्रज्ञान और आध्यात्मिक उन्नति करके मोक्षपद तक को प्राप्त कर लेते हैं।

यहाँ सर्वांगीण योग्यता के धनी, रवीन्द्रकुमार से रवीन्द्रकीर्ति पद तक पहुँचने वाले व्यक्ति का जीवन गुरुछाया में दीर्घकाल तक व्यतीत होने का एक ही राज है-समर्पण। जिनके मन में अपना अलग अस्तित्व बनाने का कभी भाव भी नहीं आया। ऐसे अलौकिक व्यक्तित्व के धनी श्री रवीन्द्रकीर्ति पीठाधीश स्वामी जी के लिए मेरी अनन्तशः शुभकामनाएँ हैं और भगवान जिनेन्द्र से यही प्रार्थना है कि जिस तरह से आपने पूज्य गणिनी माताजी की प्रेरणा को अपना संबल बनाकर अनेक तीर्थों को विकसित/निर्मित किया है, उसी प्रकार संसार का सर्वोच्च 108 फुट उत्तुंग भगवान् ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण कार्य आपके अध्यक्षीय कर्मठ निर्देशन में शीघ्र सम्पन्न हो और हम सभी लोग उस अप्रतिम प्रतिमा का दर्शन कर अपने जन्म को सफल करें।

सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का यह विशेषांक उन रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के पीठाधीश पदारोहण की झलकियाँ लेकर प्रस्तुत है इसमें प्रबंध सम्पादक जीवन प्रकाश जी ने अथक परिश्रमपूर्वक जो सामग्री तैयार की है, वह निःसंदेह सुन्दर और पठनीय है। एक नवोदित युवक ने स्वामी जी को अपना आदर्श बनाकर जो भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की है, वह उसके उज्जवल भविष्य के लिए आदर्श बने, यही मंगल आशीर्वाद है।

शुभकामना संदेश

-कर्मयोगी स्वस्तिश्री चारुकीर्ति भट्टारक महास्वामी, श्रवणबेलगोला

हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जम्बूद्वीप हस्तिनापुर के पीठाधीश पद पर परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने आपको आसीन किया और आपका नामकरण स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति किया है। आप पीठाधीश पद पर रहकर धार्मिक, सामाजिक और जन कल्याण के कार्य करते हुए धर्म की प्रभावना करते रहें। यही भावना हम भगवान बाहुबली स्वामी से करते हैं।

शुभकामना संदेश

-प्रदीप जैन 'आदित्य', नई दिल्ली

(केन्द्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री-भारत सरकार)

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर स्थित दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के तत्त्वावधान में स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी महाराज के विगत 20 नवम्बर 2011 को द्वितीय पीठाधीश घोषित किए जाने के साथ-साथ पीठाधीश पदारोहण समारोह का प्रसारण अत्यंत रोचक एवं प्रेरणादायी सिद्ध हुआ है। इससे जनमानस को ऊर्जा प्राप्त हुई है, जिसका सर्वत्र स्वागत हो रहा है।

आज के समाज के लिए इस प्रकार का उद्बोधन आवश्यक है। इससे समाज अपनी जीवनशैली परिवर्तित करके सहजता, सरलता, मधुरता और कार्यकुशलता के क्षेत्र में परिपक्व हो सकता है और समाज सुधार की दिशा में यह मील का पत्थर सिद्ध होगा। स्वामी जी के सम्मान में नत-मस्तक होकर उनका आदर करता हूँ और यह इच्छा व्यक्त करता हूँ कि वे पीठाधीश के रूप में समाज-सुधार का कार्य करें, जिससे हम सभी सुखी और सम्पन्न हो सकेंगे।

शुभकामना संदेश

-अशोक सिंघल, (संरक्षक-विश्व हिन्दू परिषद)

पूज्या ज्ञानमती माताजी द्वारा कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन को जम्बूद्वीप धर्मपीठ का नूतन पीठाधीश बनाकर उन्हें स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के नाम से अलंकृत किया गया है, यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई। पूज्य रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के पदारोहण के उपलक्ष्य में ''सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका'' का जनवरी 2012 का अंक विशेषांक रूप में भी प्रकाशित किया गया है।

पूज्य रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का मेरा प्रथम परिचय अमेरिका में नव शताब्दी 20वीं-21वीं के उपलक्ष्य में मनाए जाने वाले विश्वधर्म सम्मेलन के अवसर पर आया। जैन समाज की ओर से विश्व पटल पर उनका ही प्रबोधन हुआ। उन्हें पूजनीया ज्ञानमती माताजी का शुभाशीर्वाद प्राप्त था। उसके पश्चात् मेरे ध्यान में आया कि माताजी के अत्यन्त कठिन प्रकल्पों का भार भी उन्होंने उठाया है, अयोध्या जो पाँच तीर्थंकरों की जन्मभूमि रही है, वहाँ मुझे यह अनुभव हुआ। प्रयाग में आदि तीर्थंकर ऋषभदेव जी महाराज की तपस्थली तथा महावीर स्वामी जी की कुण्डलपुर में जन्मस्थली के निर्माण के समय उनकी अहम भूमिका रही है। हस्तिनापुर का महान तीर्थ उनका सेवा क्षेत्र रहने वाला है। मेरा पूज्य माताजी की कृपा से उनसे अत्यन्त घनिष्ट संबंध रहा है और आज में अत्यन्त आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ।

पूज्य रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी पूज्या माताजी द्वारा किए गए कार्यों को और आगे बढ़ाएंगे, यह आशा करता हूँ। परमात्मा उनको शक्ति प्रदान करे, यह प्रार्थना है। परमपिता परमात्मा के श्रीचरणों में प्रार्थना है कि पूज्या माता ज्ञानमती जी को स्वस्थ रखते हुए दीर्घायु प्रदान करें। साष्टांग प्रणाम सहित,

मंगल कामना संदेश एवं अभिवंदना

-जे.के. जैन, पूर्व सांसद, दिल्ली

स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी ने अपने सम्पूर्ण जीवन को धर्म के प्रति समर्पित करते हुए अथक प्रयास करके जिस प्रकार जैनधर्म की पताका को फहराया है, वह समाज के लिए अत्यन्त अद्भुत उदाहरण है। मैं उनके कार्य करने की शैली को विगत लगभग 35 वर्षों से बराबर देख रहा हूँ और उनकी आश्चर्यजनक कार्य शक्ति को देखकर मुझे तो कभी-कभी ऐसा लगता है कि जैसे किसी दिव्य शक्ति ने उनके शरीर में स्थान बना लिया है। शारीरिक कष्टों की ओर ध्यान न देकर अपनी सभी जैन आम्नायों का पूर्णरूप से पालन करते हुए नये तीर्थक्षेत्रों का निर्माण ज्ञानमती माताजी के सान्निध्य में आपके द्वारा किया जा रहा है, यह एक ऐसी गाथा है कि जो जैन इतिहास के स्वर्णिम पन्नों में जुड़ती चली जा रही है। एक कार्यक्रम समाप्त नहीं होता है और उसके पहले ही दूसरे कार्यक्रम का आदेश हो जाता है और उन सब आदेशों का पालन रवीन्द्रकीर्ति जी सहर्ष सदा करते आए हैं और आज भी कर रहे हैं। यह समाज को उनकी अद्भुत प्रतिभा शक्ति का आदर्श उदाहरण मानना चाहिए।

कई बार मैं माताजी को कहता हूँ कि इतने कठिन और महान कार्य करने वाले रवीन्द्र कुमार जी को आपने इतनी अधिक तपस्या क्यों दे रखी है ? लेकिन जैनधर्म संयम पर आधारित है इसलिए उन्हें अपनी चर्या का पालन करना भी होता है। तीर्थों के निर्माण व जैनधर्म की प्रभावना हेतु वे ट्रेन में 12-18 घंटे भी सफर करते हैं और पानी तक नहीं लेते। लेकिन उनके चेहरे पर उतनी ही मुस्कुराहट सदा बनी रहती है। हम लोगों के चेहरे पर अवश्य ही ऐसा सफर करने के बाद मलिनता आ जाती है, लेकिन रवीन्द्र कुमार जी का चेहरा कभी किसी थकान से मलिन हुआ महसूस नहीं हुआ। और उनके इसी हंसमुख एवं चुम्बकीय स्वभाव के कारण हजारों-हजार व्यक्ति उनके पास खिंचे चले आते हैं।

वर्तमान में उनकी 61 वर्ष की आयु हो चुकी है और जब वे 29 वर्ष के रहे होंगे, तब से मैं उनके साथ जुड़ा हुआ हूँ और उनकी कार्यशक्ति को मैंने बहुत नजदीक से पहचाना है। वास्तविकता तो यह है कि इस मानव लोक में आपका अवतरण माँ ज्ञानमती जी के लिए ही हुआ है।

पिछले 20 नवम्बर को ब्रह्मचारी रवीन्द्र कुमार जी को पूज्य माताजी ने जम्बूद्वीप का पीठाधीश बनाया। मुझे अत्यन्त

हर्ष हुआ। इस पदारोहण के उपलक्ष्य में मैं यही कहना चाहता हूँ कि हम रवीन्द्रकीर्ति जी को क्या बधाई दे सकते हैं, बधाई का पात्र तो आज यह पूरा समाज है, जिसने रवीन्द्र कुमार जी को पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति जी के रूप में प्राप्त किया है। स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी जैसे व्यक्तित्व को पाकर समाज गौरवान्वित हुआ है। क्योंकि उनको यह पद मिला, यह बात उनके लिए कुछ भी मायने नहीं रखती है। वे तो पूर्व में भी कर्मयोगी रहे हैं और आगे भी सदा कर्मयोगी रहेंगे। पद की भावनाओं में कभी रवीन्द्र कुमार जी ने या ज्ञानमती माताजी के किन्हीं भी शिष्यों ने कभी कोई कार्य नहीं किये। माताजी के मुख से निकली प्रेरणाओं को उनके संघ में हर शिष्य ने चाहे मोतीसागर जी रहे, चंदनामती माताजी रहीं या भाई जी रहे, या कोई भी ब्रह्मचारिणी जी रहीं, सबने पूज्य माताजी का आदेश मानकर निःस्वार्थ भावों के साथ सदा उसका पालन किया और यही कारण रहा कि देश में भाई रवीन्द्र कुमार जी जैसे शिष्यों के बल पर पूज्य माताजी की समस्त योजनाएं सफलता को प्राप्त हुई, जिसका लाभ केवल इस समाज को ही मिला है।

मैं 20 नवम्बर को भाई रवीन्द्र कुमार जी के पीठाधीश पदारोहण समारोह में किसी जरूरी व्यस्तता के कारण नहीं आ सका, लेकिन मैं मन-वचन-काय से उनके उस समारोह में अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित ही था। पुनः उनके पीठाधीश पदारोहण के उपलक्ष्य में उनके अंतरंग व्यक्तित्व को प्रकाशित करने हेतु संस्थान की मासिक पत्रिका सम्यग्ज्ञान का विशेषांक प्रकाशित करने की सूचना मुझे मिली और आज मैं अपनी अभिव्यक्ति को इस संक्षिप्त मंगल कामना संदेश के साथ प्रेषित कर पाया हूँ, यह मेरे लिए गौरव की बात है।

मैं रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के प्रति अपनी विनम्र वंदना प्रेषित करते हुए उनके दीर्घ, स्वस्थ एवं मंगलमयी जीवन की कामना करता हूँ। उनके अंदर दिन-दूनी रात चौगुनी कार्यशक्ति का संचार होवे और उनके निर्देशन में पूज्य माताजी की हर प्रेरणा इस समाज के मध्य साकार रूप लेती रहे, यही मंगल कामनाएँ मेरे हृदय की पुकार बनकर उनके प्रति समर्पित है।

शुभकामना संदेश

-वी. धनंजय कुमार जैन, बैंगलोर, (पूर्व वित्त राज्यमंत्री-भारत सरकार)

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर क्षेत्र के पीठाधीश पद पर श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी की नियुक्ति पर पूरा दिगम्बर जैन समाज हर्ष व्यक्त करता है। गणिनी आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के आशीर्वाद से श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी जम्बूद्वीप तीर्थ को लोक विख्यात बनायेंगे और दिगम्बर जैन समाज में इसे सर्वश्रेष्ठ तीर्थ के रूप में प्रस्तुत करेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी सहित माताजी का संघ सहित हम आशीर्वाद चाहते हैं और जम्बूद्वीप तीर्थ के सभी कार्यों में सदैव उपस्थित रहेंगे, यही भावना व्यक्त करते हैं।

शुभकामना वक्तव्य

-श्री कपूरचंद जैन-घुवारा
(अध्यक्ष-हस्त करघा विकास निगम लिमिटेड, मध्यप्रदेश सरकार)

पूज्य माताजी, पूज्य रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी, सेठी जी, उपस्थित महानुभाव! स्वामी जी का पद आज जिन्हें प्रदान किया गया है, ऐसे भाई जी से एक निवेदन करना है। जैसे सेठी जी ने कहा कि स्वामी सबका होता या एक का होता है। आप सबके स्वामी बनें बुन्देलखंड के तथा सारे देश के तीर्थ आपके हैं और आप स्वामी बने हैं सबके। एक बार माताजी से विनम्र प्रार्थना करना है और आपसे, पूज्य क्षुल्लक गणेश प्रसाद जी वर्णी मुनि हो गये किन्तु आज उनको सब वर्णी जी के नाम से ही जानते हैं। इसलिए आप स्वामी भले ही हो गये हैं लेकिन हम लोगों का यह अधिकार सुरक्षित है, भाई जी में भी हमारी भावना स्वामी जी की है। निवेदन करना है कि 'परवाह नहीं, दुनिया खिलाफ हो, रास्ता वही चलना, जो सच्चा और साफ हो।' अभी माताजी शांतिसागर की जय बोल रही थी उसी परंपरा के आप सब लोग हैं मैंने निवेदन

किया था कि शांतिसागर जी की उपसर्ग स्थली द्रोणगिरी है इस उपसर्ग स्थली का आपको विकास करना है और उसके लिये आपसे प्रार्थना करता हूं एक बार पधारें और शांतिसागर जी परम्परा को आगे बढ़ाने में सहयोग प्रदान करें। आपको भाई जी पुकारते हैं जैसे वर्णी को वर्णीजी पुकारते हैं भले ही वे मुनि हो गये थे।

आपके चरणों में सविनय वंदना करते हुए मैं द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र के दर्शन हेतु आपको सादर आमंत्रित करता हूँ।

(पीठाधीश पदारोहण समारोह में 20 नवम्बर 2011 को प्रत्यक्ष प्रस्तुत)

हृदय के भाव

-सुरेशचंद जैन, मुरादाबाद

(कुलाधिपति-तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद)

विगत 20 नवम्बर 2011 को परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन को जम्बूद्वीप धर्मपीठ का नूतन पीठाधीश पदारोहण करके उन्हें स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के नाम से अलंकृत किया है। माताजी के इस आशीष फल के वे एकमात्र अधिकारी हैं। मेरा परम सौभाग्य है कि मैं ऐसे शुभ एवं गरिमापूर्ण क्षणों का साक्षी बन पाया।

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी के धार्मिक प्रभावनापूर्ण संकल्पों, सपनों तथा उद्देश्यों को मूर्तरूप देने में बहुमुखी प्रतिभा के धनी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन जी की एकलव्यता, कर्तव्यनिष्ठता तथा समर्पणभाव का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वर्तमान में जम्बूद्वीप को एकाधिकार प्राप्त भव्यता एवं सौन्दर्यता जो ना केवल जैन समाज को अपितु पूरे जनमानस को अपनी ओर आकर्षित किए हुए है, इसका समस्त श्रेय ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन जी के धर्मभाव, दूर दृष्टिता, दिशानिर्देश, मृदुभाषिता तथा पूज्य माताजी के सान्निध्य को जाता है।

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन जी द्वारा विगत अनेक वर्षों से माताजी के निर्देश एवं सान्निध्य में जन-जन से संपर्क करना केवल जम्बूद्वीप में ही नहीं, अपितु बिहार, झारखंड, उत्तरप्रदेश आदि में नवीन मंदिरों की स्थापना तथा तीर्थंकरों की जन्मभूमि पर स्थित पुराने जिनालयों के जीर्णोद्धार आपके अथक प्रयासों से ही संभव हो पाये हैं। मांगीतुंगी में भगवान आदिनाथ की 108 फुट की प्रतिमा का निर्माण आपके दिशानिर्देश व अध्यक्षता में हो रहा है। आपके इस पुनीत श्रम के प्रति समस्त दिगम्बर जैन समाज सदैव ऋणी रहेगा। जैनधर्म के इतिहास के पन्नों पर आपका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित होगा।

हृदय की गहराइयों से अपनी समस्त शुभकामनाएँ कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के सम्मान में प्रेषित करता हूँ। पुण्योदयवश जिन्हें गणिनीप्रमुख पूज्य ज्ञानमती माताजी का अमृत प्रसाद ''स्वस्ति श्री कर्मयोगी पीठाधीश स्वामी जी'' का सम्मान प्राप्त हुआ। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि स्वामी जी के मार्गदर्शन में जम्बूद्वीप धर्मपीठ एवं समस्त भारत के जैन तीर्थ नई ऊँचाईयों को स्पर्श करते हुए अपने उद्देश्यों को प्राप्त करेंगे।

पुनः प्रेरणापुंज श्री ज्ञानमती माताजी तथा स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी को मेरा हार्दिक शत-शत नमन, अभिनंदन।

विनयांजलि एवं शुभकामनाएँ

-जे.सी. जैन
(चेयरमैन-रुड़की इंजीनियरिंग कॉलेज, हरिद्वार)

स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी को बहुत समय से हमने देखा है और उनकी असीम क्षमता को सबने महसूस किया है। वर्तमान में आज दिगम्बर जैन समाज में नेतृत्व की कमी है, हम सब ऐसा महसूस करते हैं। हमारे तीर्थक्षेत्र आज जिस स्थिति में हैं वह हम सब जानते हैं। जैन समाज हिन्दुस्तान में सबसे धनाढ्य एवं सम्पन्न समाज रहा है, हर प्रकार से यह समाज सक्षम है, फिर भी हमारे अनेक कार्य सम्पन्न नहीं हो पाते हैं। अभी हमारे कुलाधिपति महोदय सुरेश जी ने कहा कि अनेक प्रोजेक्ट शुरू होते हैं, लेकिन वे बीच में ही रह जाते हैं, पूर्णता प्राप्त नहीं कर पाते हैं। इन सबके पीछे मुझे यही महसूस होता है कि हमारे समाज में सही नेतृत्व की कमी है। वर्तमान में नये मंदिरों का निर्माण किया जाता है, निश्चित ही यह धर्म के प्रति समाज को जागरूक करने हेतु एवं युवा पीढ़ी को धर्म का अहसास दिलाने हेतु परम आवश्यक है। लेकिन मेरा मानना है कि इसके साथ पुराने मंदिरों का जीर्णोद्धार, विकास आदि कार्य अवश्य होना चाहिए। क्योंकि प्राचीन मंदिर हमारी मुख्य धरोहर हैं।

उपरोक्तानुसार वर्तमान स्थिति में हम ब्रह्मचारी रवीन्द्र कुमार जी को एक अच्छे नेता के रूप में देखना चाहते हैं। अनेक लोग उनके प्रति मुनि दीक्षा की भावनाएँ भाते हैं। लेकिन मैं मन से प्रार्थना करता हूँ कि वे समाज में इसी प्रकार रहकर धर्मकार्य को करें और समाज का नेतृत्व करते रहें। क्योंकि इस वेशभूषा में वे अपनी मर्यादा के अनुसार साधनों का उपयोग करके देश-विदेश में जाकर धर्म का प्रचार-प्रसार कर सकते हैं। अन्यथा मुनि दीक्षा के उपरांत उनकी मर्यादाएँ इतनी अधिक हो जाएंगी कि समाज को, जन-जन में उनका लाभ आसानी से मिलना मुश्किल होगा।

आज हमें खुशी है कि उन्हें पूज्य माताजी ने रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी बनाया है। उनकी महान विशेषता रही है कि वे छोटी-छोटी राशि से बड़े-बड़े कार्य पूरे कर देते हैं और हम लोग बड़ी-बड़ी राशि से करोड़ों रुपये खर्च करके भी बहुत सारे प्रोजेक्ट पूरे नहीं कर पाते हैं। ये सब कार्य तभी होते हैं, जब हमारे पास कार्य का अनुभव, कार्य की क्षमता और कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण तथा उचित कार्य प्रबंधन शैली विद्यमान होवे। स्वामी जी से समाज को बहुत सारी अपेक्षाएँ हैं। चूँकि आपको पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त है इसलिए आप किसी भी कार्य को करने में विफल नहीं हो सकते हैं। अतः हमें आपका मार्गदर्शन, नेतृत्व एवं आशीर्वाद सदा प्राप्त होता रहे और यह समाज विकास के नये-नये पायदान चढ़कर उन्नति को प्राप्त करे, यही इस अवसर पर आपके प्रति विनम्र विनयांजलि एवं शुभकामनाएं समर्पित करता हूँ।

(पीठाधीश पदारोहण समारोह में 20 नवम्बर 2011 को प्रत्यक्ष प्रस्तुत)

स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति पीठाधीश स्वामी जी जयवंत हों

-निर्मल कुमार सेठी, दिल्ली
(राष्ट्रीय अध्यक्ष-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा)

हमारे अत्यन्त प्रिय एवं श्रद्धेय क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज के स्वर्गवास से हमें बहुत ही दुःख लगा। परन्तु वे अपने अन्तिम समय में मुनि अवस्था प्राप्त करके परलोक सिधारे उससे हमें संतोष भी है। उन्होंने हस्तिनापुर के पीठाधीश पद पर रह करके जिन शासन की महती प्रभावना की। उन्होंने दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान से हजारों नहीं लाखों लोगों को जोड़ा है और उन्हें धर्म लाभ दिया है।

पूज्य श्री ज्ञानमती माताजी भलीभांति जानती हैं कि लोग गृहस्थ अवस्था में रहकर और विशेषकर व्यापारी लोग धर्म

के कार्यों में सहयोग तो दे सकते हैं परन्तु पूरा उन पर निर्भर रहना सही नहीं है। आज भारत वर्ष में अनेक संस्थाएँ हैं, जो व्यापारी, शिक्षक या अन्य श्रावक चलाते हैं परन्तु हमने देखा है कि वे लोग उन संस्थाओं के प्रति न्याय नहीं कर सकते क्योंकि उनका ध्यान बंटा हुआ रहता है। एक ही कार्य करें और उसको पूरी दक्षता के साथ करें तो वह कार्य ज्यादा सफल होता है। पूजय माताजी ने हस्तिनापुर में पीठाधीश की गद्दी इसी भावना के साथ स्थापित की और वे बहुत ही सफल रही है। पीठाधीश की गद्दी परिस्थापित होने के बाद पूज्य क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज ने अपना ऐतिहासिक योगदान दिया है। उन्होंने आर्ष परम्परा की रक्षा में पूज्य माताजी के मार्गदर्शन में जो योगदान दिया है, वह चिर-स्मरणीय रहेगा।

पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज के देहावसान के बाद पूज्य माताजी और दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के पदाधिकारियों सबने मिलकर के ब्र. रवीन्द्र जैन को पीठाधीश पद पर बैठाया। वह कार्य भी बहुत ही प्रशंसा के लायक है। शुरू से ही ब्र. मोतीचंद और ब्र. रवीन्द्र जी की जोड़ी रही है। ब्र. रवीन्द्र जी को शुरू से ही त्रिलोक शोध संस्थान एवं समाज के सब कार्यों की जानकारी रही है और उन्होंने काफी जिन शासन की प्रभावना बढ़ाने में अनेक महान् कार्य किये हैं। वे सरल स्वभावी, शांत चित्त वाले और उत्साही व्यक्ति पूज्य माताजी द्वारा बताये गये कार्यों को करने में हमेशा तत्पर रहते हैं। ऐसे योग्य, अनुभवी, उत्साही, कर्मठ ब्र.रवीन्द्र जी को पीठाधीश के पद पर बैठाकर माताजी ने हमारे दिगम्बर जैन समाज पर बहुत उपकार किया है, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए थोड़ी है। पूज्य माताजी के द्वारा बनाए गए पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति जी स्वामी के द्वारा आर्ष परम्परा की रक्षा होगी और जिन शासन की महती प्रभावना होगी, ऐसी हमें पूर्ण आशा है।

मैं महासभा की सभी संस्थाओं-धर्म संरक्षिणी, तीर्थ संरक्षिणी, श्रुत संवर्धिनी एवं महिला महासभा तथा जैन राजनैतिक चेतना मंच की तरफ से उनको साधुवाद देता हूँ। हमेशा उन्हें हमारे पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं सदस्य सहयोग देंगे, ऐसी भावना प्रकट करता हूँ और समस्त दिगम्बर जैन समाज से भी मेरा निवेदन है कि पूज्य पीठाधीश जहाँ भी जायें, उन्हें सम्मान प्रदान करें और उनका मार्गदर्शन प्राप्त करें और जिन शासन की प्रभावना बढ़ायें।

अभिवंदना

-आर.के. जैन, मुम्बई
(अध्यक्ष-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी)

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के चरणों में मेरा शत-शत नमन।

तीर्थ क्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन हेतु पूज्य माताजी ने अपना दूरदृष्टिकोण रखते हुए जम्बूद्वीप तीर्थ पर सन् 1987 में पीठाधीश पद की स्थापना की और यह संविधान पारित हुआ, कि जम्बूद्वीप तीर्थ के संरक्षण, विकास और संचालन हेतु सदा एक त्यागीव्रती, गृहविरत व्यक्तित्व को पीठाधीश मनोनीत कर तीर्थ की कमान सौंपी जायेगी। पूज्य माताजी का यह चिंतन अत्यन्त प्रशंसनीय एवं वर्तमान परिस्थिति के लिए प्रासंगिक है। क्योंकि संस्कृति के संरक्षण और उसके उत्थान के लिए आज ऐसे कर्मठ और समर्पित लोगों की समाज में आवश्यकता है, जिनके विश्वास पर धर्म की प्रभावना और तीर्थ का संचालन सुव्यवस्थित एवं सदा विकासशील बना रहे।

जम्बूद्वीप के प्रथम पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज रहे और उन्होंने अपने साधु जीवन के समस्त कर्तव्यों का पूर्ण पालन करते हुए उस संस्थान के प्रति यथायोग्य सेवा करके तीर्थ के संरक्षण और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही सम्पूर्ण समाज को भी उनका महत्वपूर्ण मार्गदर्शन और निर्देशन सदा प्राप्त हुआ।

पुनः उनके पश्चात् पूज्य माताजी ने ब्र. रवीन्द्र कुमार जी को पीठाधीश पद पर मनोनीत करके उन्हें स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी नाम प्रदान किया। वैसे तो रवीन्द्र कुमार जी ने अपना समग्र जीवन ही गुरु, धर्म और संस्कृति की सेवा के लिए समर्पित किया है लेकिन मुझे पूर्ण विश्वास है कि अब पीठाधीश के रूप में उनकी प्रतिभाशक्ति, तेज बल और

यशोगाथा अत्यन्त वृद्धि को प्राप्त करेगी और भारत वर्ष की सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज उनकी प्रतिभा एवं अनुभवों का लाभ लेकर नई दिशा प्राप्त करेगी।

स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी के पीठाधीश पदारोहण पर मैं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से उनके चरणों में अभिवंदना करते हुए उनके दीर्घ, स्वस्थ एवं यशस्वी जीवन की मंगलकामनाएँ करता हूँ।

वंदना एवं बधाई

-विजय जैन, अहमदाबाद
(राष्ट्रीय अध्यक्ष-दिगम्बर जैन महासमिति)

ब्र. रवीन्द्र कुमार जी की कर्मठता एवं कार्यकुशलता से आज सारा समाज भलीभांति परिचित है। समाज में अनेक कार्यों को करने का अवसर हमें भी प्राप्त होता है और किसी कार्य को सम्पन्न करने के लिए कितनी शक्ति का उपयोग करना होता है, यह हम बखूबी जानते हैं। पुनः यदि भाई जी के कार्यकलाप पर जब दृष्टिपात करते हैं, तो आश्चर्य भी होता है और अत्यन्त खुशी भी होती है कि आज हमारी समाज में भाई जी जैसा अत्यन्त निस्पृही एवं निःस्वार्थ सेवा करने वाला व्यक्तित्व जैन समाज को प्राप्त है। पूज्य माताजी की प्रेरणाओं पर सारे देश में जितने भी कार्यक्रम संचालित हो रहे हैं, उनकी सफलता में यदि किसी एक व्यक्ति का नाम लिया जाये, तो वह रवीन्द्र कुमार जी का ही आता है। उनकी कार्यशक्ति वास्तव में अद्भुत है। एक कार्य को पूर्ण करने के उपरांत पुनः दूसरे कार्य की योजना में लग जाना और उसे पूर्ण करते ही पुनः अगले कार्य की योजना में लग जाना, यही उनके जीवन का क्रम है, जिसके कारण आज भारत वर्ष की जैन समाज में अनेकानेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आयोजन, तीर्थों के निर्माण, साहित्य प्रकाशन, अद्भुत धर्मप्रभावना आदि के कार्य सम्पन्न हुए हैं।

मुझे बहुत प्रसन्नता हुई कि जब पता लगा कि अब भाई जी को स्वामी जी बना दिया गया है। पूज्य माताजी का यह चिंतन समाज, धर्म एवं संस्कृति के लिए अत्यन्त हितकारी है। पूज्य स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के लिए अब नये स्वरूप में उनका जीवन उनके स्वयं के लिए, माताजी के संघ के लिए तथा जैनधर्म व समाज के लिए अत्यन्त मंगलकारी होवे, यही मेरी शुभकामना है। अंत में स्वामी जी के चरणों में वंदना करते हुए मैं उनके पीठाधीश पदारोहण के अवसर पर दिगम्बर जैन महासमिति की ओर से उन्हें बहुत-बहुत बधाई प्रेषित करता हूँ।

स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी के पीठाधीश मनोनयन के उपरांत उनके जीवन वृत्त पर आधारित सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है अतः इस प्रकाशन हेतु भी मेरी शुभकामनाएं हैं एवं आशा है कि यह विशेषांक पाठकों को तथा समाज के भक्तों को नई दिशा प्रदान करेगा।

पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ के चरणों में मेरा बारम्बार वंदामि।

शुभकामना संदेश

-जवाहर लाल जैन, (संगठन मंत्री-दिगम्बर जैन महासमिति)

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि आप जम्बूद्वीप के पीठाधीश पद पर आसीन हुए। कृपया मेरी ओर से हार्दिक बधाई स्वीकार करें। प्रसन्नता का विषय है कि दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का आगामी अंक विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। उक्त विशेषांक सुन्दर व संग्रहणीय बने, इस हेतु मेरी ओर से शुभकामनाएँ तथा वंदना स्वीकार करें।

स्वामी जी के प्रति अंतर्मन के उद्‌गार

-श्रीमती सरिता जैन, चेन्नई
(उपाध्यक्ष-भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी,
अध्यक्ष-दिगम्बर जैन महिला महासभा)

शांतिनाथ भगवान की जय, गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि मेरी माँ आपके चरणों में शत शत वंदना, कोटिशः प्रणाम करती हूँ। आपकी कैसे प्रशंसा करूँ, मैं बहुत कुछ कहना चाहती हूँ पर हमेशा देखती हूँ कि निःशब्द हो जाती हूँ। आपके गुण महान और हम छोटे-छोटे से शब्दों में भी कुछ नहीं कह पाते। माँ मैं सिर्फ इतना कहना चाहती हूँ कि मैं अपने को भाग्यशाली समझती हूँ कि आप जैसी माँ मुझे मिली। आपने जब लिखना शुरू किया तो सरस्वती जी आ गई, हम जहाँ भी जाते हैं तो आपके विधान चलते रहते हैं तो कोई बड़े से बड़े आचार्य भी प्रशंसा किये बिना नहीं रहते। हमेशा कहते हैं कि क्या विधान लिखे हैं माताजी ने, क्या शास्त्र लिखे माताजी ने, जहाँ भी जायें अपकी प्रशंसा, आप हम महिलाओं का गौरव हैं, आप हमारा स्वाभिमान हैं, अभिमान हैं, आपने हमको क्या नहीं दिया, भारतवर्ष को क्या नहीं दिया, इतिहास में गोल्डन शब्द में लिखा हुआ आपका नाम है। आपको मैं शत शत नमन करती हूँ, प्रणाम करती हूँ।

रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी आपको शत शत नमन करती हूँ, क्योंकि आज तक हम भाई जी-भाईजी कहते थे, आज से हम आपको स्वामी जी कहेंगे, हम वन्दन करते हैं आपको, आपने तो पद और बिना पद के ही सारा भार संभाला है। और अब तो आपके कंधों पर और भी भार आ गया है।

एक तो एक साथ समाज और धर्म के बीच आप धार्माधिकारी हैं। हमेशा ही आप लोगों ने श्रावक समाज को बताया है, इस समय क्या जरूरत है, धर्म का जागरण धर्म के प्रति जागृति लाना, नहीं तो शायद आज जैन धर्म का उतना पता न चलता जितना कि आप भट्टारक स्वामी जी, पीठाधीश ने उद्धार किया है। धर्म का संवर्धन, संरक्षण आप ही लोगों ने किया है। आप ही एक कड़ी हैं हम समाज और साधु के बीच में, आप देव शास्त्र गुरु की रक्षा करते हुए उनकी वंदना करते हुए आगे बढेंगे और हमेशा आपने माताजी का कार्य संभाला आप दूसरे पीठाधीश हैं आपको हम नमन करते हैं। आज आपके वस्त्र बदल गये हैं ये तो पीठाधीश के लिए होते ही होते हैं। गेरुआ वस्त्र तो उनको पहने ही पड़ते हैं। साउथ में एक देवेन्द्र कीर्ति स्वामी जी बने हैं, परसों ही हम वहां से आये और आज रवीन्द्र कीर्ति स्वामी जी, हम अपने भाग्य को सराहते हैं कि दो दिन के अंदर हमने दो कीर्ति देख लिये और आपकी कीर्ति हमेशा दशों दिशाओं में फैले ऐसी हमारी प्रार्थना है।

(पीठाधीश पदारोहण समारोह में 20 नवम्बर 2011 को प्रत्यक्ष प्रस्तुत)

बाल ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमार 'भाई जी' से बने रवीन्द्रकीर्ति 'स्वामी जी'

-प्रो. डी. ए. पाटिल, जयसिंहपुर, (चेयरमैन-दक्षिण भारत जैन सभा)

20 नवम्बर 2011, यह तारीख भारत वर्ष के सभी जैन धर्मियों के लिए एक परिवर्तन का दिन है। क्योंकि इसी दिन जम्बूद्वीप तीर्थ के द्वितीय पीठाधीश के रूप में भारत को रवीन्द्रकीर्ति जी मिले हैं। यह दिन महत्वपूर्ण इसलिए है कि पूरे भारतवर्ष को पीठाधीश के रूप में धर्मसंरक्षण करने वाला एक महापुरुष मिला है। जिसने पूरे भारत में अपनी मधुरता, सरलता, सहजता, कर्मठता व निश्छलता से अपनी अलग पहचान बनाई है तथा सबको अपना बनाया है। उस महान व्यक्तित्व का नाम है-कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन जो वर्तमान के नूतन पीठाधीश बने हैं। 1950 में टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र. में जन्मे हुए बा.ब्र. रवीन्द्रकुमार जी ने पहले सन् 1968 में पूज्य माताजी से दो वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत लिया

पुनः सन् 1972 में उन्होंने पूज्य आचार्य श्री धर्मसगार जी से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लिया। आगे 1987 में उन्होंने पूज्य माताजी से सप्तम प्रतिमा व्रत धारण करके सम्पूर्ण घर-बार का त्याग कर दिया।

किसी भी तीर्थ अथवा धर्मसंस्था को सुसस्थापित रखने के लिए, उसके सही संचालन के लिए भट्टारक, पीठाधीश्वर अथवा धर्माधिकारी पद की आवश्यकता होती है। गुरु परम्परा में चलने वाली इन पीठों के माध्यम से धर्म की प्रभावना, संस्कृति का संरक्षण-संवर्धन तथा विकास होता है। इसी कारण सन् 1987 को जम्बूद्वीप तीर्थ में धर्म पीठ की स्थापना की गई और पीठाधीश्वर के रूप में क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी को बनाया गया। विगत 10 नवम्बर को उन्होंने मुनि अवस्था में समाधिमरण प्राप्त किया। पश्चात् पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी को द्वितीय पीठाधीश घोषित करके विधिवत् 10 प्रतिमा व्रत प्रदान किया और श्वेत वस्त्र में दिखने वाले ''भाई जी'' अब भगवे वस्त्र धारण करके पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति 'स्वामी जी' बन गये।

रवीन्द्रकीर्ति जी ने अपना सर्वस्व जीवन धर्म और समाज के लिए अर्पित किया है। देश की सभी जैन संस्थाओं से उनका निकट का संबंध रहा है। दक्षिण भारत जैन सभा से भी उनका संबंध अत्यन्त आत्मीयता का रहा है। सभा और त्रिलोक शोध संस्थान मानो एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर महाराज जी की परम्परा और बीसपंथी आम्नाय आगे भी दृढ़तापूर्वक चलाने या समाज के किसी कार्य के निमित्त से जब भी हम उनसे मिलते हैं, तब धर्म, समाज के प्रति उनकी चिंता, चिंतन और संस्था की प्रगति के संबंध में हमें गंभीरता दिखाई देती है। दक्षिण भारत जैन सभा को कोई भी काम हो या जम्बूद्वीप का यह दोनों संस्थाएँ मानों घुल-मिलकर परस्पर संबंध दृढ़ करके आगे बढ़ रहे हैं। इसका हमें बड़ा गर्व महसूस होता है।

बा. ब्र. रवीन्द्रकुमार जी संस्थाओं का प्रबंधन एवं कार्यक्रमों का अत्यन्त कुशलतापूर्वक नियोजन, संचालन करते हैं। उनके इसी वैशिष्टों से ही पूज्य माताजी ने अनेक क्षेत्रों का उद्धार तथा विकास किया है। भाई जी के चिंतन, नियोजन, सूक्ष्म निरीक्षण तथा संचालन से महाराष्ट्र में मांगीतुंगी जी पर्वत पर विशाल 108 फुट निर्माणाधीन भगवान आदिनाथ की मूर्ति जल्दी ही पूर्णतः साकार होगी इसका हमें पूरा विश्वास है।

पीठाधीश परमपूज्य रवीन्द्रकीर्ति महास्वामी जी को दक्षिण भारत की दिगम्बर जैन समाज की प्रतिनिधि संस्था 'दक्षिण भारत जैन सभा' की ओर से बहुत सारी शुभकामनाएँ व वन्दन।

शुभकामना संदेश

-अजय जैन, पटना (बिहार)
(अध्यक्ष-बिहार प्रान्तीय तीर्थक्षेत्र कमेटी)

भाई रवीन्द्र कुमार जी अब स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी हो गये हैं, यह जानकर हृदय अत्यन्त आल्हादित हो गया। उनका मार्ग शून्य से शिखर की तरफ है। पारस के स्पर्श से लोहा भी सोना हो जाता है, फिर पूज्य माताजी के अन्तेवासी भाई रवीन्द्र कुमार जी 10 प्रतिमा की दीक्षा लेकर श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी हो गये, तो इसमे विस्मय कैसा। कर्मयोगी तो वह पहले भी थे, लेकिन अब कर्मयोगी के साथ वे धर्मयोगी भी हो गये।

अवसाद सिर्फ एक है कि पहले हम निर्भीकता के साथ उनके कंधे में हाथ डालकर चर्चा किया करते थे, लेकिन अब बहुत विनयपूर्वक वंदना करते हुए सावधानी एवं संयमपूर्वक वार्ता करनी होगी।

वीर प्रभु से यही प्रार्थना है कि आप यशस्वी होवें, हम लोगों का मार्गदर्शन करें और वीरशासन को सुदीर्घ करते हुए यथाशीघ्र निर्ग्रन्थ दीक्षा धारण करें।

पुनः आपके चरणों में वंदना के साथ-

सादर अभिवंदन

-सुमन जैन, इंदौर
(राष्ट्रीय अध्यक्ष-अ.भा.दि. जैन महिला संगठन) एवं उषा पाटनी, रेखा पतंग्या, सह संपादक-ऋषभ देशना

नवल वर्ष में, नवल हर्ष ले, नव पद को करते हैं नमन।
नव पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति जी का है सादर अभिवंदन।
उत्तरप्रदेश में बाराबंकी, इक छोटा सा है जनपद,
उसमें ग्राम टिकैतनगर, महिमा सुन मन होता गद्गद
क्या 'ज्ञानमती', क्या 'रत्नमती', 'चंदना', 'अभय' ने छोड़ा घर
रत्नत्रय पथ चाहने वाले 'रवीन्द्र' भी टिक नहीं सके टिकैतनगर
धर्मस्नेही श्री 'छोटेलाल जी' और 'मोहिनी' का जीवन धन्य
संतानों की त्याग, तपस्या और यश का फैला वैभव
सन् उन्नीस सौ पचास जब आया, गूंजी रवीन्द्र की किलकारी
पुत्र जन्म का आनंद उत्सव, सजी हर्ष की फुलवारी।
बहन 'मैना' की गोद में खेले, माँ के जैसा प्यार मिला,
बी.ए. तक की करी पढ़ाई, फिर तो धर्म का द्वार खुला।
जननी 'माँ' भी दीक्षा पाकर फिर रत्नमती कहलाई थी,
गृहस्थरूपी कीचड़ में ना फंसने की सीख सिखाई थी।
सन् बहत्तर अप्रैल माह, नागौर में ब्रह्मचर्य व्रत पाया
आचार्य प्रवर श्री धर्मसागर जी का सान्निध्य भी मन भाया
मोक्षमार्ग पर चलने की माँ ज्ञानमती ने दिखाई राह।
अनुभव के मोती पाये और बढ़ने लगी मोक्ष की चाह।
जम्बूद्वीप हस्तिनापुरी, में विकसित होने लगा संस्थान
तबसे पूर्ण समर्पित होकर, थामी अपने हाथ कमान,
काकंदी, प्रयाग, अयोध्या, कुण्डलपुर का किया विकास
मांगीतुंगी में अतिशय प्रतिमा, ज्ञानतीर्थ हित किये प्रयास
ऋषभदेव विद्वत् महासंघ के अध्यक्ष पद को किया ग्रहण
विद्वानों को गले लगाया, विकसित किया महिला संगठन।
क्षुल्लक मोतीसागर जी का स्वर्ग-लोक हित हुआ प्रयाण,
बने आप तब पीठाधीश्वर, पूर्ण हुए सब विधि-विधान।
रवीन्द्र जैन से 'रवीन्द्रकीर्ति' बने हर्ष समाया सबके मन,
'उषा' प्रकाशित, 'रेखा' अरुणिम, मन उपवन में खिले 'सुमन'
ग्रंथ प्रकाश, मंगल अवसर, अंतर्तम यही भाव भरें,
रत्नत्रय की दिव्य ज्योति से जीवन में उत्कर्ष रहे।
इन्हीं मंगल कामनाओं के साथ स्वमी जी के चरणों में
शत-शत नमन।

विनयांजलि

-श्रीमती मालती जैन 'धर्मालंकार'
बसंत कुंज, दिल्ली

प्रतिमा बना-बना के, प्रतिभावान बन गये।
स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी महान बन गये।।
माँ रत्नमती जी से संस्कार मिले सच्चे।
माँ ज्ञानमती जी के सपने हैं बड़े अच्छे।।
सपनों को पूरा करने का अरमान बन गये।
स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी महान बन गये।।1।।

बचपन से ही रवीन्द्र जी प्रतिभा के धनी हैं।
हो अंकगणित, बीजगणित सब में गुणी हैं।।
हर क्लास में प्रथमता, निष्णात बन गये।
स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी महान बन गये।।2।।
शिक्षा के साथ सीख ली व्यापार की कला।
भाई-पिता सब खुश बड़े बेटा बड़ा भला।।
माता-पिता, नगर का स्वाभिमान बन गये।
स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी महान बन गये।।3।।

माता-पिता ने ब्याह का संयोग बनाया।
पर भाई मोतीचंद ने गुरु दर्श कराया।।
गुरु-मंत्र मोक्षमार्ग के आधार बन गये।
स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी महान बन गये।।4।।
माँ ज्ञानमती जी में ऐसी है कुछ कला।
जिस पर हो कृपा दृष्टी उसका हुवा भला।।
शिष्यत्व अरु पुरुषार्थ की पहचान बन गये।
स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी महान बन गये।।5।।

शुभकामना संदेश

-श्रीमती मनोरमा जैन, दिल्ली
(राष्ट्रीय महामंत्री-अ.भा. दि. जैन महिला संगठन)

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी को भाई रवीन्द्र जी के नाम से सारा भारत ही नहीं सारा विश्व जानता है। उनका परिचय देना आवश्यक नहीं है, वह खुद ही परिचित हैं। माताजी जो सपना देखती हैं, उसको साकार करने में भाई जी अपने तन-मन से सहयोग करते हैं। उनकी गुरु भक्ति का परिचय देखने को उनके जीवन में हमेशा मिला, उन्होंने कभी माताजी के किसी भी काम को इंकार नहीं किया। उन्होंने गुरु आज्ञा मानकर पीठाधीश के पद को भी शिरोधार्य किया।

उनकी कर्मठता को देख कर अखिल भारतवर्षीय शास्त्री परिषद ने उन्हें 1992 में 'कर्मयोगी' की उपाधि दी। 1996 में वीर सेवा दल महाराष्ट्र द्वारा 'धर्मसंरक्षणाचार्य' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

आप कुशल कार्यकर्ता हैं। हम जहाँ भी जाते हैं आपके गुणों को सुनकर हम अपने आप को गौरवान्वित समझते हैं कि हम आपसे जुड़े हुए हैं। गिरनार जी की यात्रा में आचार्य श्री 108 निर्मल सागर जी महाराज के मुख से आपके प्रति जो उद्‌गार थे कि आप एक साहसी एवं कुशल कार्यकर्ता हैं। जिन्होंने इतना सुन्दर हस्तिनापुर, अयोध्या, काकंदी, कुण्डलपुर, प्रयाग, राजगृही आदि तीर्थों का काम समय में ही पूरा कर दिया, तो हमारा सिर गर्व से ऊँचा उठ गया। किसी कवि ने ठीक कहा है-''आदमी साधनों से नहीं, साधना से महान होता है, अधर्मी सम्पदा से नहीं संस्कारों से महान होता है।''

अंत में भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि स्वामी जी इसी तरह धर्म के कार्य करते रहें, हमें भी अपने साथ धार्मिक कार्यों में जोड़ते रहें।

विनयांजलि

-श्रीमती आशा जैन, दिल्ली
(पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष-अ.भा. दि. जैन महिला संगठन)

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र की धर्मपीठ पर गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न वरिष्ठ साध्वी 105 श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा क्षुल्लकरत्न पीठाधीश 105 श्री मोतीसागर जी महाराज के देवलोक के उपरांत नूतन पीठाधीश की पदवी पर कर्मयोगी भाई रवीन्द्र कुमार जी, जो कि संस्थान के अध्यक्ष भी हैं, उनको 10वीं प्रतिमा से विभूषित कर स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी बनाने पर अखिल भारतीय दिगम्बर जैन महिला संगठन दिल्ली की महिलाओं में खुशी की लहर दौड़ गई।

सर्वविदित ही है कि जम्बूद्वीप के नये पीठाधीश कर्मयोगी स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी ने अपना सर्वस्व जीवन धर्म एवं गुरु की सेवा में ही व्यतीत किया। सन् 1987 में आपने पूज्य माताजी से सप्तम प्रतिमा के व्रत लेकर सम्पूर्ण घर-बार का त्याग कर दिया और पूज्य माताजी के चरण सान्निध्य में समर्पित हो गए। आप जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में तो कुशल संचालन कर ही रहे हैं उसके साथ-साथ 24 तीर्थंकरों की जन्मभूमियों का जीर्णोद्धार करवाने में भी तत्पर हैं। आप अनेक प्रमुख जैन संस्थाओं के अध्यक्ष हैं। आपकी कर्मठता व आगम के अनुसार कार्यशीलता को परख कर अखिल भारतवर्षीय शास्त्री परिषद द्वारा सन् 1992 में आपको कर्मयोगी की उपाधि से विभूषित किया गया। सन् 1996 में वीर सेवा दल महाराष्ट्र द्वारा आपको धर्म संरक्षणाचार्य की उपाधि प्रदान की गई तथा वर्ष 2007 में समस्त भट्टारक

संघ द्वारा 'संस्कृति संरक्षक' की उपाधि से अलंकृत किया गया। सन् 2000 में आपने न्यूयार्क (अमेरिका) में यू.एन.ओ. द्वारा आयोजित विश्वशांति शिखर सम्मेलन में जैन धर्माचार्य के रूप में भाग लेकर अहिंसा परमोधर्मः का डंका बजाया। परमपूज्य माताजी द्वारा बनाई गई संस्था अ.भा. दि. जैन महिला संगठन ने भी आपके निर्देशन में 15 वर्षों में स्थान-स्थान पर धार्मिक कार्यक्रम करते हुए धर्म का खूब प्रचार किया है। ऐसे योग्य कर्मयोगी ब्र. भाई रवीन्द्र कुमार जी को नूतन पीठाधीश बनाकर स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी का पद देने पर हम अ.भा. दिगम्बर जैन महिला संगठन की समस्त बहनें बहुत खुश हैं और भावना भाती हैं कि आपके सुयोग्य संचालन में महिला संगठन और उन्नति के शिखर पर पहुँचेगा।

कर्मठ व्यक्तित्व के धनी भाई 'रवीन्द्र'

-कैलाशचंद जैन सर्राफ, लखनऊ
(अध्यक्ष-लखनऊ सर्राफा एसोसिएशन)

हमें अच्छी तरह याद है-जब लखनऊ युनिवर्सिटी में रवीन्द्र कुमार अध्ययन करते थे, जैन बाग के जिस कमरे में रहते थे, दो चार फोटो, कैलेण्डर लगा रखे थे, वह अत्यन्त सादगी एवं प्रेरणादायक थे। तभी इनकी सादगी से प्रभावित होकर (समाधिस्थ-मुनि मोतीसागर महाराज) ब्र. मोतीचंद जी ने कहा था कि **'होनहार विरवान के होत चीकने पात'** की कहावत को चरितार्थ करने वाले भाई रवीन्द्र कुमार स्वयं में एक प्रेरणास्रोत हैं। पढ़ाई में सच्ची लगन, सहपाठियों के साथ मधुर व्यवहार और परीक्षा में सदैव उत्तीर्ण होने वाले लघु भ्राता रवीन्द्र कुमार सदैव छात्रवृत्ति से गौरवान्वित किये जाते थे।

इनकी इच्छा देखकर हमनें टिकैतनगर अपने प्रतिष्ठान के ऊपर एक सुन्दर दुकान बनवाकर नया प्रतिष्ठान प्रारंभ करवाया था। जो अल्प समय में ही प्रगति पर अग्रसर हुई। किन्तु माताजी के संघ से ब्र. मोतीचंद जी पहुँचकर माताजी के दर्शनों को ब्यावर लिवा ले गये। पश्चात् माताजी के आदेश से पूज्य आचार्य धर्मसागर जी महाराज के दर्शनार्थ नागौर ले गये। जहाँ पर इन्होंने आचार्यश्री से आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार कर लिया। उस समय हमें बहुत आघात लगा था। पूज्य पिताजी की समाधि 25 दिसम्बर 1969 को कराने हेतु रविवार के दिन प्रातः रवीन्द्र कुमार लखनऊ से टिकैतनगर पहुँच गये थे। उस समय हम चारों भाई पिताजी के सम्मुख मौजूद थे। अंत समय में माताजी को याद करते हुए णमोकार मंत्र श्रवण के साथ समाधिस्थ हो गये थे। पश्चात् परिवार वालों के साथ कुछ दिन रहे। फिर माताजी के संघ में आ गये।

संघ में पूज्य माताजी की प्रेरणा, पूज्य चंदनामती माताजी एवं क्षुल्लक मोतीसागर जी महाराज के साथ माताजी की सभी योजनाओं को तन-मन-धन से मूर्तरूप देने में सहयोगी बने। आपकी कर्तव्य निष्ठा एवं सच्ची लगन से ही आप कर्मयोगी बने। माताजी के संघ में रहकर शास्त्रों का, व्याकरण एवं आगम के क्लिष्ट ग्रंथों का अध्ययन किया। आपकी निर्लोभी प्रवृत्ति, धर्मनिष्ठ कार्य सेवा, विनय एवं लगन प्रारंभिक गुण रहे हैं। पूज्य माताजी ने पीठाधीश स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी पदारोहण करके एक आदर्श प्रस्तुत किया है। जैन समाज की तमाम आशाओं के प्रति पूज्य जननी माँ समाधिस्थ श्री रत्नमती माताजी, पूज्य ज्ञानमती माताजी, पूज्य चंदनामती माताजी, पूज्य अभयमती माताजी के आशीर्वाद रूप सदैव सफल एवं समुन्नत रहेंगे।

पूज्य पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति जी से ही हो सकेगी धर्म एवं संस्कृति की रक्षा

-बिजेन्द्र कुमार जैन, दिल्ली
(राष्ट्रीय महामंत्री-अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद)

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का भक्त और शिष्य बनना ही गौरव की बात है और जिसने उसी परिवार में जन्म लिया हो, उसके लिए तो यह पूर्व भव का वह पुण्य है, जो किन्हीं विरले जीवों को ही प्राप्त होता है। श्री रवीन्द्र कुमार जी ने बहुत छोटी सी आयु में ही उत्तम ब्रह्मचर्य व्रत को पालन करके कर्मयोगी बनकर समाज, धर्म एवं जैन संस्कृति की रक्षा की। युवाओं में जैन सिद्धान्तों को अंगीकार करवाने हेतु सम्पूर्ण देश में भ्रमण किया और जैनधर्म की पावन ध्वजा को फहराने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इनके निर्देशन में एवं पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के आदेशानुसार एक, दो, नहीं सैकड़ों तीर्थों के जीर्णोद्धार कराकर श्रमण संस्कृति की रक्षा की गई है।

मैं अपने को अत्यन्त पुण्यशाली मानता हूँ कि जहाँ मुझे पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का शिष्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, वहीं परमपूज्य आदरणीय कर्मयोगी श्री रवीन्द्र कुमार जैन 'भाई जी' के कुशल नेतृत्व में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद का राष्ट्रीय महामंत्री बनकर संस्था के संचालन एवं सामाजिक धार्मिक एवं जन कल्याण के कार्य करने का संबल प्राप्त हुआ।

पूज्य माताजी की दिव्य दृष्टि ने पूज्य क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसगर जी महाराज को उनकी अपूर्व क्षमता को देखकर ही संस्थान का पीठाधीश नियुक्त किया था, परन्तु उनके असमय ही समाधि होने के पश्चात् कर्मयोगी श्री रवीन्द्र कुमार जी को श्री रवीन्द्र कीर्ति स्वामी बनाकर हम जैसे व्यक्ति जो सांसारिक कार्यों में फंसे पड़े हैं, उन पर बहुत बड़ा उपकार किया है और हमें विश्वास है स्वामी जी अपने कुशल नेतृत्व से जन-जन का कल्याण करते हुए धर्म एवं संस्कृति की रक्षा करेंगे। मैं उनके दीर्घायु एवं संयम की अनुमोदना करते हुए प्रभु से यही प्रार्थना करता हूँ कि वे साधु परमेष्ठी के रूप में पहुँचकर हमें भी इस संसार के कार्यों से छुड़ाकर मोक्षमार्ग में अवश्य लगायेंगे।

ब्रह्मचारी से स्वामी जी तक की प्रेरणादायक यात्रा

-सुरेश जैन रितुराज, मेरठ
(राष्ट्रीय अध्यक्ष-भारतीय जैन मिलन व अध्यक्ष-दिगम्बर जैन समाज मेरठ)

जम्बूद्वीप को आज कौन नहीं जानता। परमपूज्यनीय आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा से निर्मित जम्बूद्वीप केवल हस्तिनापुर की शान नहीं है, बल्कि पूरे देश में इसे महान् सांस्कृतिक एवं धार्मिक धरोहर के रूप में जाना जाता है। हस्तिनापुर जैन धर्मावलम्बियों का सर्वोच्च तीर्थ क्षेत्र है। अजैनों के बीच यह प्रचारित करने में जम्बूद्वीप का उल्लेखनीय योगदान है, यह कहना अतिशयोक्ति न होगी।

जम्बूद्वीप ने जो आयाम स्थापित किये हैं निःसदेह यह परमपूज्यनीय श्री ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा और आशीर्वाद से प्राप्त किये हैं लेकिन इसकी असाधारण और चमत्कारिक सफलता के पीछे अगर पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का उल्लेख न किया गया, तो शायद यह उचित न होगा।

मैं माताजी और जम्बूद्वीप से काफी सालों से जुड़ा हुआ हूँ। मेरठ में श्री प्रेमचंद जैन (तेल वालों) ने कमलानगर (मेरठ) में मंदिर निर्मित किया था और माताजी के पावन सान्निध्य में उसका पंचकल्याणक सम्पन्न हुआ था। मैं पंचकल्याणक का चेयरमैन था। माताजी के सान्निध्य में भगवान ऋषभदेव निर्वाणमहोत्सव समिति का गठन हुआ था, उसका मैं महामंत्री था।

इन सभी कार्यों में बाल ब्रह्मचारी श्री रवीन्द्र जी का मुझसे संपर्क रहा था। मैंने तभी उनकी अद्भुत प्रतिभाओं को नजदीक से देखा। रवीन्द्र जी में कार्य करने की क्षमता भी है और जैनधर्म के उत्थान के प्रति ललक भी है।

जम्बूद्वीप के निर्देशन में हस्तिनापुर के अतिरिक्त अन्य कई स्थानों पर मंदिर, धर्मशालाएँ निर्मित हुई हैं। अयोध्या, मांगीतुंगी, प्रयाग आदि 7-8 स्थानों पर आज स्वामी जी के निर्देशन में अविस्मरणीय कार्य हुए हैं और चल रहे हैं।

जैन संस्कारों को आगे बढ़ाना.....जैन धर्म की सम्पदा को हमेशा-हमेशा के लिए सुरक्षित करना.....यह सब इतना कठिन कार्य है, जिसे स्वामी जी बड़ी कुशलता के साथ कर रहे हैं।

परमपूज्य पीठाधीश श्री मोतीसागर जी महाराज की समाधि के पश्चात् परमपूज्य श्री ज्ञानमती मातजी ने जैनधर्म की इस विशाल सम्पदा को नियंत्रित करने के लिए नूतन पीठाधीश के रूप में स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी को मनोनीत किया।

भारतीय जैन मिलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में हस्तिनापुर में मेरे द्वारा दो बड़े कार्यक्रम हुए। मार्च 2010 में भारतीय जैन मिलन का केन्द्रीय अधिवेशन माताजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। 6 नवम्बर 2011 को मांस निर्यात को बंद कराने के लिए अहिंसा महारैली का भव्य आयोजन हुआ, जिसमें हजारों की संख्या में लोगों ने भाग लिया।

उत्तरप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री राजनाथ सिंह जी को हेलीकॉप्टर द्वारा अहिंसा महारैली में पहुँचना था। रातों-रात जम्बूद्वीप में हैलीपैड निर्मित किया गया। अन्य वी.आई.पी. व्यवस्था की गई। यह सब स्वामी जी के सहज परिणामों का फल था।

मैंने कई अवसरों पर देखा है कि स्वामी जी असहज नहीं होते। बड़ी से बड़ी कठिनाई आने पर भी वे सुगुणता और स्वाभाविक रूप से उस कठिनाई को नियंत्रित कर लेते हैं।

मुझे इसमें कतई शक नहीं है कि स्वामी जी के कुशल निर्देशन में जम्बूद्वीप तथा उससे जुड़ी सभी जैन संस्थाओं का विकास होगा....विस्तार होगा।

उनका ब्रह्मचारी से स्वामी बनना एक सुखद संकेत है....उनके निर्देशन में इसकी सुगंध से हमारा धर्म और ज्यादा महकेगा।

ब्रह्मचारी से स्वामी जी तक की प्रेरणादायक यात्रा अब रुकने वाली नहीं है। इसके अच्छे और सुनहरे परिणाम होंगे यह मैं दावे से कह सकता हूँ। स्वामी जी के चरणों में नमन-वंदन।

पूज्य स्वस्तिश्री बालब्रह्मचारी कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का जीवन सराहनीय प्रशंसनीय एवं अभिनंदनीय है

-डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल, पैठण
(महामंत्री-भगवान ऋषभदेव मूर्ति निर्माण कमेटी, मांगीतुंगी)

यह हम लोगों का सौभाग्य है कि 10वीं प्रतिमाधारी स्वामी जी एक नैष्ठिक एवं धर्मकार्य सम्पन्न कराने में अनूठा उदाहरण है। आप जैसा श्रावक धर्म का पूरा आचरण करते हुए सभी धार्मिक क्षेत्रों में सरलता, सहिष्णुता, उदारता एवं विवेक पूर्ण कार्य को संचालित करने वाला दूसरा कोई भी नहीं है।

यह तो मानना ही होगा कि इस हीरे को तरासने में परमपूज्य प्रथम गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का परम वरदहस्त रहा है। आपका जन्मस्थल टिकैतनगर (बाराबंकी) अवध प्रान्त रहा है। स्वामी जी ने आपने चारित्र से कई युवा पीढ़ी को सन्मार्ग एवं मोक्षमार्ग की ओर चलने का रास्ता प्रशस्त किया है। मैंने मेरे जीवन में 1 साल में 5 पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अथ से इति पर्यन्त करने वाला आप जैसा महात्मा नहीं देखा।

आपने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पर भगवान महावीर मंदिर, जम्बूद्वीप, ध्यान मंदिर, कैलाशपर्वत पर 72 जिन की रचना, ह्रीं मंदिर, 31 फुट उत्तुंग भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ की प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा तथा अद्वितीय तेरहद्वीप रचना, कीर्तिस्तंभ, तीनलोक रचना, तीनमूर्ति भगवान ऋषभदेव, भरत, भगवान बाहुबली का मंदिर तथा रत्नों की प्रतिमाओं को विराजमान एवं सहस्रकूट चैत्यालय, नवग्रह शांति मंदिर, ॐ मंदिर की रचना, विदेह क्षेत्र में स्थित 20 तीर्थंकर रचना, वासुपूज्य भगवान का मंदिर, भूत-भविष्य-वर्तमान तीर्थंकरों की 72 रत्न प्रतिमा, अयोध्या ऋषभदेव तपस्थली का नवनिर्माण, इलाहाबाद-प्रयाग में कैलाशपर्वत, समवसरण मंदिर एवं भगवान ऋषभदेव की 1000 साल तपस्या की प्रतिकृति रूप प्रतिमा तथा काकंदी भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि, भगवान महावीर जन्मस्थली कुण्डलपुर आदि तीर्थों का विकास किया है। इन कार्यों का निर्देशन, मार्गदर्शन रचनाओं की कल्पना का श्रेय परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को ही जाता है। लेकिन यह सभी कार्य सम्पन्न कराने में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, स्व. क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज एवं रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का बहुत योगदान रहा है।

आज भी विश्व विख्यात प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की 108 फुट विशालकाय मूर्ति निर्माण कमेटी के अध्यक्ष आप अत्यंत सुचारू रूप से कार्य सम्पन्न करा रहे हैं। इसी तरह त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर, अयोध्या दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर दि. जैन समिति, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद आदि स्थानों के अध्यक्ष के रूप में आप पदभार संभाल रहे हैं।

आप गुणवंत-पुण्यवंत एवं भाग्यवंत हैं। जिनको समय-समय पर पूज्य ज्ञानमती माताजी का मार्गदर्शन प्राप्त होता है।

आपने माताजी के लिखित 250 से अधिक ग्रंथों को प्रकाशित करके उसकी लाखों प्रतियाँ प्रकाशित की है।

16 साल से उनके नित्य संपर्क में रहते हुए मैंने उनको प्रशंसा, बड़ापन, प्रसिद्धी से दूर देखा है। क्रोध पर उन्होंने विजय प्राप्त की है तथा मोह से दूर हैं। 24 तीर्थंकरों की 16 जन्मभूमियों में से 9 जन्मभूमियों का विकास करने में सम्पूर्ण सफलता माताजी के निर्देशन में आपने प्राप्त की है।

आपने माताजी की प्रेरणा से न्यूयार्क में जाकर धर्म प्रचार किया है। अंतर्राष्ट्रीय कार्य किये हैं। आपने पूज्य माताजी की प्रेरणा से कई तीर्थों का निर्माण, मंदिरों का निर्माण, कई पंचकल्याणक महोत्सव सम्पन्न किये हैं। पूरे देश में रथों का प्रवर्तन कराना, कई विधानों का आयोजन, नियोजन सफलतापूर्वक किया है।

आपने प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी, प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी, कई गणमान्य नेता जो माताजी के दर्शन एवं कार्यक्रम में आते हैं, उन कार्यक्रमों का नियोजन आयोजन किया है।

महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभाताई पाटिल जब पूज्य माताजी से आशीर्वाद लेने हस्तिनापुर आई, तो उस कार्यक्रम का पूरा नियोजन एवं संचालन आपके नेतृत्व में हुआ।

यह कहते हुए गर्व होता है कि आपने समाज के कई वाद-विवादों का निपटारा किया है। कतिपय मंदिर और उससे संबंधित लगभग 200 बिल्डिंग का कार्य सानंद पूरा किया है और 10000 से ज्यादा दिगम्बर जैन मूर्तियाँ पद्मासन एवं कायोत्सर्ग में माताजी के मार्गदर्शन में विराजमान की हैं। यह चरित्र देखकर ऐसा लगता है कि आप एक महान मोक्षमार्ग प्रशस्त करने का बड़ा भारी उपक्रम कर रहे हैं।

आपकी 9 बहनें, 4 भाई सब परिवार 175 की संख्या तक पहुँचा है। आपके पिता श्रीमान छोटेलाल जी गोयल सर्राफ तथा माता परमपूज्य वात्सल्यमूर्ति धर्मनिष्ठ आर्यिका रत्नमती माताजी जिन्होंने परमपूज्य ज्ञानमती माताजी से दीक्षा लेकर मोक्षमार्ग प्रशस्त किया है।

दो उदाहरण देश में प्रसिद्ध हैं एक चारित्र चक्रवर्ती शांतिसागर जी महाराज ने अपने बड़े भाई को दीक्षा दी तथा बड़े माताजी ज्ञानमती माताजी ने अपनी माँ को दीक्षा दिलाकर अनूठा उदाहरण स्थापित किया है।

जल्द ही भगवान ऋषभदेव की विशालकाय 108 फुट दिगम्बर जैन मूर्ति जो मांगीतुंगी में बन रही है, उसका स्वरूप तरासने का काम माताजी के निर्देशन में तथा स्वामी जी के अध्यक्षता में शुरू होने जा रहा है।

आपका जन्म श्रुतपंचमी के शुभ मुहूर्त का है। आपका अत्यन्त प्रेरणादायी, प्रभावशाली धार्मिक कार्य और छोटे-बड़े जीवों के प्रति करुणाभाव मैत्रीभाव रहे। आपका मंगल आशीर्वाद सभी को प्राप्त होता रहे।

मैं खुद को भाग्यशाली मानता हूँ कि मुझे आपके मार्गदर्शन में कार्य करने का, सेवा करने का मौका मिला। आपका जीवन आरोग्यमय दीर्घायु हो, यही मंगल कामना करता हूँ।

शुभकामना संदेश

-दिनेश कुमार जैन

(मंत्री-दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, हस्तिनापुर)

प्रातःस्मरणीय परमपूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी एवं प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ससंघ के पावन चरणों में वंदामि करते हुए धर्मप्रेमी बंधुओं, मातृशक्ति एवं पत्रकार बंधुओं!

आज के इस महान कार्यक्रम की मधुरम बेला में पीठाधीश पद पर रवीन्द्र भाई जी का पदारोहण मेरे लिए व समाज के लिए अद्भुत, अनुपम एवं उत्साहवर्धक रहेगा। आज से तीन दशक पूर्व श्री रवीन्द्र जी से हुआ परिचय इतनी आत्मीयता को प्राप्त करेगा, इस विश्वास से मन-वचन-काय रोमांचित हो गये हैं। मैं तो आज बने पीठाधीश स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी के प्रति अपनी विनयांजलि अर्पित करते हुए ये भावना व्यक्त करता हूँ कि उनका वरदहस्त मेरे पर भी सदा बना रहे। स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी के लिए मेरे हृदय से निकली ये चार लाइनें प्रस्तुत हैं–

सबको अपना कर लेते हैं, एक मीठी मुस्कान हैं ये।
हर मंजर पर छा जाते हैं, मुरली की मीठी तान हैं ये।।
हर कोई संग चल देता है, ऐसा एक आह्वान हैं ये।
इनको मैं क्या कह पुकारूँ, एक प्यारे इंसान हैं ये।।

People like him, who makes the world a better place to live

मैं सूर्य का पर्यायवाची 'दिनेश' सभा संचालक श्री जीवन के प्रकाश में मिलकर अगर समाज के लिए कुछ कर पाऊँगा, तो यह जीवन सार्थक हो जायेगा।

(पीठाधीश पदारोहण समारोह में 20 नवम्बर 2011 को प्रत्यक्ष प्रस्तुति हेतु सम्प्रेषित)

शुभकामना संदेश

-सुरेखा रायनाडे, भोज

(प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के गृहस्थ परिवारजनों की ओर से उनके भाई की पड़पोती)

हमें ब्र. रवीन्द्र भैय्या जी के पीठाधीश पद का पता चला अतः यह जानकर मन में बहुत खुशी हुई। उनके पीठाधीश पदारोहण के कार्यक्रम में हम नहीं आ सके, लेकिन हमारे पूरे परिवार की तरफ से ब्र. रवीन्द्र कुमार जी को स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी बनने के उपलक्ष्य में हम उनके प्रति हाथ जोड़कर वंदना करते हुए जिनेन्द्र भगवान से उनके दीर्घ एवं मंगलमयी जीवन की कामना करते हैं।

पूज्य स्वामी जी के प्रति कतिपय विद्वानों द्वारा सम्प्रेषित विनयांजलियाँ

एक अनन्य सेवाव्रती

-प्राचार्य नरेन्द्र प्रकाश जैन, फिरोजाबाद

यों तो समुन्दर में बेशक कुछ भी कमी नहीं।
लाखों मोती हैं मगर इस आब का मोती नहीं।।

गेरुआ रंग की कोपीन और खण्ड वस्त्र (चादर) में लिपटे स्वस्थ-सुडौल शरीर, सौम्य-सस्मित मुखाकृति, धर्मस्नेह से भरी आँखों, मृदु-मधुर वाणी और निष्कपट व्यवहार के धनी पूज्य क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज की यही छवि हमारे दिल में रची-बसी है। भले ही उनकी भौतिक काया अब हमारे सामने नहीं है, परन्तु उनकी यशःकाया तो सदैव भक्तजनों की स्मृतियों में अमिट रूप से अंकित रहेगी।

जम्बूद्वीप-रचना (हस्तिनापुर), नंद्यावर्त महल (कुण्डलपुर-नालंदा), ऋषभदेव तपस्थली (प्रयाग) एवं भगवान पुष्पदंतनाथ दि. जैन मंदिर (काकंदी, गोरखपुर) की नव्य-भव्य संरचनाओं की स्वजदृष्टा और सूत्रधार पूज्य बड़ी और छोटी माताजी के दायें और बायें हाथ के रूप में कर्मयोगी भाई जी एवं पूज्य क्षुल्लक जी का नाम सम्पूर्ण जैन जगत में बड़े आदर के साथ लिया जाता रहा है। दोनों माताजी किसी भवन के गुम्बद पर स्थापित स्वर्ण कलश एवं स्वर्ण ध्वजा के समान हैं। पूज्य क्षुल्लक जी को उस भवन के सामने स्थित कीर्तिस्तंभ कहा जा सकता है। उनके सेवा-समर्पण की भावना को देखकर किसी शायर की ये पंक्तियाँ याद आती हैं–

उस बोरियानशी[1] का दिल से मुरीद[2] हूँ।
जिसके रियादे जुहद[3] में बूएरिया[4] न हो।।

अर्थात् चटाई पर बैठे उस साधक पर मैं दिल से फिदा हूँ, जिसके व्रत और त्याग में बनावट की गंध नहीं है। वह उस बीते हुए 'कल' की तरह थे, जिसने अपने को मिटाकर आने वाले 'कल' की नींव रखी है। वह एक अनन्य सेवाव्रती थे। उनकी निःस्पृह कर्मनिष्ठा के प्रति हम अपनी विनम्र विनयांजलि समर्पित करते हैं।

भाई जी नहीं, अब हैं वह स्वामी जी

कर्मयोगी भाई रवीन्द्र जी को हम एक कुशल संगठक, समन्वयक और स्थापत्य शिल्पशास्त्री के रूप में जानते हैं। आज हम उन्हें श्रावक की तप-साधना के दसवें सोपान (अनुमति त्याग प्रतिमा) की ऊँचाई पर अवस्थित देखकर आनन्दित हो रहे हैं। उनकी इस आध्यात्मिक प्रोन्नति (प्रमोशन) को देखकर किसे गौरवान्वित नहीं हो रही होगी! वर्षों पूर्व प्रथम दर्शन प्रतिमा को अंगीकार कर जिन्होंने संसार, शरीर और भोगों के प्रति उदासीन होकर आत्महित के मार्ग पर अपने कदम बढ़ाए थे, आज वह पूर्णतः गृहत्यागी होकर संघ की शरण में आ गए हैं। यद्यपि घर तो पहले ही छूट चुका था, पर अब नाते-रिश्तों की डोर का अन्तिम सिरा भी टूट चुका है। स्वामी जी की नई पर्याय के साथ ही समस्त गृहकार्यों (खेती, व्यापार, विवाहादि) के सन्दर्भ में किसी परिजन या पुरजन को अब न तो वह कोई सलाह ही देंगे और न ऐसे कार्यों की अनुमोदना ही करेंगे। संघ में रहते हुए अब वह अपनी पूरी क्षमता और शक्ति पूज्य गणिनी माताजी के सपनों को साकार करने में लगा सकेंगे।

पूज्य क्षुल्लक जी का स्थान अब भाई जी को मिला है। जो दायित्व क्षुल्लक जी निभाते थे, वह अब भाई जी (नहीं, नहीं, स्वामी जी) निभायेंगे। केवल थोड़ा सा अन्तर होगा और वह यह कि भाई जी के हाथों में अभी पीछी नहीं होगी, पर पीछी न होने से वह उनसे पीछे भी नहीं रहेंगे। ट्रेण्ड तो वह है ही, वह दूना काम करेंगे और डबल ड्यूटी देंगे। किसी शायर ने ठीक ही कहा है–

बोल बदलता नहीं है कभी तबले का।
केवल वादक की उँगलियाँ बदलती हैं।।

उत्कृष्ट श्रावक के पद पर प्रतिष्ठत ब्र. रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी को हमारी विनम्र वंदना। हमें यह पक्का विश्वास है कि उनमें बबूल के जंगल को बागे गुलाब कर देने की कुब्बत है। इत्यलम्।

'जम्बूद्वीप ज्ञानपीठ' पर ब्र. भाई जी का आरोहण

-पं. शिवचरनलाल जैन, मैनपुरी
(संरक्षक-तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ)

पूज्य 105 क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज (मुनि श्री मोतीसागर जी के रूप में सल्लेखना प्राप्त) के पश्चात् 'जम्बूद्वीप ज्ञानपीठ' का कार्यभार आदरणीय ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमार भाई जी के सबल कंधों को सौंपा गया है। वह चारित्रचन्द्रिका परमपूज्य गणिनी आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती जी द्वारा उठाया गया स्वागत योग्य कदम है। ब्र. भाई जी के समग्र जीवन में जो प्रतिफल सामने आया है, उसके सामने 'कर्मयोगी' की उपाधि भी लघुता को प्राप्त होती है। पूज्य माताजी के सपनों को साकार करने, जम्बूद्वीप के संरक्षण, विकास और प्रभावना, माताजी के ज्ञानगौरव को प्रकाशित करने, जम्बूद्वीप को ज्ञानपीठ के रूप में विकसित करने, कल्याणक तीर्थों के विकास आदि धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करने में ये लौहपुरुष पुरोधा अदम्य साहस और उत्साह की प्रतिमूर्ति के रूप में प्रकट हुए हैं। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला, शोधकार्य, माताजी व संघस्थ साधकों द्वारा रचित बृहज्जिनवाणी भंडार के प्रकाशन, राष्ट्र में जैनधर्म की गरिमा वृद्धिंगत करने, तीर्थंकर परम्परा के मूल उपदेशों को विकृत करने के प्रयत्नों को निरसित करने एवं राष्ट्रीय स्तर पर जैनधर्म की प्रतिष्ठा, प्रभावना का जो कार्य कर्मयोगी महानुभाव द्वारा सम्पादित किया गया है, वह युगों-युगों तक स्मरणीय रहेगा।

उनका मुस्कराता 'वदनं प्रसाद सदनं सम्पत्तौ च विपत्ती च महतामेकरूपता' का प्रतीक है। क्रोध तो मानों उनके स्वभाव में ही नहीं है। महानुभावों को अपने अनुकूल बनाने की कला यदि किसी से सीखने हो, तो वह भाई जी के व्यक्तित्व में मिलती है। धर्म के करने में वे कभी थके नहीं, हारे नहीं, चूके नहीं, रुके नहीं। विपरीत परिस्थितियों में भी कार्य सफल करने की कला के वे माहिर हैं। आचरण के धनी हैं। ज्ञान प्रसार हेतु समर्पित हैं।

वर्तमान परिवेश में जो महत्वकार्य पिच्छीधारी साधक महानुभाव से संभवतः सिद्ध न हो सके, उसकी सफलता के लिए 10वीं प्रतिमा पदस्थ इन साधक का जम्बूद्वीप ज्ञानपीठ के पीठाधीश पद पर विराजमान होना जैन समाज के लिए उन्नति कर देना परम आदरणीय श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के हेतु बधाई। वे निरन्तर स्वपर कल्याण में रत रहकर गौरव पद प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

आदर्श व्यक्तित्व

-डॉ. श्रेयांस कुमार जैन, बड़ौत
(अध्यक्ष-अ.भा. दि. जैन शास्त्री परिषद)

ब्रह्मचारी श्री रवीन्द्र कुमार जैन का जैन संस्कृति के गौरव जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के पीठाधीश बनना धर्म और समाज दोनों ही दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जम्बूद्वीप ऐसी धरोहर है, जो सम्पूर्ण विश्व में जैनधर्म-संस्कृति की यशोगाथा गा रही हैं इतनी विशाल और विश्व विख्यात जम्बूद्वीप प्रतिकृति का संरक्षण और संवर्धन कोई प्रज्ञा और प्रतिभा का धनी कर्मयोगी रवीन्द्र कुमार जैन सदृश व्यक्ति ही करने में सक्षम था। इसीलिए तत्त्व विद्या एवं शताधिक ग्रंथों की रचयित्री जिनधर्मप्रभाविका गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी ने तीर्थ निर्माण और जिनमंदिर निर्माण कराने में पूर्ण सक्षम लोकप्रिय व्यक्तित्व के धनी ब्रह्मचारी श्री रवीन्द्र कुमार जैन को दश प्रतिमा के व्रत धारण कराकर जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के पीठाधीश पद पर अधिष्ठित कराकर समाज को गौरवान्वित किया।

ब्रह्मचारी श्री रवीन्द्र कुमार जैन का सम्पूर्ण जीवन समाज को समर्पित तो था ही, अब पीठाधीश के रूप में धर्म और समाज के संवर्धन में निरन्तर समर्पित रहेगा। पीठाधीश पद पर अधिष्ठित होने के अनन्तर वे समाज और देश में पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी नाम से विद्युत हुए। उनका वात्सल्य और सरल व्यवहार प्रशंसनीय है। विद्वानों के साथ तो इनका व्यवहार सदैव मधुर रहा है। इनकी कार्यक्षमता अद्‌भुत है। एक ही दिन में अनेक नगरों-उपनगरों में धर्म प्रभावना कराने में समर्थ हैं। जिनमंदिरों के निर्माण कराने में विज्ञ हैं, इन्होंने मांगीतुंगी, तीर्थराज प्रयाग, अयोध्या, काकंदी, कुण्डलपुर, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर सहित अनेक स्थानों पर अपनी देख-रेख में जिनमंदिरों का निर्माण कराकर महनीय पुण्य अर्जित किया है। कहा भी है-

दिनैकजात्सत्पुण्यं चैत्यगेहकरस्य यत्।
अनेक भव्यसंयोगाद् वक्तुं कः स्यात्क्षमो बुधः।।

जिनमंदिर बनवाने वाले को एक दिन में जो उत्तम पुण्य होता है, अनेक मांगलिक पदार्थों के संयोग होने से उसे कहने के लिए कौन विद्वान् समर्थ है। जिनमंदिरों और जैन तीर्थों के निर्माण में समर्पित श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी का यश सर्वत्र वायु के समान फैल रहा है। मैं तो व्यक्तिगत रूप से इनसे 1977 से परिचित और संबद्ध हूँ। मैंने इनकी अनेक विशेषताएँ देखी हैं। ये कभी भी किसी भी प्रकार का अभिमान नहीं करते और दूसरे की बात को धैर्यपूर्वक सुनकर सहजता और सरलता से विचार करते हैं।

गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी और आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, आर्यिका श्री अभयमती माताजी और क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज की चर्या/साधना की अनुकूलताओं को बनाने के लिए सतत सहयोग देते रहे हैं और दे रहे हैं। संस्थाओं को चलाने की जो कला होती है, उसमें ये पूर्ण दक्ष हैं। हम पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं और भावना करते हैं कि इनके द्वारा जैनधर्म की महती प्रभावना हो। देव-शास्त्र-गुरु भक्ति के साथ में तीर्थंकरों की जन्मभूमियों के विकास को कराकर जैन संस्कृति के समुन्नायक बनकर विश्व में कीर्तिमान स्थापित करें।

शुभकामना संदेश

-डॉ. शेखरचंद जैन, अहमदाबाद
(पूर्व अध्यक्ष-तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ)

कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जी एक परमहंस आत्मा हैं, एक शिल्पी हैं, व्यवस्था कौशल के धनी हैं, जो केवल स्वप्न देखते ही नहीं अपितु उसे साकार करना जानते हैं। वे सभी कार्यकर्ताओं, विद्वानों के प्रेरणास्रोत रहे हैं और रहेंगे। उन्होंने पुल बनकर सदैव जोड़ने का कार्य किया है, कभी किसी के बीच खाई नहीं बने। विपरीतों के प्रति भी माध्यस्थ भाव रखा, यह प्रेरणा व शिक्षा उन्हें पूज्य माताजी से प्राप्त हुई। उन्होंने तीर्थंकरों की जन्मभूमियों को नया स्वरूप-नया आयाम दिया और वे एक कुशल चितेरे बने।

मुझे विश्वास है कि वे मांगीतुंगी में भगवान ऋषभदेव की 108 फुट की मूर्ति का निर्माण करवाकर ऐसा कीर्तिमान निर्मित करेंगे, जिसे पूरा विश्व युगों-युगों तक स्मरण करेगा। भाई रवीन्द्र जी को शुभकामना एवं स्वामी श्री रवीन्द्रकीर्ति जी को वंदना के साथ मेरा प्रणाम एवं उनके पीठाधीश मनोनयन पर उन्हें बहुत-बहुत बधाई।

शुभकामना संदेश

-डॉ. अनुपम जैन, इंदौर
(निदेशक-गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ)

आकर्षक युवा व्यक्तित्व, असीम ऊर्जा, दूरदृष्टि, धर्म और समाज के प्रति पूर्ण समर्पण की भावना के स्वामी कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी अब बन गये हैं स्वस्ति श्री कर्मयोगी पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी। सन् 1980 में मेरी प्रथम मुलाकात भाई जी से हुई थी और मैं तभी से उनके व्यक्तित्व की सरलता, समर्पण और कर्मठता का कायल हूँ। कितनी भी समस्या हो, कितना भी बड़ा आयोजन हो, वे सदैव मुकुराते रहते हैं और शांत स्वभाव से बड़ी-बड़ी योजनाओं को कार्यरूप में परिणत कर देते हैं।

मुझे यह देखकर बहुत सुखद आश्चर्य होता है कि उनके कई कर्मचारी यह कहते हैं कि 'मैं यह काम कतई नहीं करता हूँ, चूँकि आप कह रहे हैं इसलिए जरूर करूँगा' और यही उनकी कार्यशैली का वैशिष्ट्य है। एक बड़ी टीम में जिसमें श्रेष्ठी हैं, दानवीर हैं, प्रमुख चिंतक हैं, सामाजिक कार्यकर्ता हैं, आवास, भोजन, पांडाल, मंच व्यवस्था, मुद्रण व्यवस्था, कम्प्यूटर, लेखा तथा भवन निर्माण की विविध विद्याओं के विशेषज्ञ हैं। यही बात है कि उन्होंने दिल्ली, प्रयाग, कुण्डलपुर, अयोध्या, काकंदी, माधोराजपुरा, मांगीतुंगी, शिर्डी, दिल्ली आदि हस्तिनापुर के बाहर के सुदूरवर्ती स्थानों पर भी ऐसे विशाल आयोजन करा दिये, जिनको देखकर उन स्थान के निवासियों और कार्यकर्ताओं ने भी दाँतों तले अंगुली दबा ली और कहा कि ''हम तो इतने व्यवस्थित और कुशल निर्माण की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।'' भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर में नंद्यावर्त महल परिसर का मात्र 22 महीने में विकास कर तथा भारत की प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी और माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी के दिल्ली में तथा भारत की राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील को हस्तिनापुर की पुण्य भूमि में आमंत्रित कर आपने सम्पूर्ण जैन समाज को गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान किया। इनको देखकर कोई सहज ही उन्हें 'बेस्ट इवेन्ट मैनेजर' का अवार्ड दे सकता है। लेकिन इससे भी अधिक आज उन्हें अन्य अनेकों उपाधियों सहित 'कर्मयोगी' की उपाधि से विभूषित किया गया, जो सामयिक ही है।

आप एक साथ अनेकों संस्थाओं को अध्यक्ष के रूप में मार्गदर्शन दे रहे हैं। दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी, तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ, अ.भा.दि. जैन युवा परिषद, भगवान ऋषभदेव 108 फुट उत्तुंग विशाल प्रतिमा निर्माण कमेटी-मांगीतुंगी तथा अयोध्या दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, उनमें से प्रमुख हैं।

पूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी ने उनके ज्ञान, कर्मठता और धर्म एवं तीर्थ के प्रति सही मूल्याकंन करते हुए जम्बूद्वीप धर्मपीठ का पीठाधीश मनोनीत कर एक सामयिक और उपयोगी कार्य किया है। स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी को वंदन करते हुए हम यही कामना करते हैं कि उनके नेतृत्व में जम्बूद्वीप की धर्मपीठ अपनी सभी शाखा केन्द्रों के साथ पुष्पित और पल्लवित होते हुए सम्पूर्ण विश्व में दिगम्बरत्व की पताका फहराए। पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के श्रीचरणों में त्रिबार वंदना।

शुभकामना संदेश

-डॉ. सुशील जैन, मैनपुरी

माता रत्नमती की कुक्षि कुछ ऐसी विलक्षण थी कि जिसने भी उससे जन्म लिया, वह विशिष्ट हो गया। परमपूज्य ज्ञानमती माताजी के सहोदर भाई बाल ब्र. रवीन्द्र कुमार जी भी ऐसे ही अहोभाग्य व्यक्तियों में हैं, जिन्होंने जन्म से तो यह सौभाग्य 'देव' का प्राप्त किया ही, अपितु 'पुरुषार्थ' से भी दृढ़ मेहनत करके वह कर्मयोगी बन गये।

सन् 1970 के दशक से मेरा उनका व्यक्तिगत संपर्क है। हस्तिनापुर, टिकैतनगर, दिल्ली, कुण्डलपुर आदि अनेक स्थानों पर उनका व माताजी का सान्निध्य मिला और मेरा व्यक्तित्व तो पूज्य माताजी ने ही निखारा। युवा परिषद के कार्यक्रम में या जम्बूद्वीप के निर्माण की पहली ईंट से लेकर अभी तक भाई रवीन्द्र जी ने जो पुरुषार्थ किया है, उसी का यह सुफल है कि पूज्य माताजी ने जो स्वप्न संजोये, वह शत प्रतिशत सफल होकर फलवान बन गये हैं।

हमारे तीर्थ उचित संरक्षण के अभाव में विवादित हो गये या छिन गये। श्रवणबेलगोला के विद्वत् सम्मेलन में मैंने कहा था अगर हर तीर्थ पर श्रवणबेलगोला जैसा भट्टारक पदासीन होता, तो शायद हमारे तीर्थों की यह दशा न होती। जम्बूद्वीप की सुरक्षा, संवर्धन के परिप्रेक्ष्य में ही इसे भी देखा जाना चाहिए। नवनियुक्ति स्वामी जी के कुशल मार्गदर्शन में माताजी की योजनाएँ और फलीभूत होंगी, ऐसी मैं कामना व प्रार्थना करता हूँ। हम सब तो उनके रत्नत्रय की परिपूर्णता देखते हुए उन्हें मुनि श्री रवीन्द्रसागर जी के रूप में पूजना चाहते हैं और मुझे भी इसका शुभावसर मिले, यही मंगल भावनाएँ हैं। वह और अधिक तीर्थ, धर्म, संघ की सेवा कर अधिकाधिक पुण्य का संचय कर महाव्रती बनें, यही कामना उनके पदारोहण पर करते हुए अपनी शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ।

पीठाधीश पद के गौरव-अलंकार हैं-स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

-जैन राष्ट्रभूषण प्रो. डॉ. भागचंद जैन 'भागेन्दु', दमोह
(डायरेक्टर-संस्कृत, प्राकृत तथा जैन विद्या अनुसंधान केन्द्र, दमोह
वरिष्ठ उपाध्यक्ष-अखिल भारतवर्षीय दि. जैन श्रुत संरक्षिणी महासभा)

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, विश्वविख्यात जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के प्राण तत्त्व पीठाधीश पूज्य क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज के मुनि अवस्था में भव्य समाधिमरण दिनाँक 10 नवम्बर 2011 को होने के उपरांत दिनाँक 20 नवम्बर 2011 को जिन माननीय बाल ब्रह्मचारी कर्मयोगी रवीन्द्र कुमार जी 'भाई जी' को ''पीठाधीश'' पद पर अधिष्ठित कर उन्हें ''स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी'' अभिधान से अलंकृत किया गया है, उनसे हमारी सर्वप्रथम भेंट अक्टूबर 1992 में दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर एवं मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.) द्वारा हस्तिनापुर में दिनाँक 8-12 अक्टूबर 1992 को आयोजित 'अंतर्राज्यीय चारित्र निर्माण संगोष्ठी' के मध्य हुई। तब से परमपूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के ससंघ सान्निध्य में प्रवर्तित-दिल्ली, हस्तिनापुर, अयोध्या, वाराणसी, प्रयाग, कुण्डलपुर, महमूदाबाद आदि विभिन्न स्थानों में सुसम्पन्न भव्य और विशाल समायोजनों में हमने निकटतः उनका वात्सल्य प्राप्त कर उनमें सन्निविष्ट लक्ष्य प्राप्ति के प्रति नैष्ठिक समर्पण, दूर दृष्टि और पक्का इरादा अनुशासनबद्ध 'मिलिट्रीमैन' की भांति देव-शास्त्र-गुरु की आज्ञा पालन के प्रति प्रतिबद्धता, सतत जागरूकता, प्रबंध-पटुता, सदा सर्वजन-सुलभता, **'हितं च सारं च वचो हि वाग्मिता'** को चरितार्थ करती कल्याणी मधुर वाणी, आर्ष प्रणीत सांस्कृतिक दृष्टि, बीसवीं शती के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती शांतिसागर महाराज एवं गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के संदेश को जन-जन तक सम्प्रेषित करने में सम्पृक्त-सन्नद्धता पायी है। पूर्व में उन्हें 'कर्मयोगी' विरुद से विभूषित कर उनके अन्तरंग गुणों और क्षमता का प्रकटीकरण ही हुआ है।

जैसे विश्वविख्यात श्री क्षेत्र श्रवणबेलगोल में परमपूज्य कर्मयोगी स्वस्तिश्री पण्डिताचार्यवर्य चारुकीर्ति महास्वामी जी श्रमण संस्कृति के संरक्षण-सम्वर्द्धन-समुन्नयन और स्व-परकल्याण में सदैव सन्नद्ध हैं, वही कार्य उत्तर भारत में कर्मयोगी स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी 'पीठाधीश' पद पर अधिष्ठित होने के पूर्व से कर रहे हैं, इस पद पर अधिष्ठित होने के साथ उनके क्रिया-कलापों, आदर्शों और साधना में पूर्णतः अधिक ऊँचाईयाँ परिलक्षित हो रही हैं। वस्तुतः उत्तर भारत में उन्हें श्रवणबेलगोला स्वामी जी का लघु भ्राता कहना अधिक उपयुक्त होगा।

पूज्य क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज के समाधिमरण के उपरांत कर्मयोगी बाल ब्रह्मचारी रवीन्द्र कुमार जी को 'पीठाधीश' पद पर अधिष्ठित किया जाना सम्पूर्ण समाज और संस्कृति के लिए गौरव-सम्वर्द्धक है।

वस्तुतः 'पीठाधीश' पद के गौरव-अलंकरण हैं– स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी। उन्हें शतशः प्रणाम निवेदित कर श्री जिनेन्द्र प्रभु के शासन से प्रार्थना करता हूँ कि–

यावद् वाति नभस्वान्, भाति विवस्वान् विभासते हिमगु।
विलसतु 'पीठाधीशः', रवीन्द्रकीर्तिर्नाम विख्यातः।।

अर्थात्– जब तक वायु संचरणशील है, सूर्य और चन्द्रमा प्रद्योतित-सुशोभित हो रहे हैं तब तक (स्वस्तिश्री) पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति (स्वामी जी) विख्यात (विद्यमान) रहें।

पुरुषार्थ का पदाभिषेक

-डॉ. नीलम जैन, गुड़गाँवा (सम्पादिका-दिव्य देशना)

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का अवतरण निर्माण, साधना, संयम के प्रकर्ष, जीवन के अविरल यत्न और गुरुओं के अपरिमित आशीर्वाद का सुपरिणाम है। कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी का स्वस्ति श्री कर्मयोगी पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति जी के रूप में आविर्भाव भव्यों के लिए हर्ष, श्रेय साधकों के लिए जीवन महोत्सव एवं गुरु कृपा को समुद्घाटित करता है।

नव्य पीठाधीश पदारोहण के इन पलों पर जहाँ धरा सम्पन्न है, वही पवित्रता, प्रामाणिकता और उदारता की त्रिवेणी जम्बूद्वीप से निकलकर समस्त श्रमण संस्कृति की दिव्य धरा को धन्य कर रही है।

कर्मयोगी वही होता है जो अपने चित्त को चारों ओर से मोड़कर अंर्तमुखी बनाता है और चित्त की स्थिरता में दृढ़ता लाता है, जिससे कार्य सुगम होता है। कर्मयोगी की आधारभूमि ही पुरुषार्थ है। पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती जी की आशीष किरणों का पुंज ही उनकी शिराओं के रक्त को ऊष्मित, ऊर्जस्वित करता रहा। उन्होंने विद्याध्ययन, ज्ञानार्जन, आगम अध्ययन व मंथन आदि की विलक्षण सीढ़ियों पर आरोहण करके ही पीठाधीश पदारोहण की अर्हता प्राप्त कर सके हैं। गणिनीप्रमुख, युग की सर्वोच्च साधिका, दिव्यमूर्ति परमपूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी का प्रणम्य व्यक्तित्व एवं कृतित्व दिव्याकाश का दिव्य नक्षत्र है, उनकी कल्पद्रुमी छाया के तले ही भाई रवीन्द्र जी ने पवित्र ब्रह्मचर्य व्रत को अंगीकार कर उत्तम श्रावक के व्रतों की सीढ़ियों पर पावन पग बढ़ाये और एक-एक कदम इस प्रकार साधना में साधकर रखा कि सारा विश्व उनके गहरे बने निशानों में अपना पाथेय ढूंढ़ रहा है। पूज्य माताजी के मंगलमयी आशीर्वाद से जितना भी निर्माण कार्य, ग्रंथ प्रकाशन, तीर्थंकर जन्मभूमि विकास और साथ ही धर्म प्रकाशन के अनेकानेक जितने भी कार्य सम्पन्न हुए, भाई रवीन्द्र जी के परम पुरुषार्थ, अटूट लग्न, बुद्धि चातुर्य का ही सुपरिणाम है।

अपने सरल, विनम्र स्वभाव, सुझबूझ एवं विलक्षण प्रतिभा के द्वारा विषम से विषम परिस्थिति में गंभीर से गंभीर विषय को सही ढंग से सुलझाने की अपूर्व क्षमतावान, प्रज्ञा और पुरुषार्थ की समन्वित, विनय और विवेक की अभिव्यक्ति, श्रद्धा और समर्पण की संस्कृति के पुरस्कर्ता स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति जी की धवलकीर्ति सर्वत्र प्रसारित एवं प्रशंसित हो। उनके पदाभिषेक का हम हृदय से अभिनंदन करते हैं।

शुभकामना संदेश

-प्रो. टीकमचंद जैन, दिल्ली
(मंत्री-तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ)

धर्मनिष्ठ, कर्मनिष्ठ, गुरुभक्तपरायण, असीम शक्ति के धनी, अद्भुत कार्यक्षमता से युक्त, जम्बूद्वीप धर्मपीठ के पीठाधीश स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी महाराज ने अपनी पूर्व अवस्था में भी ब्र. रवीन्द्र कुमार जी के रूप में भारत में नहीं अपितु विश्व में धर्मध्वजा फहरायी है। पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज के 10 नवम्बर को समाधिमरण के उपरांत युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के द्वारा आगमोक्त संस्कारपूर्वक आपको पीठाधीश पद पर मनोनीत किया गया एवं माताजी की आज्ञा को शिरोधार्य कर आप इस दायित्व को स्वीकार करके तभी से इसका सम्यक् निर्वहन भी कर रहे हैं। पीठाधीश पदारोहण के उपरांत आपके सान्निध्य में काकंदी, गणिनी ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ, माधोराजपुरा तथा शिर्डी आदि स्थानों पर विभिन्न आयोजन सम्पन्न हुए हैं। आपके पीठाधीश पदारोहण पर प्रीतविहार-दिल्ली, औरंगाबाद, मांगीतुंगी, शिर्डी आदि अनेक स्थानों पर समाज द्वारा गौरव के साथ आपके अभिनंदन समारोह आयोजित किये गये हैं। पूरे भारत से आपके लिए अभिनंदन एवं प्रशंसा के संदेश प्राप्त हुए हैं। आप इसी तरह पूज्य माताजी की प्रेरणा से समस्त धार्मिक कार्यों को सम्पन्न करते रहें और अपने नाम के अनुरूप सदा धर्मकीर्ति को रवीन्द्रकीर्ति के समान विश्वव्यापी बनायें, यही मंगल प्रार्थना एवं आपके दीर्घ व स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएं हैं।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री रवीन्द्रकीर्ति जी स्वामी

-प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश कुमार जैन, जम्बूद्वीप

स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वमी जी दिगम्बर जैन समाज के एक ऐसे रत्न हैं, जिन्होंने अपना सारा जीवन समाज, गुरु एवं धर्म सेवा में समर्पित करके एक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया है। स्वामी जी ने परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के शिष्य बनने का गौरव प्राप्त किया है। आपने सदैव पूज्य माताजी की सम्पूर्ण योजनाओं को साकाररूप देने में जो दिनरात परिश्रम किया, वह अनुकरणीय है। चाहे जम्बूद्वीप निर्माण योजना हो या ज्ञानज्योति प्रवर्तन हो या भगवान महावीर जन्मभूमि के विकास का कार्य आपके द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से जहाँ प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान भूमि प्रयाग में विशाल तीर्थ का निर्माण किया गया।

जहाँ भगवान ऋषभदेव की निर्वाण स्थल कैलाश पर्वत का एवं तपोवन वटवृक्ष के नीचे भगवान ऋषभदेव की ध्यानस्थ प्रतिमा बनवाई एवं केवलज्ञान प्रतीक समवसरण का निर्माण कराकर ''तपस्थली तीर्थ प्रयाग'' नाम से तीर्थ बनाकर समाज को भूली हुई प्राचीन संस्कृति को पुनः तीर्थरूप में प्रदान किया। आपकी अध्यक्षता में विश्व इतिहास भगवान वृषभदेव की 108 फुट उत्तुंग विशाल प्रतिमा का निर्माण महाराष्ट्र की पावन तीर्थभूमि सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी में चल रहा है। आपके द्वारा कुण्डलपुर के अलावा पावापुर, गुणावां, राजगीर, सम्मेदशिखर जी, सनावद आदि अनेक स्थलों पर बड़ी-बड़ी प्रतिमाएँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से विराजमान कराई गई है, जिसमें आपने अथक परिश्रम किया।

आपने भारत की राजधानी दिल्ली में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान का एवं भगवान महावीर 2600वें जन्मकल्याणक के पावन अवसर पर 26 मण्डल मंडवाकर विश्व शांति महावीर विधानों का आयोजन सम्पन्न कराकर स्वर्णिम इतिहास बनाया है। आपके कार्यों की जितनी अनुशंसा की जाये, उतनी कम है। आप स्वस्थ रहकर इसी प्रकार धर्म की ध्वजा को आकाश की ऊँचाईयों तक ले जायें, ऐसी मेरी मंगलकामना एवं आपके चरणों में वंदना है।

कर्मठता से बनेल कर्मयोगी

-प्रतिष्ठाचार्य पं. विजय कुमार जैन, जम्बूद्वीप

जीवन धारा प्रवाह चलता रहता है। समय बीतता जाता है, लेकिन धारा प्रवाह जीवन में कुछ पल ऐसे होते हैं, जो समय के इतिहास में स्वर्णिम छाप छोड़ जाते हैं।

ऐसे ही एक व्यक्तित्व का नाम है – ब्र. रवीन्द्र कुमार जी, जिन्होंने कभी भी किसी भी व्यक्ति को अपने द्वार से निराश नहीं लौटाया, हर व्यक्ति को साथ लेकर चलना एवं हर कार्य को विधिवत् पूर्व निर्धारित योजना अनुसार करना ये विशेषता रही है, भाई जी की कार्यशैली अत्यन्त सरल है, जो कठिन से कठिन से कार्य को सरल बना देती है। जम्बूद्वीप पर आने वाला हर व्यक्ति सबसे पहले भाई जी एवं माताजी को पूछता है। उनसे मिलना चाहता है। क्यों ? व्यवस्था पूरी उसे मिल रही है आवास एवं भोजन की, लेकिन बिना भाई जी से मिले हस्तिनापुर की यात्रा अधूरी रह जाती है। ऐसे लोकप्रिय व्यक्तित्व हैं हमारे – आपके भाई जी। कुछ सम्मान पाकर व्यक्ति सम्मानित हो जाता है, लेकिन किसी विशेष व्यक्ति से सम्मान स्वयं सम्मानित हो जाता है । ऐसे ब्र. रवीन्द्र कुमार जी को सम्मानित करके सम्मान भी गौरवान्वित हो जाता है।

पूज्य माताजी के अपूर्व स्नेह व प्रेम से सिंचित् वह छोटा सा बालक जो कभी त्याग व संयम का मतलब नहीं समझता था, लेकिन माताजी ने जिसकी प्रतिभा को पहचान कर अपनी चुम्बकीय शक्तियों के द्वारा संसाररूपी सागर से खींचकर तराश कर ऐसा व्यक्तित्व प्रदान किया शायद पूरी जैन समाज के अंदर भाई जी जैसा कर्मठ कर्मयोगी कोई हो। जिन्होंने कार्य को ही अपनी दिन चर्या बना डाला हो। बड़े-बड़े इंजीनियर नक्शा बनाकर उसकी लागत का अनुमान लगाते हैं लेकिन भाई जी तो बिना नक्शे के ही लागत निकाल लेते हैं।

आज दिगम्बर जैन समाज के अंदर जो भी प्रोजेक्ट बनता है, जो सबसे पहले परामर्श करके कमेटी माता जी के पास आती है। क्योंकि माताजी के प्रोजेक्ट कभी अधूरे नहीं रहते हैं। उसका कारण भाई जी हैं, जो हर कार्य को पूरी मेहनत और लगन से पूर्ण करते हैं, पूर्णता के साथ उसको आगे चलाने की व्यवस्था भी करते हैं। उसके रूपक को कैसे संवारा जा सके, ये सोचते हैं। कहने का तात्पर्य हर प्रोजेक्ट के साथ भाई जी की दूरदर्शिता जुड़ी रहती है।

मैंने भाई जी की हर कार्य करने की शैली को बहुत निकट से देखा है। बचपन से ही स्नेह एवं प्यार पाया है। माताजी हमेशा से अपने प्रवचन में कहा करती है कि भगवान महावीर कल्पवृक्षरूप सबसे पहले यहाँ पर विराजमान हुए उसके पश्चात् शेष रचनाएँ बनती रहीं लेकिन मैं सोचता हूँ कि यदि इस संस्था का कल्पवृक्ष कोई है, तो भाई जी हैं। क्योंकि भाई जी के पास चाहे कोई भी आये, कभी भी निराश एवं खाली हाथ नहीं जाता है।

समय के साथ-साथ मामा जी कब भाई जी हो गये व भाई जी से कब स्वामी जी हो गये, पता ही नहीं चला, लेकिन इस बदलते हुए स्वरूप के साथ पीठाधीश पद पर आसीन हो गये, वेश के साथ परिवेश और योग्यता भी दिन-दूनी रात चौगुनी वृद्धिंगत हो रही है। अभी वर्तमान में ही पीठाधीश बनने के बाद औरंगाबाद (महा.) में स्वामी जी का अभूतपूर्व स्वागत हुआ, जिसका वर्णन शब्दों में कर पाना असंभव है। 5 घंटे तक औरंगाबाद में स्वामी जी के प्रति लोगों का स्नेह श्रद्धा का प्रतीक है वह स्वागत। इसमें कोई भाषण नहीं सिर्फ स्वागत है। कचनेर में, पैठण में व शिर्डी में शायद सारे रिकार्ड ही टूट गये। स्वागत की श्रृँखला में बहुत से लोग मंच तक ही नहीं पहुंच पाये।

बंधुओं! ऐसे है हमारे स्वामी जी, जिनके लिए शब्द कम पड़ जाते हैं। इन्हीं शब्दों के साथ मैं दो पंक्तियों के साथ स्वामी जी के चरणों में अपनी श्रद्धा व्यक्त करता हूँ-

ज्ञानमती माता के शिष्यों की प्रतिभा है निराली।
जिनने सारे देश में देखो धर्मध्वजा फहरा दी।।

बोलो रवीन्द्रकीर्ति की जय, बोलो स्वामी जी की जय।

बधाई एवं शुभ मंगल कामनाएँ

-पं. बाबूलाल जैन फणीश, पावागिरी ऊन

परमपूज्य श्रद्धेय प्रथम गणिनी 105 आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिकासंघ को सादर वंदामि एवं कर्मयोगी बाल ब्रह्मचारी कर्मठ कर्मयोगी श्री रवीन्द्र कुमार पीठाधीश नियुक्त हुए।

अतः आपको कोटि-कोटि बधाई एवं शुभ मंगल कामनाएँ हैं व ट्रस्ट कमेटी एवं प्रबंध कमेटी तथा सेवकगणों की ओर से बधाई स्वीकृत करें।

सादर वंदन

-विजय जैन,
पारस प्रिन्टर्स, दरियागंज, दिल्ली

भाई जी ने सदैव हमारे लिए एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करके हमें सदा आगे बढ़ाने का प्रयास किया है। बहुत ही युवा अवस्था से हम पूज्य माताजी के संघ व संस्थान के साथ जुड़े हुए हैं और अपने जीवन की उन्नति का हर पल, हर क्षण हमनें पूज्य माताजी के आशीर्वाद से पाया है। इसी के साथ भाई जी जो अब स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी बन गये हैं, उनके निर्देशन में हमने सदैव किसी भी कार्य को सम्पन्न करने की विशिष्ट शैली सीखकर अपने सभी लक्ष्य की प्राप्ति की और सदा उनके कारण हम जम्बूद्वीप तीर्थ एवं संस्थान के अभिन्न अंग बनकर धर्मकार्य का पुण्यार्जन करते रहे हैं।

स्वामी जी के उपकार से ही मुझे भगवान महावीर स्वामी की निर्वाणस्थली पावापुरी (नालंदा) बिहार जैसे महान तीर्थ पर भगवान महावीर का विशाल जिनमंदिर बनवाने का अनंतगुणा पुण्य प्राप्त हुआ है और वर्तमान में हस्तिनापुर जैसी अत्यन्त पौराणिक तीर्थभूमि पर भगवान चन्द्रप्रभु जिनमंदिर निर्माण का सौभाग्य भी हमारे परिवार को प्राप्त हो रहा है।

मैं स्वामी जी का अनंत उपकार मानता हूँ क्योंकि केवल धन का व्यय करके कोई व्यक्ति इतने महान जिनमंदिरों के निर्माण का पुण्य अर्जित नहीं कर सकता अपितु ऐसे कार्य हेतु स्वामी जी जैसे महापुरुष का सहयोग एवं समर्पण जब तक प्राप्त न होवे, तब तक कोई भी धनराशि लक्ष्य की सिद्धि में निमित्त नहीं बन सकती है अतः मैं अपने परिवार सहित सदैव स्वामी जी के आशीर्वाद की अभिलाषा करते हुए सदा ही उनका मार्गदर्शन, निर्देशन व धर्मकार्य में हमारे परिवार को निमित्त प्राप्त होता रहे, यही मंगल भावनाएँ करता हूँ। अंत में स्वामी जी को सादर वंदन के साथ उनके दीर्घ, स्वस्थ एवं यशस्वी जीवन की शुभकामनाओं सहित उनके चरणों में मेरा बारम्बार प्रणाम।

शुभकामना संदेश

-महेन्द्र कुमार जैन पाटनी, जयपुर
(अध्यक्ष-राजस्थान जैन सभा)

परमपूज्य गणिनी ज्ञानमती माताजी द्वारा ब्र. रवीन्द्र जी को जम्बूद्वीप संस्थान के कुशल संचालन के लिए पीठाधीश पद पर आसीन किया। इस गरिमापूर्वक पद पर पीठासीन होने पर समस्त जैन समाज बहुत ही हर्षित है। कृपया राजस्थान जैन सभा की कार्यकारिणी तथा मेरी ओर से स्वामी जी प्रणाम स्वीकार करें।

विनयांजलि

-पं. प्रवीणचंद जैन, जम्बूद्वीप

-कुंडलिया छंद-

(1)

स्वामी रवीन्द्रकीर्ति का हो रहा मंगल गान।
जैन धर्म की बन गये, अजब निराली शान।।
अजब निराली शान, पताका सब दिशि छाई।
बड़े प्रेम से कहते तुमको, सब जन भाई।।
गणिनी ज्ञानमती माता ने दिया आशीष अनोखा।
जगह-जगह सम्मान हो रहा स्वामी रवीन्द्र कीर्ति का।।

(2)

बाल ब्रह्मचारी रहे, कर्मयोगी आप।
गणिनी ज्ञानमति मात के, पूरे कार्य कलाप।।
पूरे कार्य कलाप, जैसे थे बजरंगी।
राम संग थे वे, आप मात के संगी।।
गुरु भक्ति प्रेम आज्ञा, उसी में लीन रहे।
किया धर्म जय घोष, बाल ब्रह्मचारी रहे।।

(3)

जैसी आज्ञा मात की, करें तुरंत वो काज।
खुश रहता है आप से, अपना धर्म समाज।।
अपना धर्म समाज, विकास चहुँमुखी जो कीना।
तीर्थंकर की जन्मभूमियों का विकास कर दीना।।
ग्रंथ तीन सौ रचे मात ने, महिमा है ज्ञान की।
किये प्रकाशित आप, जैसी आज्ञा मात की।।

(4)

देश विदेश में कर रहे, जा कर धर्म प्रचार।
मांगीतुंगी क्षेत्र पर, आदि जिन साकार।।
आदि जिन साकार, एक सौ आठ फुट ऊँची।
मूर्ती बन रही विश्व में, सबसे ऊँची।।
तन मन धन से सभी जैन जन काम कर रहे।
स्वामी जी टी.वी. के माध्यम से प्रचार कर रहे।।

शुभकामना संदेश

-विनोद कुमार बड़जात्या, सूरत
(संरक्षक-दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप सूरत)

धर्मपीठ के नूतन पीठाधीश स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी आप गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के संघस्थ कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र भाई जी क्षेत्र के अध्यक्ष हैं, आपकी देव-शास्त्र-गुरु के प्रति अनन्य आस्था प्रशंसनीय है। मधुर स्वभाव, व्यवहार कुशल और समर्पण से धर्माराधना एवं धर्मसाधना के साथ आप श्रेष्ठ पद पर दिनाँक 20 नवम्बर 2011 को नूतन पीठाधीश पर आसीन हुए।

हम सोशल ग्रुप के सभी सदस्य परिवार एवं सकल दिगम्बर जैन समाज परिवार सूरत वीतराग देव से यही भावना भाते हैं कि धर्म प्रभावना में आगे बढ़ते हुए आपको पूर्ण रत्नत्रय की प्राप्ति होवे।

शुभकामना संदेश

-रमेशचन्द्र मनयां, भोपाल
(प्रांतीय अध्यक्ष-अंतर्राष्ट्रीय प्राणी संरक्षण एवं शाकाहार प्रसार परिषद)

कुशलोपरान्त नवीन तीर्थ जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के पीठाधीश पद पर प्रतिष्ठित होने के शुभ प्रसंग पर मेरी और मेरे परिवार की हार्दिक बधाई, प्रणाम और शुभकामनाएँ स्वीकार करें।

हम सब पूज्य, अमृत वर्षिणी गणिनीप्रमुख आर्यिकारत्न श्री ज्ञानमती माातजी की दूरदर्शिता, त्वरित निर्णय और कुशल प्रशासनिक क्षमता के प्रति नतमस्तक हैं और हृदय से आभारी हैं कि उन्होंने बिना कोई समय गँवाए एक सर्वजन हितैषी तथा लोक प्रशंसनीय निर्णय लेकर आप जैसे उर्वर मस्तिष्क के स्वामी अध्यात्म रसिक समर्पित, सेवा भावी अनुभवी तथा उदार व्यक्तित्व को जम्बूद्वीप का पीठाधीश्वर नियुक्त किया है। उनके श्री चरणों में हमारा त्रियोगपूर्वक अनेकशः वंदामि निवेदन कहे।

प्रज्ञामूर्ति आर्यिका श्री चंदनामती माताजी को वंदामि सभी संघस्थ सभी ब्रह्मचारिणी बहनों को यथायोग्य प्रणाम जय जिनेन्द्र।

प्रस्ताविकी-7

सार समाचार
एवं
स्वामी जी को प्रदत्त अभिनंदन पत्र

जम्बूद्वीप में सानंद सम्पन्न हुआ पीठाधीश पदारोहण समारोह

ब्र. रवीन्द्र कुमार 'भाई जी' से बने स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति 'स्वामी जी'

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में दिनाँक 20 नवम्बर 2011 को मध्यान्ह 1 बजे आयोजित 'पीठाधीश पदारोहण समारोह' में सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा विधि-विधानपूर्वक जम्बूद्वीप धर्मपीठ के पीठाधीश पद पर कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन को आसीन करते हुए उन्हें ''स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी'' नाम प्रदान किया गया। इस अवसर पर पूज्य माताजी ने उन्हें दशवीं प्रतिमा के संस्कार करते हुए वस्त्र, शास्त्र व जाप्यमाला के साथ कमण्डलु भेंट कर जम्बूद्वीप धर्मपीठ का पीठाधीश मनोनीत किया।

कार्यक्रम में गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने कहा कि भारतवर्ष की विभिन्न धार्मिक परम्पराओं में किसी भी तीर्थ अथवा धर्मसंस्था के संचालन हेतु परम्परागत श्रृंखला में भट्टारक, पीठाधीश्वर अथवा धर्माधिकारी आदि पदों के धारी त्यागीव्रतियों का मनोनयन किया जाता रहा है। गुरू परम्परा के साथ चलने वाली इन पीठों के माध्यम से धर्म की प्रभावना तथा संस्कृति का संरक्षण, संवर्धन व विकास होता है और अनेक प्रकार के ऐसे सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यकलाप संपन्न होते हैं जिनके माध्यम से समाज को धर्म एवं नैतिक दायित्वों का सही परिपालन करने की प्रेरणायें प्राप्त होती हैं। उन्होंने बताया कि इसी श्रृंखला में सन् 1987, 2 अगस्त के दिन जम्बूद्वीप तीर्थ पर एक धर्म पीठ की स्थापना की गई थी। सर्वप्रथम इस पीठ का पीठाधीश्वर क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज को बनाया गया था। पुनः उनके बाद द्वितीय पीठाधीश के रूप में इस तीर्थ को संचालित करने हेतु संस्थान के अध्यक्ष कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन को जम्बूद्वीप तीर्थ के पीठाधाश पद का भार सौंपा गया है। वे अध्यक्ष होने के साथ ही पीठाधीश का भी पदभार वहन करेंगे। इन भावनाओं के साथ पूज्य माताजी ने उन्हें अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर आर्यिका श्री अभयमती माताजी ने भी स्वामी जी के प्रति उद्बोधनपूर्वक अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का कुशल मार्गदर्शन प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा किया गया तथा संचालन श्री जीवन प्रकाश जैन ने किया। विशेषरूप से समारोह में एलाचार्य मुनि श्री निःशंकभूषण जी महाराज ने पधारकर विशेष सान्निध्य प्रदान करते हुए रवीन्द्रकीर्ति जी को आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के संरक्षक माननीय श्री अशोक सिंघल जी के प्रतिनिधि के रूप में केन्द्रीय मंत्री-विहीप श्री जीवेश्वर मिश्रा तथा परमहंस योग दरबार हस्तिनापुर से साध्वी जी ने भी पधारकर श्री रवीन्द्रकीर्ति जी का अभिवादन किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ आर्यिका श्री सुव्रतमती माताजी, आर्यिका श्री सुदृढ़मती माताजी तथा संघस्थ ब्रह्मचारिणी बहनों द्वारा महावीराष्टक स्तोत्र के साथ हुआ। पुनः आचार्य श्री शांतिसागर महाराज के चित्र का अनावरण श्री राजकुमार जैन वीरा बिल्डर्स एवं श्री राकेश जैन, यमुनापार-दिल्ली द्वारा तथा आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के चित्र का अनावरण श्री सुनील जैन सर्राफ, श्री मनोज जैन व श्री राकेश जैन-मेरठ द्वारा किया गया। समारोह का दीप प्रज्ज्वलन श्री जे.सी. जैन, हरिद्वार ने किया जिसमें श्रीमती सरिता जैन, चैन्नई व संघपति श्री महावीर प्रसाद जैन, दिल्ली ने सहयोग किया।

समारोह के मध्य विभिन्न भक्ति नृत्य आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम भी संपन्न हुए जिसमें सौ. सुवर्णा पाटनी, नासिक एवं सौ. अर्पिता जैन, लखनऊ ने भगवान महावीर स्वामी पर आधारित सुन्दर नृत्य नाटिका प्रस्तुत किया। इस अवसर पर सौ. क्षमा जैन, लखनऊ तथा वीर बाल सदन स्कूल-सरधना के बच्चों के द्वारा भी सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किये गये।

श्वेत से भगवा वस्त्र धारण कर बने स्वामी रवीन्द्रकीर्ति –

समारोह में पूज्य माताजी द्वारा आदेश होने पर ब्र. रवीन्द्र कुमार जी ने मंगल स्नान कर सफेद वस्त्र को परिवर्तित करते हुए भगवा रंग की धोती व दुपट्टा धारण किया। पुनः उन्होंने मंच पर विराजमान भगवान शांतिनाथ प्रतिमा का जल, दूध, दही, सर्वोषधि, केसर, पुष्प आदि से पंचामृताभिषेक किया। पश्चात् सौभाग्यवती महिलाओं द्वारा बनाये गये श्वेत एवं पीले अक्षत के चौक पर रवीन्द्र कुमार जी को बैठाया गया। पीठाधीश पदारोहण समारोह के मुख्य कार्यक्रम के रूप में इस अवसर पर गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने रवीन्द्र कुमार जी के सिर पर केसर से स्वस्तिक बनाकर उन्हें पीले चावल व लौंग से मंत्रोच्चार के साथ संस्कारित किया। इस अवसर पर पूज्य माताजी ने उन्हें दशवीं प्रतिमा के संस्कार करके समस्त खेती, व्यापार व ग्रह कार्य संबंधी क्रियाओं को करने एवं उनके प्रति सम्मति प्रदान करने का आजीवन त्याग कराया। इस अवसर पर उन्हें समस्त दस प्रकार के बाह्य परिग्रहों का भी त्याग कराकर केवल आवश्यक बर्तन व वस्त्र रखने की छूट प्रदान की गई। इस प्रकार संस्कारों को करके पूज्य माताजी

ने रवीन्द्र कुमार जी को पीठाधीश पद पर आसीन करते हुए उन्हें ''स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी'' के नाम से संबोधन प्रदान किया।

समारोह में अनेक गणमान्य महानुभावों का समागम, भेंट एवं शुभकामनाएँ–

जम्बूद्वीप के पीठाधीश बनने के उपरांत स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी को विभिन्न प्रांतों से पधारे हजारों भक्तों ने वंदना करते हुए उनके प्रति शुभकामनायें प्रेषित की एवं श्रीफल समर्पित करके उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। इनमें संघपति श्री महावीरप्रसाद जैन-दिल्ली, तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री सुरेशचंद जैन-मुरादाबाद, रूड़की इंजी. कालेज के चेयरमेन श्री जे.सी. जैन-हरिद्वार, वीरा फाउण्डेशन ट्रस्ट के चेयरमेन श्री राजकुमार जैन-दिल्ली, भारतवर्षीय दि. जैन महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री निर्मल कुमार सेठी-दिल्ली, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की उपाध्यक्ष एवं भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला महासभा की अध्यक्षा श्रीमती सरिता जैन-चैन्नई, म.प्र.सरकार मंत्री दर्जा प्राप्त श्री कपूरचंद जैन-घुवारा, दि. जैन महासमिति के संगठन मंत्री श्री जवाहरलाल जैन-सिकंदराबाद, अ.भा.दि. महिला संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती सुमन जैन-इंदौर तथा महामंत्री-श्रीमती मनोरमा जैन-दिल्ली, भारतवर्षीय दि. जैन अग्रवाल महासंघ के अध्यक्ष श्री रमेश जैन तिजारिया-जयपुर, श्री सुनील जैन सर्राफ-मेरठ, वरिष्ठ विद्वान पं. धनराज जैन-अमीनगरसराय, डॉ. अनुपम जैन-इंदौर, डॉ. जयेन्द्रकीर्ति जैन-उज्जैन, डॉ. नीलम जैन-गुड़गांवा, संस्थान के महामंत्री श्री कैलाशचंद जैन, करोलबाग-दिल्ली, कोषाध्यक्ष श्री अनिल कुमार जैन-दिल्ली, मंत्री श्री मनोज जैन-मेरठ, संयुक्त मंत्री श्री राकेश जैन-मेरठ, श्री मुकेश शाह-मुम्बई (महा.), श्री सुधीर जैन 'ठेकेदार'-मुजफ्फरनगर, डॉ. विनय जैन-बाराबंकी, श्री चिरंजीलाल कासलीवाल-पटना, श्री नरेश बंसल-गुड़गाँवा, इंजी. श्री गुणसागर जैन-दिल्ली, श्री आनंद प्रकाश जैन-दिल्ली, श्री हंसराज जैन-दिल्ली, श्री राजकुमार जैन-दिल्ली, सरधना के श्री सतीश जैन, श्री प्रमोद जैन, श्री श्रेयांस जैन, श्री मंगलसेन जैन, श्री सुधांशू जैन, महाराष्ट्र भक्त मण्डल औरंगाबाद के श्री प्रमोद कासलीवाल, श्री राजमल कासलीवाल, श्री अभय कासलीवाल, श्री पवन पापड़ीवाल, श्री संजय पापड़ीवाल-पैठण, श्री प्रदीप जैन-सटाणा आदि वरिष्ठ जन तथा पीठाधीश जी के परिवारजनों में श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ-लखनऊ, श्री सुभाषचंद शुभचंद जैन-टिकैतनगर, सौ. श्रीमती जैन व पुत्र श्री शरद जैन-बहराइच, सौ. कामिनी जैन-दरियाबाद, सौ. मालती जैन-दिल्ली, श्री राजन जैन-टिकैतनगर तथा सनावद के श्री कैलाशचंद जैन चौधरी, श्री विशाल जैन, श्री सुधीर जैन आदि महानुभाव प्रमुख रूप से उपस्थित थे। इस अवसर पर वरिष्ठ महानुभावों ने अपने-अपने वक्तव्य के माध्यम से स्वामी जी के प्रति अपनी विनयांजलि, शुभकामनाएं एवं आदर-सम्मान भी प्रस्तुत करके स्वामी जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

संस्कार से पूर्व स्वामी जी की गोद भराई एवं बिनौरी का आयोजन हुआ–

कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन 'भाई जी' को पीठाधीश पद के संस्कार करने से पूर्व पूज्य माताजी के सान्निध्य में सैकड़ों भक्तों द्वारा उनकी गोद भराई की गई। पुनः तिलक, मालाएं, मुकुट एवं हाथ-पैरों में रची मेंहदी से सुसज्जित भाई जी को सुन्दर बग्घी में बैठाकर बाजे-गाजे के साथ विशाल शोभायात्रापूर्वक उनकी बिनौरी निकाली गई। बिनौरी यात्रा में सैकड़ों भक्तों ने हर्षोल्लासपूर्वक नृत्य आदि के साथ भाग लिया और कहीं रत्न, तो कहीं नोटों की बरसा करते हुए त्यागमार्ग की अनुमोदना का महान पुण्यफल अर्जित किया। इस दिन से पूर्व भी भाई जी की गोद भराई का कार्यक्रम 2-3 दिन पूर्व से चला और सभी ने उनका अभिनंदन करके आशीर्वाद प्राप्त किया और शुभकामनाएं समर्पित कीं।

पूज्य माताजी संघ को भेंट की गई नूतन पिच्छी–

समारोह में चातुर्मास समापन के उपरांत पूज्य माताजी ससंघ को भक्तों द्वारा नूतन पिच्छी भी भेंट की गई। जिसमें पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी को कुलाधिपति श्री सुरेशचंद जैन-मुरादाबाद ने पिच्छी भेंट की, पूज्य चारित्रश्रमणी आर्यिका श्री अभयमती माताजी को श्री सुधीर जैन-मुज्जफरनगर ने, पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी को श्री निर्मल सेठी-दिल्ली ने, आर्यिका श्री सुव्रतमती माताजी को श्री नरेश बंसल-गुड़गांवा ने, आर्यिका श्री सुदृढ़मती माताजी को श्री हंसराज जैन-दिल्ली ने तथा क्षुल्लिका श्री शांतिमती माताजी को श्री विशाल जैन, श्री सुधीर जैन, श्री कैलाशचंद जैन-सनावद (म.प्र.) ने पिच्छी भेंट कर पुण्य अर्जित किया।

भगवान महावीर का दीक्षाकल्याणक भी मनाया गया–

इस दिन जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का दीक्षाकल्याणक अवसर आने से स्वामी जी सहित सभी भक्तों ने पूज्य माताजी के सान्निध्य में कमल मंदिर में विराजमान भगवान महावीर की अवगाहना प्रमाण खड्गासन प्रतिमा का भव्य मस्तकाभिषेक किया। इस अवसर पर भगवान का 51 किलो दूध तथा दही, हरिद्रा, केसर जल आदि सामग्री से सैकड़ों भक्तों ने भव्य अभिषेक करके महान पुण्य अर्जित किया। इस दिन भगवान की विशेष पूजा-आराधना भी सम्पन्न की गई।

विशेष–समिति द्वारा पारस चैनल पर पीठाधीश पदारोहण समारोह का सीधा प्रसारण होने से सारे देश में विशेष धर्मप्रभावना हुई।

बधाई, शुभकामना एवं वंदनापूर्वक भारी जोर-शोर के साथ अनेक स्थानों पर हुआ स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का अभिनंदन

20 नवम्बर 2011 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन को जम्बूद्वीप धर्मपीठ का नूतन पीठाधीश पदारोहण होने के उपरांत देश के विभिन्न स्थानों में विभिन्न समाजों द्वारा उनका विशेष अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। अतः प्रस्तुत है विभिन्न स्थानों पर सम्पन्न हुए स्वामी जी के अभिनंदन समारोह की एक संक्षिप्त रिपोर्ट-

1. **अभिनंदनकर्ता** - दिगम्बर जैन समाज गोरखपुर एवं भगवान पुष्पदंतनाथ जन्मभूमि काकंदी दि. जैन समिति
   स्थान - काकंदी (देवरिया, निकट गोरखपुर) उ.प्र.
   दिनाँक - 26 नवम्बर 2011
   विशेष पदाधिकारी - श्री पुष्पदंत जैन-कोषाध्यक्ष, श्री पुष्कर जैन-मंत्री, श्री ज्ञानेन्द्र जैन-उपाध्यक्ष, श्री राजीव जैन 'बंटी', श्री विनय जैन, श्री महावीर जैन, श्री प्रदीप जैन, श्री शलभ जैन, श्री राय रवीन्द्र जैन आदि

2. **अभिनंदनकर्ता** - दिगम्बर जैन समाज, प्रीतविहार, दिल्ली
   स्थान - दिगम्बर जैन मंदिर, एफ ब्लाक, प्रीतविहार, दिल्ली
   दिनाँक - 30 नवम्बर 2011
   सान्निध्य - शाकाहार प्रवर्तक उपाध्याय श्री गुप्तिसागर जी महाराज
   विशेष पदाधिकारी - श्री जे.के. जैन-पूर्व सांसद, श्री अनिल कुमार जैन 'कमल मंदिर', श्री अजय कुमार जैन-उपाध्यक्ष, श्री सुभाषचंद जैन-संरक्षक, श्री सतेन्द्र कुमार जैन, श्री सागरचंद जैन-पूर्व अध्यक्ष, श्री सुभाषचंद जैन सी.ए.-पूर्व अध्यक्ष आदि

3. **अभिनंदनकर्ता** - खण्डेलवाल दिगम्बर जैन पंचायत, राजा बाजार एवं गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल महाराष्ट्र
   स्थान - श्री चन्द्रसागर धर्मशाला, शाहगंज, औरंगाबाद (महा.)
   दिनाँक - 30 नवम्बर 2011
   विशेष पदाधिकारी - श्री ललित पाटनी-अध्यक्ष, श्री प्रमोद कासलीवाल, श्री अभय कासलीवाल, श्री राजमल कासलीवाल, श्री कस्तूरचंद बड़जाते, डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल, श्री संजय पापड़ीवाल, श्री प्रकाश पाटनी (धर्मशाला प्रमुख), श्री महावीर ठोले (सेक्रेट्री) आदि

4. **अभिनंदनकर्ता** - पियूष जैन विद्यालय
   स्थान - राजाबाजार, औरंगाबाद (महा.)
   दिनाँक - 1 दिसम्बर 2011
   विशेष पदाधिकारी - श्री महावीर सेठी, सौ. शोभा कासलीवाल आदि

5. **अभिनंदनकर्ता** - अतिशय क्षेत्र कचनेर दिगम्बर जैन समिति
   स्थान - कचनेर (महा.)
   दिनाँक - 1 दिसम्बर 2011
   विशेष पदाधिकारी - श्री प्रमोद कासलीवाल-अध्यक्ष, श्री भरत ठोले-सेकेट्री, श्री सुरेश कासलीवाल-मैनेजिंग ट्रस्टी आदि

6. **अभिनंदनकर्ता** - दिगम्बर जैन समाज पैठण (औरंगाबाद) महा.
स्थान - डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल का निवास
दिनाँक - 1 दिसम्बर 2011
विशेष पदाधिकारी - श्री विलासचंद पहाड़े (पैठण के मंत्री) व पापड़ीवाल परिवार

7. **अभिनंदनकर्ता** - जैन स्कूल पैठण (औरंगाबाद) महा.
स्थान - पैठण (औरंगाबाद) महा.
दिनाँक - 1 दिसम्बर 2011
विशेष पदाधिकारी - श्री विजय पापड़ीवाल, डॉ. किशोर बड़जाते आदि

8. **अभिनंदनकर्ता** - 1008 मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पैठण
स्थान - पैठण (महा.)
दिनाँक - 1 दिसम्बर 2011
विशेष पदाधिकारी - श्री किशोर भाखरे, श्री बबनलाल गोधा आदि

9. **अभिनंदनकर्ता** - श्री संजय कुमार कासलीवाल
स्थान - कासलीवाल मार्वलस, औरंगाबाद
दिनाँक - 1 दिसम्बर 2011

10. **अभिनंदनकर्ता** - मांगीतुंगी ट्रस्ट, तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ एवं भगवान ऋषभदेव 108 फुट मूर्ति निर्माण कमेटी
स्थान - सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी (महा.)
दिनाँक - 2 दिसम्बर 2011
सान्निध्य - आर्यिका श्री श्रेयांसमती माताजी ससंघ
विशेष पदाधिकारी - डॉ. सूरजमल जैन (प्रमुख प्रबंधक), विद्वत् महासंघ के विद्वानगण व मूर्ति निर्माण कमेटी के समस्त पदाधिकारी

11. **अभिनंदनकर्ता** - श्री ज्ञानतीर्थ दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट शिर्डी (महा.)
स्थान - शिर्डी (महा.)
दिनाँक - 4 दिसम्बर 2011
विशेष पदाधिकारी -श्री राजाभाऊ पाटनी-नासिक, श्री किशोर गंगवाल-शिर्डी, श्री सूरजमल गंगवाल-शिर्डी, श्री राजमल कासलीवाल-औरंगाबाद, श्रीमती अजमेरा-कोपरगांव, श्री कैलाशचंद काला आदि।

12. **अभिनंदनकर्ता** - ऋषभदेव जन सेवा संस्थान एवं गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ माधोराजपुरा (राज.)
स्थान - तीर्थ क्षेत्र माधोराजपुरा (जयपुर) राज.
दिनाँक - 13 दिसम्बर 2011
विशेष पदाधिकारी - श्री भागचंद कासलीवाल, श्री संतोष रांवका, श्री पारसमल कागला, श्री सत्यनारायण कलवाड़ा, श्री पदमचंद कन्दोई, श्री बंशीलाल जैन, श्री भागचंद कागला, श्री नवरतन जैन-परवण वाले, श्री पवन कुमार गनोई, श्री महावीर प्रसाद बोहरा, श्री ओमप्रकाश जैन सर्राफ, श्री भंवरलाल जैन एडवोकेट, श्री कमलेश कुमार वेद, श्री शांतिलाल जैन अग्रवाल-जयपुर आदि

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के सुशिष्य

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

के पीठाधीश पदारोहण के उपरांत प्रथम आगमन पर उनके करकमलों में सादर समर्पित

अभिनंदन पत्र

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सारे देश में जैनधर्म एवं संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में, विशेषतः तीर्थंकर जन्मभूमियों के विकास हेतु अनथक परिश्रम करने वाले उनके शिष्य कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन आज दिगम्बर जैन समाज के एक ऐसे महान व्यक्तित्व प्रसिद्ध हो गये हैं, जिनकी आवश्यकता सम्पूर्ण जैन संस्कृति के उत्थान के लिए अत्यधिक महसूस होती है। आपके निर्देशन में सम्पन्न हुए अनेकानेक तीर्थोद्धार की श्रृँखला में नवमें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकंदी (देवरिया) भी एक है, जहाँ पूज्य 'भाई जी' के निर्देशन एवं मार्गदर्शन में इस तीर्थभूमि का भव्यतापूर्वक विकास किया गया और यहाँ भगवान की सवा 9 फुट उत्तुंग विशाल जिनप्रतिमा विराजमान करके भव्य जिनमंदिर और कीर्तिस्तंभ निर्मित किये गये। आपके इस सार्थक प्रयास से काकंदी तीर्थ, जो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण हालत में था, आज अपने अद्‌भुत विकास के बल पर दिग्दिगंत व्यापी बन चुका है और यहाँ यात्रियों का आवागमन क्रमशः इस जन्मभूमि के दर्शन हेतु बढ़ रहा है।

जैनधर्म की प्रभावना, जैन संस्कृति के संरक्षण तथा सदैव अनन्य गुरु भक्ति के लक्ष्य को लेकर अपने सम्पूर्ण जीवन को जैनधर्म एवं समाज के प्रति न्यौछावर करने वाले ऐसे पूज्य भाई जी को पूज्य माताजी द्वारा 20 नवम्बर 2011 को जम्बूद्वीप धर्मपीठ का नूतन पीठाधीश बनाकर ''स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी'' नाम प्रदान करने पर दिगम्बर जैन समाज गोरखपुर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव कर रहा है। आज इस तीर्थ के विकसित स्वरूप में प्रथम बार मनाई जा रही भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मजयंती के अवसर पर हमें पीठाधीश पदारोहण के उपरांत प्रथम बार स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी का सान्निध्य प्राप्त हो रहा है, यह हमारे लिए अत्यन्त गौरव का विषय है।

हम दिगम्बर जैन समाज गोरखपुर तथा भगवान पुष्पदंतनाथ जन्मभूमि काकंदी दिगम्बर जैन समिति की ओर से स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी का हर्षपूर्वक अभिनंदन करते हुए उनके चरणों में अपनी वंदना समर्पित करते हैं। साथ ही पीठाधीश पद के साथ उनका आगामी जीवनकाल अत्यन्त सुखद अनुभूतियों एवं अनेक नई-नई उपलब्धियों से भरापूरा रहे, यही भगवान पुष्पदंतनाथ जी से मंगल प्रार्थना करते हैं।

-भेंटकर्ता-

समस्त दिगम्बर जैन समाज गोरखपुर तथा भगवान पुष्पदंतनाथ जन्मभूमि काकंदी दिगम्बर जैन समिति के समस्त पदाधिकारीगण

26 नवम्बर 2011, मगशिर शुक्ला एकम्, शनिवार

भगवान पुष्पदंतनाथ जन्मजयंती मस्तकाभिषेक महोत्सव

शाकाहार प्रवर्तक परमपूज्य

उपाध्याय श्री 108 गुप्तिसागर जी महाराज के सान्निध्य में

जम्बूद्वीप धर्मपीठ के पीठाधीश

स्वस्ति श्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

के करकमलों में

ससम्मान समर्पित

अभिवंदना प्रशस्ति

संसारिक जीवन में मनुष्य द्वारा समर्पण और कर्तव्यनिष्ठा जैसे महत्वपूर्ण गुणों का पालन करके धन-धान्य, व्यापार आदि की समृद्धि प्राप्त करना, यह तो समाज के बीच सामान्यतः दृष्टिगत होता है लेकिन धर्म, संस्कृति, समाज एवं गुरु के प्रति निःस्वार्थ भावों के साथ अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित करते हुए धर्मप्रभावना, संस्कृति संरक्षण एवं गुरु आज्ञा को शिरोधार्य करने हेतु पूर्ण निष्ठा के साथ समस्त कर्तव्यों का पालन करने वाले महामना इस संसार में बिरले ही होते हैं।

ऐसा ही एक व्यक्तित्व इस सदी में जैन समाज को प्राप्त हुआ है, और वे हैं-'जम्बूद्वीप धर्मपीठ के पीठाधीश स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी'। आपने मात्र 21 वर्ष की यौवन अवस्था में ही आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर अपना सम्पूर्ण जीवन जैनधर्म की प्रभावना हेतु न्यौछावर किया है। आपके उत्कृष्ट कार्यकौशल एवं तीव्र बुद्धि का लाभ इस सदी में जैन समाज को अभूतपूर्व रूप में प्राप्त हुआ है। अपनी गुरु पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा एवं आदेशानुसार आपके नेतृत्व में अनेक तीर्थंकर जन्मभूमियों एवं कल्याणकभूमियों के ऐतिहासिक विकास कार्य तथा समय-समय पर महत्वपूर्ण सम-सामायिक विषयों पर अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनारों का आयोजन इस समाज के लिए महान उपलब्धि साबित हुए हैं।

वर्तमान में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर, कुण्डलपुर (नालंदा), प्रयाग-इलाहाबाद, अयोध्या, काकंदी (देवरिया-गोरखपुर), भगवान ऋषभदेव 108 फुट उत्तुंग मूर्ति निर्माण कार्य-मांगीतुंगी आदि विभिन्न तीर्थों का अत्यन्त कुशलता के साथ उत्तरदायित्व संभालते हुए युवा परिषद, विद्वत् महासंघ, बिहार प्रान्तीय तीर्थक्षेत्र कमेटी आदि विभिन्न सामाजिक संस्थाओं को भी आपका महत्वपूर्ण नेतृत्व एवं निर्देशन प्राप्त हो रहा है, यह सब आपके अद्वितीय व्यक्तित्व की स्वतः प्रतिभा सम्पन्न पहचान है।

हमें अत्यन्त हर्ष है कि ऐसे योग्य, विनयशील, धर्मनिष्ठ, चारित्रवान एवं मोक्षमार्गी व्यक्तित्व को विगत 20 नवम्बर 2011 के दिन पूज्य माताजी द्वारा दशवीं प्रतिमा के व्रतों से संस्कारित करते हुए जम्बूद्वीप धर्मपीठ के पीठाधीश पद पर अभिषिक्त किया गया। आपके इस पीठाधीश पदारोहण के आल्हाद में हम प्रीतविहार जैन समाज की ओर से आज आपके करकमलों में यह अभिवंदन पत्र भेंट करते हुए अत्यन्त गौरव का अनुभव करते हैं तथा दीर्घकाल तक आप स्वस्थमना रहकर धर्म, संस्कृति एवं तीर्थों की, और भी अत्यधिक महिमाशाली प्रभावना इस धरा पर सम्पन्न करते रहें, यही जिनेन्द्र प्रभु से हमारी विनम्र प्रार्थना है।

-भेंटकर्ता-

सुनील जैन (अध्यक्ष) दीपक जैन (महामंत्री)

एवं समस्त प्रीतविहार जैन समाज

तिथि-मगसिर शुक्ला षष्ठी दिनाँक-30 नवम्बर 2011

स्थान-दिगम्बर जैन मंदिर, एफ ब्लॉक, प्रीतविहार-दिल्ली

समस्त दिगम्बर जैन समाज औरंगाबाद (महा.) एवं

गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल महाराष्ट्र

की ओर से

जम्बूद्वीप धर्मपीठ के पीठाधीश

स्वस्ति श्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

के करकमलों में

सम्मान स्वरूप सादर समर्पित

अभिवंदना प्रशस्ति

अद्भुत ओज, साहस, माधुर्य, संकल्पशक्ति और आशावादी दृष्टिकोण जैसे अनेक गुणों से सुशोभित होने वाले, गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के शिष्य, जैन समाज के अत्यन्त कर्मठ एवं महान व्यक्तित्व, हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.) स्थित जम्बूद्वीप धर्मपीठ के पीठाधीश स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का पीठाधीश पदारोहण के उपरांत आज प्रथम बार औरंगाबाद (महा.) में आगमन हुआ है अतः हम विशेष धन्यतापूर्वक दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर तथा भगवान ऋषभदेव मूर्ति निर्माण कमेटी मांगीतुंगी महाराष्ट्र आदि अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी को सविनय वन्दना करते हुए उनके करकमलों में यह अभिवंदना प्रशस्ति भेंट करते हुए अत्यन्त गौरव एवं आल्हाद का अनुभव करते हैं।

परमश्रद्धेय स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी आपका भारतवर्ष के दिगम्बर जैन तीर्थों का जीर्णोद्धार एवं निर्माण कार्य अलौकिक है। आपकी कार्यशैली और जिनशासन के प्रति अगाध श्रद्धा को हम शब्दों में नहीं बांध सकते। आपके प्रति महाराष्ट्र प्रांत के समस्त गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल श्रद्धावनत हैं। इसी श्रद्धा से आपको

''तीर्थोद्धारक''

उपाधि से सम्मानित करते हुए हम गौरव का अनुभव कर रहे हैं।

समस्त दिगम्बर जैन समाज औरंगाबाद

एवं

गणिनी ज्ञानमती भक्तमण्डल महाराष्ट्र

मगसिर शुक्ला षष्ठी, 30 नवम्बर 2011

श्री चन्द्रसागर दिगम्बर जैन धर्मशाला सभागार, शहागंज-औरंगाबाद

श्री ज्ञानतीर्थ दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, शिर्डी (महा.) द्वारा

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के शिष्य

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

के करकमलों में सादर भेंट

प्रशस्ति-पत्र

जब भी किसी कार्य के लिए हमारे मन में कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन-भाई जी (पूर्व नाम) का स्मरण आता है, तो उसके पीछे हृदय में स्वतः ही उस कार्य की सफलता गूंजने लगती है। पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी हम सबकी आराध्य गुरू हैं, जिनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से बीसवीं-इक्कीसवीं सदी का यह काल समाज द्वारा युगों तक गौरवपूर्ण अहसासों के साथ स्मरण किया जाता रहेगा। पूज्य माताजी के साथ ही उनकी समस्त योजनाओं को साकाररूप प्रदान करने वाले उनके त्रय शिष्यरत्न-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, पीठाधीश क्षुल्लक श्री मोतीसागर जी महाराज एवं कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन का नाम भी समाज द्वारा कभी विस्मृत नहीं किया जा सकेगा, जैसे-नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती आचार्य के साथ उनके शिष्य चामुण्डराय को सदैव याद किया जाता है।

जम्बूद्वीप धर्मपीठ के नूतन पीठाधीश – विशेष रूप से हम इस अवसर पर अत्यन्त आल्हादित हैं जब पूज्य माताजी ने 20 नवबर को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन ''भाई जी'' को जम्बूद्वीप धर्मपीठ के पीठाधीश पद पर आसीन करके उन्हें स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी ''स्वामी जी'' का नाम प्रदान किया। स्वामी जी इस सदी में जैन समाज के लिए महान गौरवपूर्ण व्यक्तित्व साबित हुए हैं। उन्होंने अपनी सम्पूर्ण यौवन शक्ति का सदुपयोग करके गुरू आज्ञा के साथ जैन संस्कृति का अद्भुत संरक्षण एवं विकास किया है। आज वे 'स्वामी जी' समस्त जैन समाज में सम्पूर्ण युवा भाक्ति के लिए आदर्श पुरूष बनकर युवाओं को धर्म की सेवा करने का अनूठा मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

जैन संस्कृति संरक्षण में अद्भुत सहभागिता – किसी भी धर्मक्षेत्र में कार्य योजना का निर्माण करना और उसके उपरांत उस कार्य योजना पर अमल करते हुए शिखरयुक्त सफलता प्राप्त करना यह स्वामी जी के व्यक्तित्व की महान विशेषता है। स्वामी जी के करकमलों से समाज में अभी तक जितने भी कार्य सम्पन्न हुए हैं, उनमें पूज्य माताजी का आशीर्वाद एवं स्वामी जी के कुशल कार्यकलाप से इस समाज ने जम्बूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक, नंद्यावर्त महल-कुण्डलपुर, कैलाशपर्वत-प्रयाग, काकंदी, अयोध्या आदि तीर्थों पर अनेक अद्भुत कृतियाँ प्राप्त की हैं और वर्तमान में विश्व का गौरव बनने वाली मांगीतुंगी सिद्धक्षेत्र पर निर्माणाधीन 108 फुट की भगवान ऋषभदेव प्रतिमा का निर्माणकार्य भी आपकी कुशल अध्यक्षता में चल रहा है। स्वामी जी के कृतित्व से जैनधर्म की विश्वव्यापी प्रभावना के साथ जन-जन में अहिंसा धर्म तथा तीर्थंकर भगवन्तों के जीवन दर्शन व आदर्ष सिद्धान्तों की विशेष व्याख्या भी प्रचारित-प्रसारित हुई है।

शिर्डी में तीर्थ विकास हेतु नेतृत्व – पूज्य माताजी के आशीर्वाद से आज हम अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शिर्डी जैसी धर्मनगरी में स्वामी जी का विशेष सान्निध्य प्राप्त कर नूतन दिगम्बर जैन कमल मंदिर का शिलान्यास कर रहे हैं, यह इस तीर्थक्षेत्र कमेटी के लिए ही नहीं अपितु सम्पूर्ण महाराष्ट्र प्रान्त के लिए महान गौरव का विषय है। हमें पूर्ण विश्वास है कि स्वामी जी के सान्निध्य एवं निर्देशन में सम्पन्न होने वाला यह प्रोजेक्ट अत्यन्त सफलता प्राप्त करेगा और शीघ्र ही यहाँ पर अद्वितीय कमल मंदिर का निर्माण होकर जैनधर्म की कीर्ति देश-विदेश की जैन व जैनेतर समाज में दिग्दिगंत व्यापी बनेगी।

मंगल कामनाएं – पीठाधीश पदारोहण के उपरांत आज शि र्डी-नासिक में प्रथम बार स्वस्तिश्री कर्मयोगी रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के आगमन पर हम समस्त ज्ञानतीर्थ ट्रस्ट के पदाधिकारी व सदस्यगण अत्यन्त आल्हाद एवं गौरव का अनुभव करते हुए आज उनके करकमलों में यह प्रशस्ति पत्र भेंट करके अपने जीवन को धन्य महसूस करते हैं। हमें सदैव स्वामी जी का आशीर्वाद, मार्गदर्शन, निर्देशन व सान्निध्य प्राप्त होता रहे और जैनधर्म की प्रभावना हेतु हम अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्त करें, यही इस अवसर पर जिनेन्द्र प्रभु से मंगल कामना है।

तिथि-मगसिर शुक्ला दशमी **दिनाँक-4 दिसम्बर 2011, रविवार**

श्री ज्ञानतीर्थ दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, शिर्डी (महाराष्ट्र)

श्रद्धेय पीठाधीश स्वामि श्री रविंद्रकिर्तीजी स्वामिजीके श्रीचरणोंमें सादर समर्पित...

— कृतज्ञता पत्र —

कर्मयोगी, बालब्रम्हचारी, अनन्य गुरुभक्त, आगमानिष्ठ, धर्मवत्सल, धर्मसंरक्षणाचार्य स्वामी श्री रविंद्रकिर्तीजी स्वप्नदर्शी कल्पनाओंको प्रत्यक्ष जमींपर उतारनेकी कलामें पारंगत है। ऐसे बहुविध योजनाशील्पकार के चरणोंमें वंदन, नमन।

"कोयल नीरे निर्जिव जीवनको स्वरथान बना देती है
एक लहर समंदर को गतिमान बना देती है...."

पीठाधीश पद पर शोभायमान स्वामीजी के आगमन की आहट मात्र से हम पुलकित हो उठे। यह हमारे लिए सौभाग्यदायी एवम् उर्जा प्रदान करनेवाला है। ओजास्विता, तेजास्विता, मधुरता से ओतप्रोत व्यक्तित्व हमें उर्जास्विता प्रदान करता है। सृजन और संस्कृतिका अनुपम मिसाल है आप! व्यक्तित्व, कृतित्व, समानत्व, समन्वयत्व का अनुठा संगम है आप! दस प्रतिमा धारण कर आपने संयम का टीका ललाटपर लगाया है।

"युगान्तकारी कार्यसे भावविभोर है भारतभूमी,
युग-युग तक गाते रहेंगे तेरी अमिट कहानी....।"

पारणी परिवार हार्दीक आभार व्यक्त करते हुए आपके स्वस्थ एवम् दीर्घायुष की कामना करते है। हम कृतज्ञ हैं....

दि. ३rd Dec. '11

- रजेंद्रकुमार (राजाभाऊ) पारणी
एवम् परिवार....
गजपंथा, नाशिक - 4.

परमपूज्य स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के श्री ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ, माधोराजपुरा (राज.) में प्रथम मंगल पदार्पण के शुभ अवसर पर सादर समर्पित

अभिवंदन पत्र

स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी के प्रथम पदार्पण पर भाव विभूषित अभिनंदन व अभिवंदन करते हुए बड़े हर्ष व गौरव की अनुभूति हो रही है। आपका व्यक्तित्व एवं कर्तव्य प्रशंसनीय व अनुकरणीय है।

हे संयम पथ के पथिक!

स्नातक स्तरीय लौकिक शिक्षार्जन के बावजूद भी आपने संसार के मोह चक्र में न फंस कर, मात्र 22 वर्ष की भरी जवानी में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण कर लिया। तदुपरान्त 15 वर्ष बाद सप्तम प्रतिमा के व्रत अंगीकार कर गृह विरत हो गये। 20 नवम्बर 2011 को दशम प्रतिमा लेकर संयम पथ पर उत्तरोत्तर अग्रसर हो रहे हैं।

हे कुशल संगठक/प्रशंसक!

अपनी आध्यात्मिक जीवनचर्या के साथ-साथ आप दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर, अयोध्या, श्री मांगीतुंगी बड़ी मूर्ति निर्माण कमेटी, तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग, भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर, अखिल भारतीय दिगम्बर जैन युवा परिषद सहित अन्य अनेक समितियों के अध्यक्ष पद का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर रहे हैं। गत वर्ष भी ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ, माधोराजपुरा में आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव समिति के चेयरमैन पद के सफल निर्वहन के फलस्वरूप ही वह महोत्सव बड़े ठाठ बाट से सम्पन्न हो सका था।

हे अनुशासनप्रिय!

आप, सदैव माता ज्ञानमती जी के पावन अनुशासन में रहकर सारे कार्यकलाप संपादित करते हैं। आपसे प्रेरणा पाकर आपके अधीनस्थ समस्त समितियों के पदाधिकारी एवं कर्मचारीगण भी अनुशासित रहते हैं। निश्चयतः तो आप अपने आपको स्वयं आत्मानुशासित रखते हैं।

हे शिष्योतम!

गणिनी ज्ञानमती माताजी की पावन प्रेरणा एवं शिष्यत्व में आप संसार मार्ग त्यागकर, मोक्षमार्ग में उत्तरोत्तर बढ़ रहे हैं, माताजी की अनुभूतियों एवं परिकल्पनाओं को शीघ्र मूर्तरूप देने हेतु माताजी द्वारा प्रदत्त प्रेरणाओं व चित्रणों के परिप्रेक्ष्य में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के अनुसार निर्मित विविध प्रकल्पों तथा योजनाओं को सफल क्रियान्वयन में आपका सक्रिय फलदायी योगदान गुरुभक्ति का एक अद्वितीय उदाहरण है।

हे मान्यवर!

गणिनी ज्ञानमती माताजी के पचपन वर्षीय संयमित जीवन का यह विशाल वटवृक्ष दृश्यमान है। इसकी मूल जड़ यह दीक्षास्थली तीर्थ ही है, इस वटवृक्ष का सुदृढ़ तना (स्कंध) श्री जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर है, माताजी द्वारा प्रेषित रत्नत्रय प्राप्ति के प्रतीक अन्य संस्थान योजनाएँ जैसे-पुरातन तीर्थों का जीर्णोद्धार, नवतीर्थों का सृजन, धर्म रथ प्रवर्तन, विपुल साहित्य प्रकाशन, मुमुक्षुओं में संयम जागृति आदि। इस वृक्ष की शाखाएँ, प्रशाखाएँ पत्र-पुष्प एवं फल हैं जो उत्तरोत्तर प्रस्फुटित एवं परिवर्धित हो रहे हैं।

अतएव आपसे आत्मीय अनुरोध है कि इस वृक्ष की जड़ मूल को भी विकासरूपी जल से निरंतर प्रभावी सिंचन करते रहें, ताकि यह दीक्षा तीर्थ उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता हुआ, जैन पर्यटन के आकाश में ध्रुव तारे के सामान शाश्वत चमकता रहे।

हे पीठाधीश स्वामी जी!

पंचपरमेष्ठी प्रभु से यही भावना भाते हैं कि आपका यश, बल, आयु, आरोग्य व संयम सतत वर्धमान रहे, जिससे धर्म प्रभावना संबंधी कार्यों के साथ-साथ निजात्मविकास की क्रियाओं को सहज संपादित कर सकें। हम आपकी सादर अभिवंदना करते हुए, आपके मंगल आशीर्वाद की कामना करते हैं।

श्रद्धा सहित विनयावनत

सकल दिगम्बर जैन समाज माधोराजपुरा, प्रबंध कार्यकारिणी श्री ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ, माधोराजपुरा
श्री ऋषभदेव जन सेवा संस्थान, माधोराजपुरा

तिथि-पौष शुक्ला तृतीया, दिनाँक-13 दिसम्बर 2011, गणिनी आर्यिका ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ, माधोराजपुरा

काकंदी में धूमधाम से मनी पुष्पदंतनाथ भगवान की जन्मजयंती

जैनधर्म के नवमें तीर्थंकर भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मजयंती 26 नवम्बर 2011 को उन्हीं की साक्षात् जन्मभूमि काकंदी (देवरिया) में भारी धूमधाम से मनाई गई। इस अवसर पर देश के विभिन्न स्थानों पर हजारों श्रद्धालुओं ने पधारकर भाग लिया। कार्यक्रम में भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मजयंती रथयात्रा निकाली गई तथा तीर्थ पर विराजमान सवा नौ फुट उत्तुंग भगवान की पद्मासन प्रतिमा का भव्य पंचामृत अभिषेक सम्पन्न किया गया।

महोत्सव में विशेष सान्निध्य प्रदान करने हेतु जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के पीठाधीश कर्मयोगी स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने पधारकर कार्यक्रम में निर्देशन प्रदान किया। जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा व आशीर्वाद से विकसित भव्य तीर्थ पर सर्वप्रथम प्रातःकाल 10 बजे ऐरावत हाथी पर जन्मजयंती की शोभायात्रा निकाली गई। ऐरावत हाथी पर भगवान पुष्पदंतनाथ की प्रतिमा को विराजमान कर बाजे-गाजे के साथ सैकड़ों भक्तजन जुलूस में शामिल हुए। ऐरावत हाथी पर भगवान को लेकर बैठने का सौभाग्य श्री संजीव जैन, गोरखपुर को प्राप्त हुआ। धनकुबेर बनकर रत्न वितरित करने का सौभाग्य श्री महावीर जैन, गोरखपुर को, सारथी बनने का सौभाग्य श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ-लखनऊ को तथा रथयात्रा के शुभारंभ में मंगल आरती करने का सौभाग्य श्री विनोद कुमार जैन-सिवान को प्राप्त हुआ। जुलूस काकंदी दि. जैन मंदिर से काकंदी गाँव के खुखुंदू मोड़ तक निकाला गया एवं समस्त ग्रामवासियों को भगवान के जन्म की खुशी में लड्डू बांटे गये।

मध्यान्ह 12.30 बजे से भगवान का महामस्तकाभिषेक आयोजित किया गया। महामस्तकाभिषेक में भगवान की सवा नौ फुट उत्तुंग विशाल पद्मासन प्रतिमा का 1008 कलशों से महामस्तकाभिषेक सम्पन्न हुआ। महामस्तकाभिषेक में प्रथम कलश करने का सौभाग्य मंदिर एवं मूर्ति निर्माण के पुण्यार्जक श्रेष्ठी श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स', दिल्ली परिवार ने प्राप्त किया। पुनः पंचामृत अभिषेक के क्रम में इक्षुरस से अभिषेक डॉ. डी.सी. जैन-दिल्ली द्वारा तथा नारियल रस से श्री संदीप जैन-दिल्ली, संतरा रस से श्री राजेश जैन-दिल्ली, मौसंबी रस से श्री सुशील जैन-दिल्ली, घृत से श्री पुष्पदंत जैन-गोरखपुर, दूध से श्री विनोद कुमार जैन-सिवान, दही से श्री सरोज कुमार जैन-तह. फतेहपुर, सर्वोषधि से डॉ. जयेन्द्र कीर्ति जैन-उज्जैन, हरिद्रा से श्री चिरंजीलाल कासलीवाल-पटना, केशर से श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ-लखनऊ एवं पूर्ण कलश चि. सम्यक जैन सुपुत्र नवीन जैन द्वारा किया गया। इस अवसर पर भगवान की पुष्पवृष्टि श्री सुभाषचंद जैन सर्राफ-टिकैतनगर द्वारा की गई। अंत में भगवान की शांतिधारा श्री राजकुमार जैन 'वीरा बिल्डर्स', परिवार-दिल्ली ने करके पुण्य अर्जित किया।

कार्यक्रम में स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी का प्रभावी प्रवचन हुआ, उन्होंने भक्तों को भगवान पुष्पदंतनाथ का परिचय बताकर धर्ममार्ग की महत्ता बताई। इस अवसर पर पूज्य माताजी की शिष्या ब्र. बीना जैन तथा ब्र. मंजू जैन-हस्तिनापुर ने भी कार्यक्रम में सान्निध्य प्रदान किया। समस्त विधि-विधान के कार्य प्रतिष्ठाचार्य पं. विजय कुमार जैन तथा पं. प्रवीणचंद जैन शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराए गये तथा सपन जैन-इलाहाबाद एवं उनके सहयोगियों ने भोजन, अभिषेक, रथयात्रा आदि व्यवस्थाओं को सुचारू करने में विशेष सहयोग प्रदान किया।

रात्रि में भगवान की 101 दीपकों से मंगल आरती सम्पन्न हुई तथा श्रीमती साधना जैन मादावत-इंदौर की पार्टी द्वारा सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम, भजन, संगीत आदि प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम में हरीश कुमार एण्ड संगीत पार्टी-भरतपुर ने भी मनमोहक भजन प्रस्तुत कर भक्तों को भक्ति में सराबोर किया।

विशेषरूप से समिति द्वारा तीर्थंकर जन्मभूमि की महत्ता एवं धर्मप्रभावना हेतु सम्पूर्ण कार्यक्रम का सीधा प्रसारण पारस चैनल के माध्यम से किया गया।

जम्बूद्वीप में भगवान पार्श्वनाथ एवं चन्द्रप्रभु का जन्म व तपकल्याणक मनाया गया

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ के सान्निय में जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पौष कृ. एकादशी, 21 दिसम्बर 2011 को 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ एवं 9वें तीर्थंकर भगवान चन्द्रप्रभु का जन्म व तपकल्याणक महोत्सव विशेष उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर मध्यान्ह में ऐरावत हाथी पर दोनों भगवन्तों की शोभायात्रा निकाली गई, पुनः जम्बूद्वीप के मध्य स्थित 101 फुट ऊंचे सुमेरूपर्वत की पाण्डुकशिला पर भगवन्तों का 108 कलशों से अभिषेक सम्पन्न हुआ। विशेषरूप से इस अवसर पर

तीनमूर्ति मंदिर में भक्तों द्वारा भगवान पार्श्वनाथ एवं भगवान चन्द्रप्रभु का 108 कलशों से महाभिषेक एवं विशेष पूजा सम्पन्न की गई। नवग्रहशांति जिनमंदिर में विराजमान भगवान चन्द्रप्रभु की अष्टधातु में निर्मित प्रतिमा का भी पंचामृत अभिषेक करके भक्तों ने पुण्यलाभ अर्जित किया।

विभिन्न आयोजनपूर्वक गणिनी ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ माधोराजपुरा का प्रथम प्रतिष्ठापना महोत्सव सानंद सम्पन्न

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की आर्यिका दीक्षा भूमि माधोराजपुरा (जयपुर) राज. में निर्मित 'गणिनी ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ' का प्रथम प्रतिष्ठापना महोत्सव विशेष उत्साह के साथ भगवान पार्श्वनाथ महामस्तकाभिषेक एवं आचार्य श्री वीरसागर निलय का शिलान्यास समारोहपूर्वक सानंद सम्पन्न हुआ। उक्त आयोजन 13 दिसम्बर 2011 को स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। ज्ञात होवे कि गत वर्ष नवम्बर माह में माधोराजपुरा तीर्थ भूमि पर सम्मेदशिखर की सुन्दर प्रतिकृति का निर्माण करके 24 जिनालयों में विराजमान जिनप्रतिमाएं एवं 15 फुट उत्तुंग भगवान पार्श्वनाथ की विशाल खड्गासन प्रतिमा का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ था। अतः तीर्थ का यह प्रथम प्रतिष्ठापना महोत्सव विशेष आयोजनपूर्वक सम्पन्न किया गया।

इस अवसर पर सर्वप्रथम प्रातःकाल तीर्थ पर निर्मित होने वाली 'आचार्य श्री वीरसागर निलय' का शिलान्यास विधि-विधानपूर्वक सानंद सम्पन्न हुआ। शिलान्यास की विधि प्रतिष्ठाचार्य पं. विजय कुमार जैन-जम्बूद्वीप एवं पं. प्रवीणचंद जैन-जम्बूद्वीप द्वारा सम्पन्न कराई गई। प्रमुखरूप से निलय की शिलापूजन श्री भंवरलाल जैन एडवोकेट-चकवाड़ा, श्री बिजेन्द्र कुमार जैन, शालीमारबाग-दिल्ली, श्री शांतिलाल जैन अग्रवाल-जयपुर, श्री महावीर प्रसाद हेमराज जैन, पचेवर वाले-जयपुर तथा माधोराजपुरा दिगम्बर जैन समाज के प्रमुख श्री भागचंद जैन कासलीवाल, श्री संतोष रांवका आदि महानुभावों की विशेष उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। ज्ञातव्य है कि यहाँ यात्रियों की सुविधा हेतु 8 फ्लैट की सुन्दर धर्मशाला का निर्माण किया जा रहा है।

पुनः इस अवसर पर प्रातः 11 बजे से भगवान पार्श्वनाथ का भव्य महामस्तकाभिषेक महोत्सव आयोजित किया गया। इस अवसर पर प्रथम कलश करने का सौभाग्य श्री विरदीचंद बाबूलाल सुरेशचंद रमेशचंद जैन गंगवाल परिवार-निमोड़िया ने प्राप्त किया। पुनः नारियल रस से श्री राजेन्द्र कुमार अशोक कुमार गंगवाल-पीपला द्वारा, इक्षु रस से श्री मीठालाल राकेश कुमार मुकेश कुमार जैन, बिसालु वाले-माधोराजपुरा द्वारा, घृत से श्री भागचंद मुकेश कुमार जैन, चौसला वाले-देवली द्वारा, श्री संतरा रस से श्री कमलेश कुमार आनंद कुमार आदर्श कुमार जैन, बिसालु वाले-माधोराजपुरा द्वारा, मौसंबी रस से श्री भागचंद ज्ञानचंद कासलीवाल, चांदमां वाले-माधोराजपुरा द्वारा, दूध से श्री सत्य नारायण ज्ञानचंद राकेश कुमार जैन, कलवाड़ा वाले-माधोराजपुरा द्वारा, दही से श्री कैलाशचंद जैन सर्राफ-लखनऊ द्वारा, सर्वोषधि से श्री घासीलाल पदमचंद जैन-तिलांजू द्वारा, हरिद्रा से स्व. रेखा देवी जैन सुपुत्र श्री नाथूलाल बोहरा-माधोराजपुरा की ओर से, केसर से श्री शांतिलाल महावीर प्रसाद मुकेश कुमार सोगानी-सेवा गांव द्वारा, चतुष्कोण से श्री टीकमचंद दिलीप कुमार जैन-मडावरा द्वारा अभिषेक सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर डॉ. जयेन्द्र कीर्ति जैन-उज्जैन द्वारा भगवान पर पुष्पवृष्टि एवं श्री संतोष कुमार जैन रांवका परिवार-जयपुर द्वारा भगवान की मंगल आरती की गई। अंत में शांतिधारा का सौभाग्य पुनः श्री विरदीचंद बाबूलाल गंगवाल परिवार-निमोडिया ने प्राप्त करके महान पुण्य अर्जित किया।

सायंकाल में प्रसिद्ध गीतकार-संगीतकार श्री रूपेश जैन-इंदौर द्वारा सुन्दर भजन संध्या का आयोजन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर गणिनी ज्ञानमती दीक्षा तीर्थ समिति, ऋषभदेव जन सेवा संस्थान एवं समस्त दिगम्बर जैन समाज माधोराजपुरा द्वारा स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का विशेष अभिनंदन समारोह भी आयोजित किया गया, जिसमें उन्हें श्रीफल, वस्त्र, शॉल, माल्यार्पण, साफा व प्रशस्ति पत्र भेंट करके समाज द्वारा सम्मानित किया गया।

विशेषरूप से समिति द्वारा धर्म, तीर्थ एवं गुरु की विनयपूर्वक प्रभावना हेतु सम्पूर्ण कार्यक्रम का सीधा प्रसारण पारस चैनल के माध्यम से किया गया।

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में नवनिर्मित चौबीसी जिनमंदिर की पंचकल्याणक प्रतिष्ठा सानंद सम्पन्न

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में नवनिर्मित ''चौबीसी जिनमंदिर'' में विराजमान होने वाली प्रतिमाओं का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव तथा शिखर पर कलश व ध्वजारोहण समारोह पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ससंघ के सान्निध्य में दिनाँक 4 दिसम्बर से 8 दिसम्बर 2011 तक सानंद सम्पन्न हुआ।

उक्त मंदिर निर्माण एवं प्रतिष्ठा महोत्सव का महान पुण्य श्री हंसराज जैन-श्रीमती उषा जैन, प्रियदर्शनी विहार-दिल्ली परिवार ने प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन को सफल किया। श्री हंसराज जैन एवं श्रीमती उषा जैन ने पंचकल्याणक प्रतिष्ठा में भगवान के माता-पिता (महारानी ऐरा देवी एवं महाराजा विश्वसेन) बनने का भी दुर्लभ अवसर प्राप्त करके अपने जीवन के शिखर पर कलश चढ़ाया। महोत्सव में सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य उनके सुपुत्र श्री संजय जैन एवं श्रीमती प्रीति जैन ने प्राप्त किया तथा धनकुबेर बनने का सौभाग्य श्री बंधुल जैन-श्रीमती रुचि जैन व यज्ञनायक बनने का सौभाग्य श्री राजकुमार जैन-श्रीमती उर्मिला जैन, ऋषभविहार-दिल्ली ने प्राप्त किया। अन्य प्रमुख इन्द्र-इन्द्राणियों के रूप में श्री सुनील जैन-श्रीमती सीमा जैन, श्री त्रिलोक कुमार जैन-श्रीमती पुष्पा जैन, श्री प्रदीप जैन-श्रीमती सुषमा जैन, पाण्डव नगर-दिल्ली, श्री प्रदीप जैन-श्रीमती अमिता जैन, पटपड़गंज-दिल्ली, श्री राजेन्द्र कुमार जैन-श्रीमती बबीता जैन, अनीता जैन, राजरानी जैन, श्री अम्यु कुमार जैन-मेरठ, श्री ओमप्रकाश जैन-हरिद्वार आदि महानुभावों ने प्रतिष्ठा महोत्सव में भाग लेकर पुण्य कमाया।

उक्त पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पं. नरेश कुमार जैन शास्त्री-जम्बूद्वीप एवं पं. विजय कुमार जैन-जम्बूद्वीप के द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री हंसराज जैन परिवार एवं जम्बूद्वीप संस्थान द्वारा आगन्तुक समस्त महानुभावों एवं पंचकल्याणक प्रतिष्ठाचार्य आदि जम्बूद्वीप के समस्त विद्वत्जनों को प्रतीक चिन्ह आदि भेंट करके सम्मानित किया गया। संस्थान द्वारा श्री हंसराज जैन को विशेष सम्मानित करते हुए अष्ट धातु से निर्मित जम्बूद्वीप का सुन्दर प्रतीक चिन्ह (मॉडल) भेंट किया गया।

विशेषरूप से महोत्सव में 8 दिसम्बर को मोक्षकल्याणक, प्रतिमा विराजमान एवं कलशारोहण आदि कार्यक्रम का सीधा प्रसारण पारस चैनल के माध्यम से किया गया, जिसे देखकर घर बैठे लाखों श्रद्धालु भक्तों ने पुण्य लाभ अर्जित किया।

आर्यिका श्री अभयमती माताजी की 70वीं जन्मजयंती सानंद सम्पन्न

पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की शिष्या चारित्रश्रमणी आर्यिका श्री अभयमती माताजी का 70वाँ जन्मजयंती समारोह जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में मगशिर शु. सप्तमी, दिनाँक 1 दिसम्बर 2011 को सानंद सम्पन्न हुआ। पूज्य माताजी ससंघ के सान्निध्य में सम्पन्न इस जन्मजयंती समारोह की अध्यक्षता श्री नरेन्द्र कुमार जैन, बैंगलोर द्वारा की गई। इस अवसर पर पूज्य अभयमती माताजी के प्रति विभिन्न भक्तों ने विनयांजलि समर्पित करते हुए उनके आदर्श चारित्र, दीक्षित जीवन की दीर्घ साधना तथा उनकी कृतियों पर विशेष प्रकाश डालकर अपने विचार व्यक्त किये।

प्रमुख रूप से इस अवसर पर स्थानीय विद्वान् प्रतिष्ठाचार्य पं. नरेश कुमार जैन शास्त्री, पं. प्रवीणचंद जैन शास्त्री, पं. प्रदीप कुमार जैन शास्त्री, पं. वीरेन्द्र कुमार जैन शास्त्री तथा श्री अम्यु कुमार जैन-मेरठ, ब्र. राजेश जैन-जम्बूद्वीप, श्री विनोद जैन-सरधना आदि महानुभाव ने पूज्य माताजी के प्रति अपनी विनयांजलि समर्पित की। कार्यक्रम में प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी, आर्यिका श्री सुव्रतमती माताजी, आर्यिका श्री सुदृढ़मती माताजी एवं क्षुल्लिका श्री शांतिमती माताजी ने भी पूज्य श्री अभयमती माताजी के जीवन वृत्त पर प्रकाश डालते हुए अपनी विनयांजलि समर्पित कर उनके प्रति वंदामि निवेदित किया।

विशेषरूप से इस अवसर पर भक्तों द्वारा पूज्य माताजी का पादप्रक्षाल भी किया गया तथा गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने उन्हें नूतन पिच्छिका एवं साड़ी भेंट करके आशीर्वाद प्रदान किया। विशेषरूप से इस अवसर पर जैन वीर बाल सदन, गंज-सरधना स्कूल के बालक-बालिकाओं द्वारा ''दहेज का चमत्कार'' नाटक आदि सुन्दर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये, जिसमें नृत्य, संवाद आदि की प्रस्तुति अत्यन्त सराहनीय रही। सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन में स्कूल के प्राचार्य श्री विनोद जैन एवं श्रीमती जयमाला जैन-सरधना ने महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

मांगीतुंगी में तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ की बैठक सम्पन्न

तीर्थंकर ऋषभदेव जैन विद्वत् महासंघ की कार्यकारिणी की बैठक 3 दिसम्बर 2011 को सिद्धक्षेत्र मांगीतुंगी (महा.) में सानंद सम्पन्न हुई। इस अवसर पर सर्वप्रथम पधारे विद्वानों में विद्वत् महासंघ के अध्यक्ष-कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन को जम्बूद्वीप धर्मपीठ के पीठाधीश पद पर मनोनयन के उपरांत स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी के रूप में बधाईयाँ प्रेषित की और समस्त विद्वत् समुदाय ने स्वामी जी को महासंघ का गौरव निरूपित करते हुए उनका भावभीना अभिनंदन किया।

स्वामी जी द्वारा पूर्व निर्धारित कार्यक्रम हेतु शिर्डी प्रस्थान करने के कारण बैठक की अध्यक्षता पं. खेमचंद जैन-जबलपुर (कार्याध्यक्ष) द्वारा की गई। इस अवसर पर बैठक का शुभारंभ महासंघ के सहमंत्री-पं. चन्द्रप्रकाश जैन 'चन्दर'-ग्वालियर के मंगलाचरण से हुआ। बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में मांगीतुंगी मूर्ति निर्माण कमेटी के महामंत्री डॉ. पन्नालाल पापड़ीवाल-पैठण एवं प्रमुख अतिथि के रूप में मूर्ति निर्माण कमेटी के मंत्री इंजीनियर श्री सी.आर.पाटिल-पुणे ने भाग लिया। सर्वप्रथम डॉ. पापड़ीवाल ने मांगीतुंगी में बन रही भगवान ऋषभदेव की 108 फुट उत्तुंग प्रतिमा निर्माण के इतिहास, योजना एवं अद्यतन प्रगति की जानकारी देकर विद्वानों से इसके प्रचार-प्रसार में सहयोग का अनुरोध किया, जिस पर सभी विद्वानों ने पूर्ण आश्वासन प्रदान किया। बैठक में श्री राजेन्द्र जैन वास्तु शास्त्री-मुम्बई द्वारा सुझाव दिया गया कि मूर्ति की आय 108 फुट 1 इंच रखी जाये अर्थात् 1297 इंच रखी जाये, जिससे ध्वज आय आयेगी, जो मंदिर हेतु सर्वोत्कृष्ट होता है। इस अवसर पर महासंघ मंत्री प्रो. टीकमचंद जैन-दिल्ली एवं श्री सुरेश जैन 'मारोरा'-शिवपुरी तथा सदस्यों में श्री निर्मल जैन-सतना, ब्र. सविता जैन आदि ने भी अपने-अपने वक्तव्य में प्रशंसा एवं सुझाव प्रस्तुत किये।

अंत में पं. खेमचंद जैन-जबलपुर द्वारा अध्यक्षीय उद्बोधन हुआ। बैठक में मूर्ति निर्माण कमेटी की ओर से सभी विद्वानों का शॉल, श्रीफल एवं पत्र पुष्प द्वारा अभिनंदन किया गया। पुनः पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी के जयघोष के साथ सभा विसर्जित हुई।

उक्त बैठक में उपाध्यक्ष-पं. पदमचंद जैन शास्त्री-साहिबाबाद तथा डॉ. मालती जैन-मैनपुरी, कोषाध्यक्ष-पं. शिखरचंद जैन साहित्याचार्य-सागर व सदस्यगण पं. शीतलचंद जैन-ललितपुर, श्री प्रेमचंद जैन रांवका-जयपुर, श्री विजय कुमार जैन-मुम्बई तथा आमंत्रित श्री कैलाशचंद जैन-जबलपुर, ब्र. समता दीदी-शिवपुरी, श्रीमती रविकांता जैन-मैनपुरी, प्रतिष्ठाचार्य पं. विजय कुमार जैन-जम्बूद्वीप उपस्थित थे।

-डॉ. अनुपम जैन, इंदौर (महामंत्री-विद्वत् महासंघ)

जम्बूद्वीप संस्थान का ''गौरव दिवस''-21 दिसम्बर

3 वर्ष पूर्व 21 दिसम्बर 2008 के शुभ दिवस पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के पावन सान्निध्य में जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिसका उद्घाटन देश की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील ने जम्बूद्वीप पधारकर किया था। अतः जम्बूद्वीप संस्थान के इतिहास का यह स्वर्ण पृष्ठ संस्थान के लिए 'गौरव दिवस' बन चुका है। यह प्रथम अवसर था जब स्वतंत्र भारत के इतिहास में मेरठ मण्डल में किसी राष्ट्रपति का आगमन हुआ था। हम यही मानते हैं कि यह स्वर्णिम अवसर जम्बूद्वीप तीर्थ एवं पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की महान गरिमा का ही प्रताप था, जिसके प्रभाव से महामहिम राष्ट्रपति जी ने जम्बूद्वीप स्थल पर पधारकर तीर्थ का दर्शन किया, पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया और अहिंसा से विश्वशांति का संदेश देने के लिए सम्मेलन का दीप प्रज्ज्वलित किया था। अतः 21 दिसम्बर का दिवस संस्थान में सदैव 'गौरव दिवस' के रूप में स्मरण किया जाता रहेगा। सम्मेलन के तृतीय वर्षगांठ पर भक्तों द्वारा भगवान शांतिनाथ के समक्ष विशेष अर्घ्य समर्पण करके सम्पूर्ण जिला, प्रदेश, देश व विश्व के लिए शांति की मंगल कामनाएं की गईं।

21 दिसम्बर 2011 को पारस चैनल पर किया गया विशेष प्रसारण

उक्त गौरव दिवस पर पारस चैनल के माध्यम से सारे देश में विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन की तृतीय वर्षगाँठ पर 21 दिसम्बर 2008 को सम्पन्न हुए कार्यक्रम का विशेष प्रसारण करके यह गौरव दिवस मनाया गया।

गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से शिर्डी (महा.) में भगवान पार्श्वनाथ कमल मंदिर का भव्य शिलान्यास समारोह सानंद सम्पन्न

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि को प्राप्त शिर्डी (अहमदनगर) महा. में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के प्रेरणा एवं आशीर्वाद से भगवान पार्श्वनाथ कमल मंदिर एवं आचार्य श्री वीरसागर निलय का शिलान्यास समारोह ऐतिहासिक रूप में सानंद सम्पन्न हुआ। उक्त समारोह दिनाँक 4 दिसम्बर 2011 को पूज्य माताजी के शिष्य स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के विशेष सान्निध्य में आयोजित किया गया। समारोह का शुभारंभ झण्डारोहणपूर्वक किया गया, जिसका सौभाग्य श्री विजय कुमार रवीन्द्र कुमार गंगवाल-गोहाटी को प्राप्त हुआ। पुनः इस अवसर पर श्री अनिल बाकलीवाल (अध्यक्ष-खण्डेलवाल दिगम्बर जैन महासभा) द्वारा चित्र अनावरण तथा भगवान पार्श्वनाथ के चित्र के समक्ष श्री रतन कुमार कस्तूरचंद पाटोदी-नागपुर द्वारा कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलन किया गया। पश्चात् प्रतिष्ठाचार्य पं. विजय कुमार जैन के निर्देशन में भक्तों द्वारा पाण्डाल में पाण्डुक शिला पर विराजमान भगवान पार्श्वनाथ प्रतिमा का पंचामृत अभिषेक सम्पन्न हुआ एवं भगवान पार्श्वनाथ की पूजा भी की गई।

इस अवसर पर स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने बताया कि पूज्य माताजी की प्रेरणानुसार शिर्डी में भगवान पार्श्वनाथ की 15 फुट उत्तुंग पद्मासन प्रतिमा से समन्वित सुन्दर कमल मंदिर का निर्माण किया जायेगा। उन्होंने कहा कि शिर्डी में देश और विदेश के श्रद्धालु और पर्यटकगण का आगमन भारी संख्या में होता है अतः जैनधर्म की विश्वव्यापी प्रभावना हेतु पूज्य माताजी का यह चिंतन अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है। उन्होंने बताया कि तीर्थ पर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा संघपति लाला महावीर प्रसाद जैन-दिल्ली के सौजन्य से मूलचंद रामचंद नाठा-जयपुर फर्म द्वारा बनकर आ चुकी है, जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा का योग शीघ्र ही आवेगा।

विधि-विधानपूर्वक उक्त कमल मंदिर का शिलान्यास श्री मल्लि कुमार राजेन्द्र कुमार (राजाभाऊ) पाटनी परिवार, गजपंथा-नासिक द्वारा किया गया। विशेषरूप से इस अवसर पर तीर्थ पर निर्मित किये जाने वाले आचार्य श्री वीरसागर निलय का भी शिलान्यास किया गया, जिसका सौभाग्य श्री सुभाषचंद केसरचंद जैन साहू-जालना को प्राप्त हुआ। इस प्रकार आगामी निकट भविष्य में सुन्दर कमल मंदिर एवं यात्रियों की सुविधायुक्त आवासीय व्यवस्था तीर्थ पर निर्मित करने हेतु सभी पदाधिकारियों द्वारा दृढ़ संकल्प किया गया। तीर्थ पर कार्यालय का निर्माण श्री विमलचंद सेठी-चेन्नई के सहयोग से किया जायेगा। इस अवसर पर विशेषरूप से पधारे डॉ. कल्याणमल गंगवाल-पुणे द्वारा तीर्थ पर ''शाकाहारी आहार विज्ञान प्रदर्शनी'' के निर्माण हेतु योजना प्रस्तावित की गई, जिस पर स्वामी जी ने सम्मति प्रदान करते हुए तीर्थ पर शाकाहार प्रदर्शनी बनवाने की घोषणा की। इस अवसर पर तीर्थ को संचालित करने हेतु गठित की गई 'ज्ञान तीर्थ दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट' के समस्त पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

विशेषरूप से उक्त कमल मंदिर शिलान्यास का सीधा प्रसारण पारस चैनल के माध्यम से सारे देश में प्रसारित किया गया, जिसकी प्रशंसा हजारों श्रद्धालुओं द्वारा टेलीफोन, मोबाइल, ईमेल आदि के माध्यम से प्राप्त हुई। तीर्थ निर्माण में सैकड़ों श्रद्धालु भक्तों ने अपने धन का सदुपयोग करते हुए तीर्थ की दान योजना में भी अपना सहयोग प्रदान किया गया। समारोह में स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का विशेष सम्मान समारोह भी आयोजित किया गया, जिसमें दर्जनों भक्तों द्वारा स्वामी जी को श्रीफल, शॉल, पगड़ी, माला, प्रतीक चिन्ह आदि से विशेष सम्मानित किया गया। इस अवसर पर ज्ञानतीर्थ दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के पदाधिकारियों द्वारा स्वामी जी को विशाल प्रशस्ति पत्र भेंट कर विशेष अभिनंदन किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन पं. विजय कुमार जैन-जम्बूद्वीप एवं पूज्य माताजी की संघस्थ शिष्या ब्र. स्वाति जैन-हस्तिनापुर द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया।

11 जनवरी 2012 से

जम्बूद्वीप ऑन लाइन सर्टिफिकेट कोर्स फॉर जैन स्टडीज का शुभारंभ

''बाल विकास (भाग-1, 2, 3, 4), छहढाला, द्रव्यसंग्रह तथा
जैन भारती (प्रथमानुयोग, करणानुयोग) कोर्स के अध्ययन एवं परीक्षा हेतु ज्वाइन करें''

प्रवेश हेतु लॉगआन करें–www.jambudweep.org

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर द्वारा प्रतिवर्ष 'जम्बूद्वीप ऑन लाइन सर्टिफिकेट कोर्स फॉन जैन स्टडीज' का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष 11 जनवरी 2012 से इस कोर्स हेतु प्रवेश प्रारंभ कर दिये गये हैं। कोर्स की समस्त जानकारी तथा प्रवेश फार्म आदि हमारी वेबसाइट **www.jambudweep.org** पर उपलब्ध हैं। अतः कृपया हमारी वेबसाइट पर लॉगआन करके अपने अनुसार विभिन्न विषयों में परीक्षा हेतु प्रवेश पत्र भरकर भेजें एवं वेबसाइट पर ही उपलब्ध कोर्स बुक के माध्यम से अध्ययन प्रारंभ करें। उक्त कोर्स की परीक्षा 2 माह के उपरांत ली जायेगी, जिसकी जानकारी आपको वेबसाइट आदि पर प्राप्त होगी।